CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री महामति प्राणनाथ प्रणीत

बड़ा क्यामतनामा

(अर्थ सहित)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री महामति प्राणनाथ प्रणीत

बड़ा क्यामत नामा

(अर्थ सहित)

महाराज दयाल दास जी के संरक्षण में

महाराज अमर ब्रह्मवर्त्ती

एवं

पंडित कृष्ण देव जी की मूल प्रति के आधार पर ।

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ प्रकाशन

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर

१० ए/१२ शक्तिनगर, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम संस्करण—१५०० प्रतियाँ

मूल्य ३.०० रु०

संयोजिका :—विमला मेहता
डी० १९३ डिफेन्स कालोनी
नई दिल्ली

सम्पादक
श्री माताबदल जायसवाल
रीडर, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

मुद्रक :
प्रकाश चन्द्र मिड्ढा
मिड्ढा प्रेस
८ ए दरियाबाद
इलाहाबाद-२११००३

बुद्ध जी शाके २९५
वि० सं० २०३०
विजया दशमी
६ अक्टूबर, १९७३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राक्कथन

महाप्रभु प्राणनाथ प्रणीत 'कुलजम स्वरूप' अथवा 'तारतम वाणी' की अन्तिम रचना 'बड़ा क्यामतनामा' को श्रीमती विमला मेहता ने पाठकों के सामने सटीक (प्राचीन प्रणामी सन्तों के अर्थ को अपनाकर) प्रस्तुत कर 'प्रणामी साहित्य तथा सिद्धांत' के समझने के लिए प्रशंसनीय प्रयास किया है। 'क्यामत शब्द ईसाई तथा इस्लामिक-धार्मिक साहित्य में विशेष महत्व का है। सामान्यतया 'क्यामत' का अर्थ अन्तिम दिन से लिया जाता है। स्थूल अर्थ में यह समझा जाता है कि क्यामत के दिन इस दुनियाँ का अन्त हो जाता है। तथा उसके बाद एक नई दुनियाँ आरम्भ होती है। ईसाई तथा इस्लामिक साहित्य में क्यामत के अनेक स्थूल निशान भी बताए गए हैं। हिन्दुओं के पौराणिक (श्री मद्‌भागवत् तथा श्री भविष्य पुराण) साहित्य में भी यह संकेत मिलता है कि इस श्रृष्टि में जब पापों की चरम सीमा पहुँच जाएगी तो एक विजया भिनन्द निष्कलङ्क बुद्ध का अवतार होगा—इसी को कुछ लोग 'कल्कि-अवतार' भी कहते हैं—इन्हीं के द्वारा युगान्तकारी परिवर्तन भी होगा। यही विश्व की महाक्रान्ति होगी।

महामति प्राणनाथ ने 'क्यामत' का स्थूल अर्थ न लेकर उसका सूक्ष्म—आध्यात्मिक अर्थ में प्रयोग किया है। इस प्रकार ईसाई और इस्लामी साहित्य में वर्णित क्यामत के जो स्थूल निशान वर्णित हैं—उनकी एक नई सूक्ष्म-मौलिक व्याख्या की है और यह संकेत किया है कि हिज्री ११वीं सदी अथवा ईसा की १७वीं सदी में वे सारी परिस्थितियाँ एकत्र हो गई हैं—जिनको देखकर यह कहा जा सकता है कि क्यामत का दिन आ गया है और एक नए युग का प्रभात होने वाला है। इस प्रभात का बिगुल तथा इस महा परिवर्तन एवम् महाक्रान्ति का सन्देश वही महान् दिव्यात्मा दे सकता था—जिसने हिन्दू-बौद्ध-इस्लामी और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईसाई आदि सारी परम्पराओं को आत्म सात् करके, सब का समन्वय करके एक नए युग का, एक नए विचारों की महा क्रान्ति का सन्देश दिया हो--मध्यकाल में सभी धर्मों के समन्वय के सन्देश वाहक—महामति प्राणनाथ ही ऐसे दिव्यात्मा थे। समन्वय का यह सन्देश देकर महामति ने यह संकेत किया कि मध्य युगीन प्रवृत्तियों का अन्त होने वाला है और सब धर्मो—सब जातियों का समन्वय करके एक नया विश्व धर्म, एक नई मानवता तथा एक नया युग आरम्भ होने वाला है। इस प्रकार मध्यकालीन प्रवृत्तियों के अन्त और आधुनिक प्रवृत्तियों का प्रभात ही क्यामत का दिन है। यही महामति की अपनी मौलिकता है।

आज विज्ञान ने देशों की सीमाएँ गिरा दी हैं। देश-काल की दूरी समाप्त प्राय सी हो रही है। विश्व के प्रत्येक अन्चल से धर्म-जाति भाषा में अलगाव उत्पन्न करने वाले सारे बन्धनों को तोड़कर—एक विश्व-धर्म विश्व-संस्कृति और विश्व मानवता का सन्देश दिया जा रहा है। इस नए युग की नई प्रवृत्तियों के प्रभात का सन्देश महामति प्राणनाथ ने १७वीं शताब्दी में दिया था और इसीलिए इस महान वैचारिक और धार्मिक क्रान्ति का—मध्यकाल का आखिरी पैगम्बर और आधुनिक युग का प्रथम मसीहा उन्हीं को कहा जा सकता है। आश्चर्य नहीं होना चाहिए—यदि उनको 'आखिरी इमाम' अथवा 'विजयाभिनन्द-बुद्धि निष्कलङ्क' के समविन्त प्रतीक के रूपों में घोषित किया जाए। पुराने युग की समाप्ति अथवा अन्त और नए युग के प्रभात की विचार धारा को समझने के लिए महामति प्राणनाथ ने 'क्यामतनामा' की रचना की। क्यामत नामा नाम से 'कुलजम' में २ ग्रन्थ मिलते हैं—(१) छोटा क्यामतनामा जिसमें महामति की छाप स्पष्ट है। (२) बड़ा क्यामतनामा कहा जाता है जिसमें महाराज छत्रसाल की छाप है। प्रणामी परम्परा से अपरिचित कोई भी साधारण पाठक इसे महाराज छत्रसाल की रचना मान सकता है किन्तु प्रणामी परम्परा में यह माना जाता हैं कि महा प्रभु प्राणनाथ ने हो अपने प्रमुख शिष्य महाराज छत्रसाल के नाम से ही यह ग्रन्थ लिखा है।' महामति प्राणनाथ ही मध्य-काल के प्रथम और अन्तिम धर्म प्रवर्तक हैं जिन्होंने क्यामतनामा द्वारा हिन्दू-बौद्ध

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईसाई और इस्लाम आदि समस्त धर्म एवम् तत्सम्बिन्धित समस्त साहित्य-सागर को मथकर नएयुग का सन्देश वाहक यह ग्रन्थ रत्न खोज निकाला है। रत्नों की खान पन्ना में प्रणीत 'क्यामतनामा' महाप्रभु का महारत्न है । इस रत्न का पारखी वही जौहरी होगा जिसे समस्त धर्मों के मूलतत्वों की परख है— इस प्रकार क्यामतनामा विश्व धर्म का एक महारत्न है।

माता बदल जायसवाल
रीडर हिन्दी विभाग
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महामति प्राणनाथ जी

संक्षिप्त परिचय

महामति प्राणनाथ जी ने संसार को एक ऐसा दर्शन दिया जो विश्व शान्ति, धर्म-समन्वय तथा मानव एकता स्थापित करके संसार के वद्ध जीवों को मोक्ष दिला सकता है संसार के बहुत कम लोग उनसे परिचित हैं। उनके ज्ञान को समझ कर जीवन में उतारने वाले तो वहुत ही कम हैं। आज के विघटन के वातावरण में हम उनसे प्रेरणा लेकर मानव एकता और विश्व शान्ति स्थापित कर सकते हैं।

श्री प्राणनाथ के जीवन में प्रेरणा फूकने वाले उनके सद्गुरू श्री देव चन्द्र जी के विषय में जान लेना आवश्यक है। श्री देवचन्द्र जी का जन्म वि० स० १६३८ में मारवाड़ प्रदेश के उमरकोट गाँव में हुआ। उनके पिता मतु मेहता एक कुशल व्यापारी थे। बाल्यकाल में ही श्री देवचन्द्र जी का मन प्रभु भक्ति में बहुत लगता था। उनके मन में अपनी आत्मा और परमात्मा के विषय में जान लेने की इच्छा बलवती थी। मरुभूमि में यदाकदा ही कोई साधु आ पाते थे। वे उस विचिक्षण बालक की ज्ञान पिपासा को शान्त न कर पाए। बारह वर्ष की आयु में वे किसी सच्चे गुरू की खोज में निकल पड़े। भोजनगर में स्वामी हरिदास जी के पास वे कुछ वर्ष रहे। उनकी राधा माधव भक्ति का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। श्री कृष्ण के बाल मुकुन्द स्वरूप का इन्हें दर्शन हुआ। वहाँ से वे जामनगर आ गए। चौदह वर्ष तक निष्ठापूर्वक श्रीमद्भागवत की कथा सुनते रहे। इनकी भक्ति पर रीझ कर स्वयं अक्षरातीत परमात्मा ने कृष्ण रूप से इनको दर्शन दिया। मन के कपाट खुल गए। परमात्मा और परमधाम का दीदार पाया। अपने आप को अक्षरातीत प्रभु की अंगना के रूप में देख कर आत्म विभोर हो उठे। स्वामी ने विश्व में प्रकटी अन्य अंगी आत्माओं को जगा कर परमधाम ले आने का गहन कार्य इन्हें

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौंप दिया। श्री गांगजी भाई को इनके प्रथम शिष्य होने का गौरव मिला। उन्होंने इनको तन मन धन से सेवा करके इनके कार्य में सहयोग दिया।

श्री देवचन्द्र जी ने चालीस वर्ष की आयु तक लगभग सभी धर्माचार्यों से सत्संग करके यह पाया कि शरीर को कष्ट देने वाली साधनाएँ शरीर को निर्बल बना कर कठिन आत्म मार्ग के लिए अयोग्य ही बना देती हैं। शरीर को हृष्ट पुष्ट और स्वस्थ रख कर, प्रेम द्वारा गुण अंग इन्द्रियों तथा मन को साध बना कर आत्म पथ में सहायक बनाया जा सकता हैं। पूर्ण समर्पण के भाव से प्रेम लक्षणा भक्ति ही सहज साधना है जो प्रियतम के धाम में पहुँचा देती है। इसी साधना का उन्होंने जीवन भर प्रचार किया।

इनके प्रेममय स्वरूप और साक्षात श्रीकृष्ण लीला से आकर्षित होकर श्री मेहराज ठाकुर (महामति श्री प्राणनाथ जी) बारह वर्ष की आयु में इनकी शरण में आए।

मेहराज ठाकुर का जन्म वि० सं० १६७५, में श्री केशव ठाकुर के घर जामनगर में हुआ। केशव ठाकुर जाम राजा के दीवान पद पर थे। बाल्यकाल में ही प्रतिभाशाली मेहराज सांसारिक विद्या में पारंगत हो गए। बारह वर्ष की आयु में गुरुदेव ने महान आत्मा पहचान अपने स्वामी द्वारा सौंपे ब्रह्म सृष्टि जागरण के कार्य में इन्हें भागीदार बना लिया। पिता की मृत्यु के उपरान्त मेहराज जामनगर के दीवान भी बने। गुरु-देव की आज्ञा से गांगजी भाई के भ्राता खेता भाई से मिलने अरब देश में गए। अरबी भाषा और कुरान से कुछ परिचय हुआ। अपना जीवन सदगुरु के चरणों में समर्पित करके उनके महान कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाया।

श्री देवचन्द्र जी के शरीर त्याग देने के पश्चात मेहराज ठाकुर ने गुरुपुत्र बिहारी जी को गद्दी पर बिठा दिया और स्वयं देश-देश में अवतरित ब्रह्मात्माओं को जगाने चल पड़े। मेरता में मुल्ला की अजान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देते सुना। सभी धर्म एक ही पूर्ण ब्रह्म की उपासना करते हैं। जाने अन-जाने सब को एक मंज़िल है। यह ज्ञान उनके सिद्धान्तों की मूलभूत एकता को उन्होंने खोज निकाला। भाषा, देशकाल, वातावरण के कारण कर्म-कांड की भिन्नता अवश्य है। कर्मकांड तो केवल शरीर को शुद्ध करता है। आत्म जागरण के लिए तो प्रेम चाहिए। भक्त और प्रेमी को जाति पांति ऊंच नीच से क्या। आत्म ज्ञान भी परमात्मा की तरह एक है। इस तरह संसार का आत्म धर्म एक है इस बात की घोषणा की। मानवों में विच्छेद करने वाले तथा कथित गुरुओं और अमानवों की कड़ी भर्तसना की। राज मद में प्रजा का उत्पीड़न करने वाले शासकों के विरुद्ध तलवार उठाने की प्रेरणा दी। कर्म में लीन रहने वालों को समर्पण भाव से प्रभु प्रेरित कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। शूद्र कहे जाने वाले निरा-भिमानी लोगों को ब्राह्मणों से भी पवित्र कह कर गले लगाया। भक्तों और प्रेमियों को प्रियतम उनके शाहरग से भी करीब दिखा दिया। सभी वर्ण और सभी वर्ग के लोगों को प्रेम से रहना सिखाया। उन्हें सुन्दर साथ कह कर परस्पर प्रणाम करना सिखाया। उनके अनुयाइयों में ही गुरु शिष्य परस्पर प्रणाम् करते देखे गए हैं। उनके प्रवीण बारह शिष्यों ने सर्वप्रथम औरंगजेब को धर्म का शुद्ध स्वरूप समझाने का प्रयास किया। फिर जन-जन तक उनका सन्देश पहुँचाने के लिए जीवन समर्पण कर दिया। जनता ने परमात्मा की शक्तियों का इनमें अवतरण देख कर इन्हे प्राणनाथ कहा।

श्री प्राणनाथ की तारत्तम वाणी 'कुलजम सरूप' चौदह ग्रन्थों का संकलन है। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली वाणी को तार-तम वाणी की संज्ञा मिली। सभी धर्म ग्रन्थों, धार्मिक परम्पराओं के मिलन और परमात्मा के स्वरूप के लहराते सौंदर्य सागर को कुलजम स्वरूप के नाम से पुकारा गया। छन्द गीत, काव्य, भाषा की दृष्टि से भी तारतम वाणी एक अनुपम ग्रन्थ है। भारत में उस युग में प्रचलित अनेक भाषाओं में इन्होंने वाणी कही और उन्हें एक ही देवनागरी लिपि में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिखवा दिया। कठिन संस्कृत और अरबी फारसी भाषा में नहीं वरन् साधारण बोलचाल की भाषा हिन्दुस्तानी में परमात्मा का आत्माओं का संदेश सुनाया। धर्म ग्रन्थों की न समझ आने वाली गुत्थियों को सुलझाया। परमात्मा और परमधाम का सांसारिक सरल शब्दों में वर्णन करके मानव को प्रभु की ओर प्रेरित और आकर्षित किया। धर्म के नाम फैली कुरीतियों का कड़े शब्दों में खंडन किया। मानव को गुमराह करने वाले, धर्म के नाम कुरीतियां चलाने वाले, और भाई से भाई को अलग करने वाले अमानवों को कभी क्षमा नहीं किया जाएगा ऐसी घोषणा की। इस प्रकार महामति ने मानव एकता और विश्व शान्ति के लिए जीवन भर प्रयास किया। उनका ज्ञान युग-युग की समस्याओं को सुलझाने वाला है। आवश्यकता है कि उनके वचनों को समझ कर उनके अनुसार जीवन जिया जाए।

विमला मेहता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महामति प्राणनाथ प्रणीत

'तारत्तमवाणी कुलजम स्वरूप' के अन्तिम ग्रन्थ 'क्यामतनामा' का संक्षिप्त परिचय

"आवसी धनो धनी रे सब कोई कहते, आगमी करते पुकार ।
सो सत वाणी सबों की करी, अब आय करो दीदार ।।"

कीर्तन प्रकरण ५३

संसार के लगभग सभी धर्म ग्रन्थों में कलियुग के अन्तिम चरण में एक महान सत्ता के अवतरण की घोषणा है जो संसार में धर्म, कर्म कांड, भाषा, वर्ण, वर्ग, जाति और धन आदि के कारण फैले वैमनस्य को दूर करके, सभी धर्म ग्रन्थों की कड़ियों को मिला कर एक विश्व धर्म का दर्शन संसार को देगी। अर्थात् एक विश्व धर्म की स्थापना करेगी। श्री मद्‌भागवत, भविष्य पुराण, हरिवंश पुराण, में विशेष रूप से उक्त अवतरण का उल्लेख है। उस सत्ता के प्रकटीकरण और स्वरूप के विषय में संकेतों में कहा गया है। उधर कतेब में विशेष रूप से बाइबिल और कुरान में तो कथित अवतार से अनेक आंकाक्षाएं की गई हैं। उसे खुदा का स्वरूप मान कर अन्तिम दिन (कियामत के दिन) का न्याय कर्त्ता घोषित किया गया है। संसार को उसका ज्ञान पाप* मुक्त कर देगा ऐसा कहा गया है। बुद्ध निष्कलंक, इमाम मेहदी, आखिरी जमाने के खाविंद के आगमन का वर्णन संकेतों में करने का अभिप्राय यही प्रतीत होता है कि कोई भी अयोग्य व्यक्ति उस सत्ता का दावा लेकर संसार को भ्रम में न डाल सके। स्वयं इमाम मेहदी आकर उन संकेतों का स्पष्टीकरण करेंगे हदीसों में ऐसा भी कहा गया है। उन्हें पहचान कर उनके वचनों के अनुसार जीवन बिताने वालों को ही धर्म ग्रन्थों में मोमिन, चुने हुए लोग, ब्रह्म सृष्टि, ब्रह्ममुनि, तत्व

*नोट—(दज्जाल के अभिशाप से)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दर्शी, स्थित प्रज्ञ आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। हरिद्वार के कुम्भ मेला के अवसर पर सं० १७३५ में तथा १७४० में पन्ना में लगभग सभी धर्मों के विद्वानों ने अपने धर्म ग्रन्थ की शपथ खा कर घोषणा की, कि श्री प्राणनाथ में हमें बुद्ध निष्कलंक इमाम मेहदी के दर्शन हुए। तारतमवाणी के कीरतन प्रकरण ५२-५७, सनंध प्रकरण २०-२६-३२ और कियामत नामा में विशेष रूप से वेद कतेब के प्रमाण देकर इस घोषणा की सत्यता को सिद्ध किया गया है।

कियामत नामा में मोमिनों के नाम परमात्मा की ओर से संदेश है। संसार को कियामत की सूचना देकर सावधान किया गया है। आडम्बरों और दिखावे के कर्मकांड, पूजा और शरास्र के नियमों का खण्डन किया गया है (कीर्तन प्रकरण १६ और सनंध प्रकरण ४०)। कहीं-कहीं ऐसा भी प्रतीत होता है कि महामति ने ऐसा करते हुए कुछ अधिक कठोर शब्दों का प्रयोग कर डाला है। परन्तु यह खुदाई ज्ञान है। खुदा और शरास्र, के नाम पर प्रचलित रूढ़ियों से धर्म आच्छादित हो गया था। उसका असली स्वरूप देख पाना भी असम्भव था। धर्म की मर्म भरी बातों को त्याग केवल शरास्र और कर्मकांड को चिटके, धर्म को बदनाम करने वाले तथाकथिक धार्मिकों को आडम्बरों से छिटक कर दूर हटाने के लिए ऐसा करना आवश्यक था।

"दोनो जहान में थी उरझन, कर्मकांड सरीयत चलन।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन।
ब्रह्मांड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप।"

क्यामत नामा। प्रकरण १। चौपाई ३२-३३।

"जोलों कछु आपा रखे, तोलों सुख अखंड न चखे।
तस्बी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा॥
दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक।
या हँसकर छोड़ो या रोय, जिन करो अंदेसा कोय॥"

क्यामत नामा। प्रकरण ८। चौपाई १७-१८।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह ग्रन्थ चित्रकूट में अवतरित हुआ था। श्री प्राणनाथजी तब वहाँ के राजा की प्रार्थना पर वहाँ अठारह महीने रहे थे। महाराजा छत्रसाल के समान शौर्य और धर्म दोनों में ओजस्वी उन्हें और कोई राजा दिखाई न दिया। महामति के ज्ञान को सही रूप में जीवन में लाकर उसका निःसंकोच प्रचार करने का उनका उत्साह देख कर महामति ने क्यामतनामा में कियामत (जागनी) का संदेश महाराजा छत्रसाल के नाम से ही दिया।* धर्म स्थापन और आत्म जागरण के लिए इस ग्रन्थ की ५३१ चौपाई में क्षत्रियोचित भाषा में आह्वान है।

"खास उमत सों कहियो जाई, उठो मोमिनो क्यामत आई।
कहती हूँ माफक कुरान, तुमारे आगे करूँ बयान॥
भिस्त दोजक इत जाहिर भई, नफा किसी को न देवे कोई।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए॥"

"कुरान, पुराण, अंजील में कही अन्तिम न्याय की घड़ी आ पहुँची है। भूलने वाला पछताएगा। धर्म ग्रन्थों के मर्म, सांकेतिक और अभिप्रेत अर्थ को समझ कर आत्मा को जागृत करो। शब्दार्थ मात्र से काम नहीं चलता।"

"अर्थ अन्दर का जिन लिया, मायने पहचाने तिन।
खासों की एही बन्दगी, ए जाने मोमिन दिल वतन॥"

महामति प्राणनाथ।

"ईसा ने कहा कि आखिरी जमाने के खाविंद के मुँह पर पर्दा होगा। उनका आशय यह था कि उन्हें कोई पहचान न पावेगा। मुसलमान और ईसाई लोग समझते हैं कि वह मालिक उनमें प्रकट होगा। परन्तु उस युग की दलित हिन्दु जाति में वे प्रकट हुए और उन्हें कोई भी पहचान न सका। या फिर जिन्होंने पहचान भी लिया वे माया के वशीभूत अनजाने बने रहे। सूर्य निकल आने पर भी आंखे मूंदे रहने वाले ही कुरान में उल्लू कहे गए। वे लोग सत्य जान कर भी चमगादड़ों के समान असत्य से चिपके रहते हैं। जाहिरी अर्थ लेने वाले सदा जनता को गुमराह करते हैं इसलिए उन पर लानत लिखी गई।"

---

*नोट—ऐसा प्रणामी विद्वानों का मत है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महामति की वाणी में एक और बड़ी ध्यान देने योग्य बात यह है कि उन्होंने धर्म ग्रन्थों में वर्णित अनेक कथानकों में समानता बताई। उन्होंने कहा कि "वह कहानियाँ बीते युग की घटनाएं मात्र नहीं हैं उनका संकेत भविष्य में आने वाले आखिरी जमाने के खाविंद और उनके साथियों की ओर है।" कुरान और अंजील के कई कथानकों को उन्होंने क्यामतनामा में स्पष्ट किया है। उदाहरण के लिए :—

"मुहम्मद साहिब से किसी ने पूछा कि क्यामत कब होगी तो उन्होंने कहा :—'फर्दाए रोज' अर्थात् कल। कल से अभिप्राय एक दिन और एक रात गुजर जाने से है। उसी सन्दर्भ में बताया गया कि दुनियाँ का हजार साल खुदा का एक दिन और रात सौ साल की कही।" इस प्रकार मुहम्मद साहब के बाद ग्यारहवी सदी में लैलतुल कद्र और ग्यारहवीं के अन्त और बारहवी के आरम्भ में फज्र, जागनी और क्यामत का होना बताया :—

"दसवीं ईसा ग्यारहवीं इमाम, बारहवीं सदी फज्र तमाम।
फजर पीछे जब उगया दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन मन॥
एक सूरें उड़ाए के दिए, दूसरे तेरहीं में कायम किए।
यों क्यामत हुई जाहिर दिन, मुहम्मदें करी उमत रोसन॥"

महामति ने महम्मद और दीन इसलाम शब्द का भी इन शब्दों के मूल विस्तृत अर्थ में खुल कर प्रयोग किया है। महम्मद से अभिप्राय केवल महम्मद जो अरब में आए उनसे ही नहीं है। महम्मद तो उनके हुक्म के स्वरूप हैं। उनमें उनके नूर का तेज है। सत्य अंग का बल है। श्यामा का आवेश है वे उनके माशूक हैं। महम्मद ने ही खुदा की आज्ञा से संसार को बनाया। स्वयं ही उनमें रूहों के नाम के आकार धारण किए। स्वयं ही आत्माओं को खेल का आनन्द देने के लिए भुलाया। उन्होंने ही बसरी–बशर–का स्वरूप धारण करके अरब देश में संसार को खुदा का पैगाम दिया। फिर खुदाई इल्म को लेकर मल्की सूरत (स्वरूप) श्री देवचन्द्र के रूप में विश्व को सत्य ज्ञान दिया। फिर स्वयं हक की शक्ति (आवेश) को धारण करके ब्रह्म सृष्टि को जगाया (रूहानी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कियामत की) । यही मुहम्मद—परमात्मा के हुक्म और ज्ञान का स्वरूप हैं जो युग-युग में मानव को सत्य ज्ञान की दिशा देते हैं :—

"हुकमें वेद कतेब में, और लाखों लिखे निशान ।
जमाना खाली नहीं, बिना महम्मदी कोय ।।"

हाँ एक बात अवश्य है कि हर युग में महम्मद की शक्तियों में अन्तर रहता है । उनमें परमात्मा के अंश कला और पूर्ण आवेश का अवतरण आवश्यकता अनुसार हुआ है ।* परमात्मा की शक्तियों ने अनादि काल से मानव को अपनी मंजिल को प्राप्त कराने के लिए जो राह बताई, जो नियम बनाए वे ही सत्य सनातन नियम सभी धर्मों के हैं । उसे सनातन धर्म कहो दीन इसलाम कहो या फिर निजानन्द धर्म कहा जाय वह संसार के सभी लोगों के लिए एक ही है । एक ही मंजिल को ले जाने वाली राह भी एक ही है । उसमें पड़ाव अवश्य हैं । राह के उन ठिकानों पर ठहर जाने वाले शिखर का आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते । "दीन इसलाम" को मानने वाला धर्म के मर्म को पा लेता है । परमात्मा के चरणों के सिवा उसका कोई ठिकाना नहीं । परमधाम, परम मोक्ष ही उसकी मंजिल है । इस प्रकार हम देखते हैं कि महामति ने शब्दों को उनके संकुचित बना देने वाले दायरे से निकाल कर, संकीर्णता से उबार कर उनका योग्य मूल्यांकन किया है । शब्दों के अभिप्रेत अर्थ समझ कर सभी उलझने सुलझ जाती हैं । दृष्टिकोण विस्तृत हो जाता है । धर्म के नाम पर रक्तपात करने वालों की बुद्धि पर दया आती है ।

महामति की वाणी चौदह ग्रन्थों का संकलन है । वेद के अन्तिम ग्रन्थ श्री मद्भागवत के मर्म, आत्मा की सर्वोच्च अवस्था "रास" से उनका ग्रन्थ आरम्भ होकर कतेब की आखिरी मंजल कियामत पर समाप्त होता है । सभी धर्म ग्रन्थ अपना अलग अस्तित्व रखते हुए तारतम वाणी में इस प्रकार एका-कार हो गए हैं कि संसार को एक विश्व धर्म का दर्शन प्राप्त हो गया है ।

*नोट :—कृष्ण की लीला और विष्णु के अनेक अवतारों की तरह मुहम्मद के अनेक स्वरूप हैं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महामति ने अन्तिम अवतार से अभिप्रेत सभी कार्यों को उस रूप में पूरा कर दिया है जिस रूप में एक योग्य डाक्टर परम्परागत रोग के उपचार के लिए बढ़िया नुस्खा बना कर दे जाए। हम उस दवा को पीने के बदले उसकी पूजा करने लगें अथवा भूल ही जाएं तो रोग मुक्त नहीं हो सकते। महामति के ज्ञान से हमें विश्व शान्ति और आत्म जागृति की प्रेरणा लेकर उनके द्वारा आरम्भ किए कार्य को आगे बढ़ाना है :—सदा ईश्वरीय शक्तियों की राह देखते रह कर हम कायर बन कर मंजिल से दूर रह जाएंगे :—

"ताथें हुकम के सिर दोस दे, बैठ न सकें मोमिन।
अरस दिल खुदी से क्यों डरे, लिए हक इलम रोसन॥"

सिनगार। प्रकरण २७। चौपाई १६।

"वेपक इलम रूह अल्लाह का, जो हयात करे फना को।
मुरदे चौदे तबक के, उठे इन इलम सों॥"

खिलवत। प्रकरण १६। चौपाई १०४।

"एही रस तारत्तम का, चढ़या जहर उतारे।
निरविषी काया करे, जीव जागे करारे॥"

"कलश" वेहद वानी

विमला मेहता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहित ॥

* बड़ा क्यामतनामा *

**खास उमतसों कहियो जाई, उठो मोमनों क्यामत आई ।
केहेतीहों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान ॥ १**

स्वामी श्री प्राणनाथ जी महाराज छत्रसाल से कहते हैं कि हे छत्रसाल ! खास उम्मत जो ब्रह्मसृष्टि है उसे जा कर कहो कि हे मोमिनों ! उठो कियामत आ गई है । कुरान में जैसा वृत्तान्त आया है तुम्हारे आगे मैं वैसा ही वर्णन करती हूँ ।

**जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार ।
वसीयत नामे देवें साख, अग्यारैं सदी होसी बेबाक ॥ २**

जो कोई खास उम्मत ब्रह्म सृष्टियों में सिरदार हो, होशियार होकर खड़े रहो । होशियार होने से अभिप्राय यह है कि कुरान में कियामत के जो संकेत दिए हैं उन्हें उनके बातिन अर्थ में पहचान लो । वसीयत नामे जो दिल्ली में (मक्का से) आए उनमें लिखा है कि ग्यारहवीं सदी मु० में सबकी बेबाकी होगी । बेबाक होने का अभिप्राय यह है कि ग्यारहवीं सदी में जब दस वर्ष बाकी रहे तब इमाम साहिब ने स्वामी श्री प्राणनाथ जी के रूप में आकर सबका हिसाब बेबाक कर दिया । अर्थात् जिनकी जैसी बन्दगी पहचान थी उन्हें उसी प्रकार का फल देकर अखंड कर दिया । इसी समय वि० सं० १७३५ में दुनिया की उमर पूरी हो चुकी और बुद्ध निष्कलंक का आना जो लिखा था उन सब भविष्य वाणियों को सत्य सिद्ध करने का समय आ गया ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरकत दुनियाँ और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान ।
ए दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान ॥ ३

दुनिया की बरकत और कुरान की कला, धर्म रूपी बरकत, तथा फकीरों की शफकत कृपा के विषय में मक्का से यह वर्णन लिखा आया कि इन्हें वहाँ से उठा कर जिबरील अपने मकान मशरिक (पूर्व) में जहाँ इमाम मेंहदी आए हैं वहाँ ले जाएगा। इमाम मेंहदी हिन्द में प्रकट हुए वे सब वस्तुएँ अब पद्मावती पुरी (पन्ना) में इमाम के पास आ गईं ।

और तिन दिन होसी, अंधाधुंध, द्वार तोबाके होसी बंध ।
कह्या होसी और रवेस, तब कोई किसी का नाहीं खेस ॥ ४

यह भी कहा है कि उस दिन सब की आँखों में अंधकार और धुंध छा जाएगा। इसका अभिप्राय यह कि कुरान और ईमान के उठ जाने से कुफ्र का अन्धकार छा जाएगा। मुहम्मद के आने से पहले जैसी दाभहजि मी (पाशविक वृत्ति) थी वैसी ही हो गई। तोबा के दरवाजे बन्द हो गए। महामति प्राणनाथ के हकीकत और मारिफत के भेद खोल देने से कर्मकांड या प्रायश्चित् से लोगों को जो फल मिलता था अब वह मिलना बन्द हो गया। क्योंकि यह कहा गया कि उस समय और ही रविश (चाल चलन) हो जाएगा। कर्मकांड छोड़ कर लोग मारिफत का चलन पकड़ेंगे। तब कोई किसी का सगा नहीं रहेगा। हदीस में लिखा है कि जब जिबरील मक्का से बरकत शफकत इश्क ईमान उठा कर हिन्द में ले जाएँगे सब हैवानी तबीयत वाले हो जाएंगे।

अब कहो जी बाकी क्या रह्या, निसान क्यामत का जाहेर कह्या ।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस ॥ ५

जब सब का ईमान ही उठ गया तो बाकी क्या रहा ? कियामत का यही निशान प्रकट हो गया। कुरान के अट्ठाइसवें सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह चालीस वर्ष तक पातशाही राज्य करेंगे। ईसा रूह अल्लाह का राज्य श्री देवचन्द्र जी के दूसरे जामें (शरीर) श्री प्राणनाथ जी के जीवन काल में मु०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्यारहवीं सदी से दस वर्ष कम १०९० तथा वि० सं० १७३५ से शुरु होता है। हरिद्वार में श्री स्वामी जी को जो सभी धर्म गुरुओं पर विजय मिली उससे पन्ना तक कुरान के बातिनी अर्थ कियामत के सात निशान प्रकट किए। सोलह वर्ष स्वामी जी ने और चौबीस वर्ष महाराज छत्रसाल ने धर्म का राज्य किया। उस समय तक सभी मोमिनों को पैगाम पहुँचा दिया इसीलिए कहा कि अब बाकी क्या रहा।

क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए बिचार देखो दिल आन॥ ६

क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी एक ही जगह ईमान लाएंगे। अपने दिल में विचार कर देखो कि कुरान के उठ जाने से क्या होगा। कुरान और हदीसों के गुप्त भेद हिन्दुस्तान में समझे जाएंगे।

नवसे नब्बे हुए बितीत, तब हजरत ईसा आए इत।
सो लिख्या सिपारे अग्यारहें माहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें॥७

रसूल के बाद जब नौ सौ नब्बे वर्ष व्यतीत हो गए तो हजरत ईसा श्री देवचन्द्र जी इस दुनिया में आए। यह बात ग्यारहवें सिपारे में लिखी है। मैं कुरान के विपरीत एक बात भी नहीं कहूँगी।

रूहअल्ला पेहेनें जामें दोए, ए लिख्या कुरानमें सोई होए।
ए लिख्या छठे सिपारे माहें, धोखेवाला जाए देखो ताहें॥ ८

रूह अल्लाह दो जामें पहनेंगे। उन्होंने श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी के रूप में दो शरीर धारण किए। कुरान में जो कुछ लिखा था वही हुआ। यह बात छठे सिपारे में लिखी है जिसको संशय हो वह जा कर देख ले।

ए जो बरस ईसा की कही, तिनकी तफसीर कर देऊँ सही।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस॥ ९

ईसा रूह अल्लाह के राज्य के जो वर्ष कहे गए हैं, उन वर्षों का भी विवरण

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देती हूँ। ग्यारहवीं सदी (हि०) के अन्तिम दस वर्ष और बारहवीं सदी (हि०) के पहले तीस वर्ष, ईसा रूह अल्लाह ने दूसरे जामें में श्री प्राणनाथ के रूप में राज्य किया।

सत्तर बरस और जो रहे, सो तो पुल—सरात के कहे।
मोमन चलें बिजलीकी न्यात, मुतकी भी घोड़ेकी भाँत ॥१०

बारहवीं सदी के शेष जो सत्तर वर्ष रह गए वही तो पुलसरात—(तलवार की धार के समान मार्ग) के वर्ष कहे गए। इस समय तारत्तम ज्ञान के अनुसार जीवन व्यतीत करके लोग बहिश्त प्राप्त करेंगे। मोमिन उस मार्ग पर बिजली की तरह चल कर पार कर लेंगे और मुत्तकी (परहेजगार और संयमी लोग) घोड़े की चाल चलेंगे।

और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही।
पुल—सरात कही खाँड़े की धार, गिरें कटे नहीं पावे पार ॥११

जो जाहिरी अर्थ लेने वाले आम लोग वचनों पर नहीं चल सकेंगे उन्हीं के लिए दस तरह की दोजख कही गई है। पुलसरात का मार्ग तलवार की धार के समान तीक्ष्ण है। जो उस पर गिर गया वह कट जाएगा और पार नहीं पहुँचेगा।

अमेतसालूनमें कह्या ए, जाए देखो दीदे दिलके।
ए जाहेर कह्या बयान, पर हिरदे अंधे न सके पेहेचान ॥१२

तीसवें सिपारे की पहली सूरत अमेत सालून में यह कहा है परन्तु आत्म दृष्टि से देखने वाले ही समझ सकेंगे। यह वर्णन तो स्पष्ट किया गया परन्तु दिल के अन्धे पहचान नहीं सकते।

दसईं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम।
ए लिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम ॥१३

दसवीं सदीं (हि०) में ईसा के आने का उल्लेख है और ग्यारहवीं सदी (मु०)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में इमाम के आगमन का वर्णन है। बारहवीं सदी में फज्र (सुबह) होगी। जहाँ-जहाँ मोमिन हैं वे प्रकट हो जाएंगे। यह बात तीसवें सिपारे में—जिसे ग्राम सिपारा कहा गया—लिखी गई है। (दे० कुरआन सूरा अल फज्र)

आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम ।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी ॥१४

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि कुरान हदीसों में किए वादे के अनुसार ईसा रूह अल्लाह और इमाम मेंहदी आ गए हैं। मुहम्मद ने भी साथ आने का वादा किया था। वे सब मोमिनों सहित पन्ना में आ कर इकट्ठे हो गए हैं—सब लोग आ कर उनकी वन्दना करो। चर्म दृष्टि से उन्हें देखा नहीं जा सकता। दिल की आँखें खोल कर उन्हें पहचान लो।

अजाजीलें देख्या वजूद, तो आदमको न किया सजूद ।
सेजदे किए तिन बेहद, सो सारेही हुए रद्द ॥१५

स्वामी जी कुरान में कहे आदम और अजाजील के दृष्टांत से समझाते हैं कि अजाजील फरिश्ता ने आदम के शरीर को देखा और परमात्मा की आज्ञा न मान कर आदम को नम्न नहीं किया। अजाजील फरिश्ता ने उससे पहले बेशुमार सिजदे किए थे परन्तु आदम को न पहचानने के कारण उसे नम्न करने से इन्कार कर दिया। जिसके फलस्वरूप वह बहिश्त से निकाल दिया गया। उसके सारे सिज्दे रद्द हो गए।

जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुआर ।
तब अजाजीलें माग्या बचन, के आदम मेरा हुआ दुसमन ॥१६

अजाजील फरिश्ता ने रूह को न देख कर शरीर पर ही नजर रखी तो उसे लानत मिली और वह ख्वार (अपमानित) हुआ। तब अजाजील ने अपने पिछले किए हुए सिज्दों का यह फल मांगा कि "आदम मेरा दुश्मन है—"

इनकी औलादकी मारों राह, सबके दिल पर होऊँ पातसाह ।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारेमें जाहेर कही ॥१७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"इनकी औलाद, इन्सान को राह से भटकाने का मुझे हुक्म दिया जाए। किसी को बहिश्त की ओर चलने न दूं। सब के दिल पर बैठ कर राज्य करूं और उन्हें दोजख में जलाया करूं।" इस तरह आदम और अजाजील फरिश्ता की दुश्मनी हो गई यह बात कुरान के आठवें सिपारे में लिखी है।

फेर तुम वाहीकी लेत अकल, पर क्या करो तुम जो वाहीकी नसल।
तुम दज्जाल बाहेर ढूंढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत ॥१८

तुम आज भी फिर उसी की अक्ल पर चलते हो। किन्तु क्या करो तुम सब भी तो उसी की सन्तान हो। तुम निमाज करते समय देखते हो कि शैतान आएगा तो उसे मारेंगे। आप अन्तर दृष्टि से देखो वह शैतान तो लानत लेकर तुम्हारे दिल पर बैठा है। किन्तु दिल की आंख न खुल पाने से तुम्हें पहचान नहीं होती।

ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिलके कान।
हमेसाँ आवत हैं ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों ॥१९

ऊपरी मायने—शब्दार्थ को लेने से पहचान नहीं होती। तुम दिल के कान खोल कर सुनो। जैसे पहले पैगम्बर यहूदियों (अमुसलिम जातियों) में आए हैं उसी तरह अब भी हिन्दुओं में प्रकट हुए हैं।

सब पेगंमर जहूद खिलके, बिचार देखो दीदे दिलके।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान ॥२०

सभी पैगम्बर यहूदी जाति में आए। इस बात को दिल की आँखों से देखो। जिन हिन्दुओं को तुम काफिर कहते हो उनमें ही ईसा रूह अल्लाह और इमाम अवतरित हुए हैं।

तुम ढूंढ़ो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें।
जिनको तुम कहते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात ॥२१

साहिब को तुम अपनी जाति में ढूंढ़ते हो। उसमें तो (इमाम मेंहदी) नह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आए हैं। जिनको तुम काफिर जाति के लोग कहते हो वही सब की सिफारिश करके उन्हें बहिश्तों में पहुँचाएंगे।

रब्ब ना रखे किसीका गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान ।
परदा लिख्या हजरत के रूए पर, तिनकी क्या तुमको नहीं खबर

परमात्मा किसी का गर्व रहने नहीं देते। वे तो गरीबों पर दया करते हैं। हदीसों में और अंजील में लिखा है कि जब हजरत ईसा रूह अल्लाह आएंगे तो उनके मुँह पर पर्दा होगा। क्या उस बात का तुम्हें पता नहीं है?

परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं माहें, ए पढ़े इसारत समझत नाहें
जो देखत हैं ज़ेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर ॥२३

इमाम मेंहदी हिन्दुओं में आए और आपने पहचाना नहीं यही उनके मुँह पर पर्दा है। जो ऊपर की दृष्टि से शब्दों की मात्राओं के अर्थों में भटक जाते हैं वे इन संकेतों को समझ नहीं पाते।

ऐसी हिंदुओं की कही सिफत, आखर हिंदुओंमें मुलक नबुवत ।
और आप हजरत रसालत पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह ॥२४

हदीसों में इस प्रकार हिन्दुओं की प्रशंसा की गई है कि अन्तिम समय इनमें ही नबियों का अवतरण होगा। नबी ही पैगम्बर पैगाम देने वाले मोमिन हैं जो हिन्दुस्तान में प्रकट हुए हैं। और आप, महामति प्राणनाथ जी सब के पैगम्बर सब को शरण देने वाले हैं वही जहूद फकीर, (मोमिनों) के बादशाह हैं।

पाँचमें सिपारे एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान ।
और हिंदवी किताबोंमें यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही ॥२५

पाँचवे सिपारे में यह वर्णन आया है। यदि विश्वास न हो तो कुरान में देख लो। हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों, वेद, शास्त्र, पुराण, आदि—में भी इस प्रकार लिखा है कि बुद्ध निष्कलंक अवतार लेंगे यह बात निश्चित है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आएके करसी एक रस, मसरक मगरब होसी बस ।
कोऊ केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊँ निबेर ॥२६

वे आ कर एक रस करेंगे अर्थात् वेद, शास्त्र, पुराण, कुरान, हदीसों और अन्य धर्म ग्रन्थों के सार लेकर धर्म का एक ही मार्ग बताएंगे । पूर्व में हिन्दू और पश्चिम में मुसलमान (सभी धर्मों के मानने वाले) उनके वश में आ जाएंगे । हिन्दू-मुसलमान दोनों पूछते हैं कि क्या यह एक ही समय में आएंगे उसका भी निर्णय किए देते हैं ।

ए इसारस खोले निज बुध, बिना हादी न पाइए सुध ।
घोड़ेको लिख्या कलंकी कर, ताकी किनकों नहीं खबर ॥२७

यह संकेत अन्तर की बुद्धि के स्वरूप बुद्ध जी असराफील ने आकर स्पष्ट कर दिया । सच्चे गुरु के बिना पहचान नहीं होती । शास्त्रकारों ने घोड़े को कलंकी करके लिखा । कलंक यही है कि उसके तीन पांव धरती पर और चौथा ऊपर उठा होगा । जब बुद्ध निष्कलंक आकर उस पर सवार होंगे तो चौथा पांव भी जमीन रख लेगा । घोड़ा विराट् है—चार पांव चार वेद हैं । तीन वेदों के अर्थ सब जानते हैं—चौथा अथर्व वेद स्वयं बुद्ध निष्कलंक खोलेंगे तो धर्म चारों पांव पर खड़ा होगा । इस रहस्य को कोई नहीं जानता ।

जोतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजुगको करसी निकंद ।
अंजीर कहे ईसा बुजरक, सो आएके करसी हक ॥२८

ज्योतिष शास्त्र कहता है—कि 'विजियाभिनन्दन' निष्कलंक अवतार आकर कलियुग—(काम-क्रोध-लोभ-अज्ञान) का संहार करेंगे । अंजील-बाइबिल में लिखा है कि बुजुर्ग—महान ईसा अवतार लेकर सबको माया जाल से मुक्त करेंगे । सभी भविष्य वाणियों को सत्य सिद्ध करेंगे ।

जहूद कहें मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए ।
यों सारोंने रसम जुदी कर लई, सबे बुजरगी धनीकी कही ॥२९

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूसा पैगम्बर को मानने वाले यहूदी कहते हैं कि मूसा महान अन्तिम समय में आएंगे उनके ही हाथ से सब मुक्त होंगे। इस प्रकार सबने अपनी-अपनी बात और चाल को पकड़ लिया परन्तु सब ने एक ही स्वामी महामति प्राणनाथ की प्रशंसा की है।

यों उरझे जुदे नाम धर, रब्ब आलमका आया आखर।
अपनी अपनीमें समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब ॥३०

सब धर्म वाले अलग नाम रख कर उलझ गए हैं। समस्त ब्रह्मांड का स्वामी अन्त में आ गया है। १७३५ में स्वामी जी की इस घोषणा को सब धर्म वालों ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में हुए शास्त्रार्थ के पश्चात् स्वीकार कर लिया। अपनी-अपनी बोली और अपने ही धर्म ग्रन्थ के द्वारा सब समझते हैं और स्वामी जी ने सबको उन्हीं के ग्रन्थों से (द्वारा) समझा दिया। अब कोई अलग नहीं रहा।

सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाएके दिए ॥३१

सभी धर्म ग्रन्थों ने गवाही दी है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों में बुद्ध निष्कलंक अवतार और कुरान में इमाम मेंहदी, बाइबिल (अजील) में ईसा, तौरात में मूसा आदि नाम कह कर महामति प्राणनाथ के ही आने की गवाही है। सभी विशेषण इसी स्वरूप में आकर मिल गए। अलग-अलग नाम और भाषाओं में एक ही शक्ति के अवतरण की बात है। स्वामी जी ने आकर सत्य और असत्य दोनों अलग कर दिखाए। माया और ब्रह्म के स्वरूप की पहचान करा दी।

दोनों जहानमें थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन ॥३२

हिन्दू और मुसलमान इन दोनों जहान में कर्म कांड और शरीयत का झगड़ा था। हिन्दू कर्म कांड और मुसलमान शरीयत में उलझे थे। हकीकत (सत्य ज्ञान) को खोल कर धाम, परमधाम, बृज-रास और जागनी की पहचान करा दी। जमीन-आसमान के बीच जो अज्ञान भरा था उसको दूर कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मांडको भान्यो खिलाफ, सब जहानको कियो मिलाप ।
गवाही खुदाकी खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे ॥३३

ब्रह्मांड में जो विरोध फैला था उसे मिटा दिया। हिन्दू मुसलमान में जो (भाषा और कर्मकांड की) लड़ाई थी उसे सुलझा कर मिलाप करा दिया। खुदा की गवाही देने वाला खुदा ही है जो उसका हुक्म लेकर उसके स्वरूप का बयान करता है।

सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत ।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अरस—अजीम के द्वारे ॥३४

जो शर्त्त खुदा ने मुहम्मद साहब से मेराज में की थी कि आखिरत के समय सत्गुरु पर सब विश्वास लाएंगे। खुदा के कलाम इस प्रकार कहते हैं। यह वर्णन तीसरे सिपारे में है (कि साहिब) परमधाम का दरवाजा खोल कर पहचान कराएंगे।

लैलत—कदरके तीन तकरार, तीसरे फजरमें कार गुजार ।
रूहों फिरस्तों वजूद धरे, लैलत कदरके माहें उतरे ॥३५

लैलतुलकद्र—क़ुदरत की रात्रि—के तीन हिस्से हैं। वृज, रास और जागनी। तीसरे हिस्से की फज्र के समय में तमाम काम कियामत के होंगे। ब्रह्म सृष्टि को परमधाम, ईश्वर सृष्टि को अक्षर धाम और जीव सृष्टि को बहिश्त में खड़ा करेंगे। ब्रह्मसृष्टि और (फरिश्ते) ईश्वरीय सृष्टि शरीर धारण करके लैलतुल कदर (हजार महीने की रात्रि) में उतरे हैं।

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार ।
हुकम दिया साहेब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥३६

रूहों और फरिश्तों के ऊपर खुदा के घर से हजार महीने तक खैर उतरी। हजार महीने की रात ग्यारहवीं शताब्दी है और खैर (भलाई) तारत्तम वाणी है। ब्रह्म और ईश्वरीय सृष्टि संसार में सिरदार बनी। साहिब परवरदिगार ने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनके हाथ अपना हुक्म दिया। ब्रह्म सृष्टियों के प्रताप से ही दुनियां के जीवों को हयाती (अमरत्व) मिली। आवागमन से मुक्त होकर अखंड हुए।

यों केती गवाही देऊँ कुरान, इन्ना इन्जुलनामें एह बयान।
तीसरे तकरारकी भई फजर, अग्यारैं सदीमें देखो नजर ॥३७

इस तरह कुरान की कितनी गवाहियाँ दूं। इन्ना इन जुलना सूरत में लैलतुल कदर का वर्णन है और उसमें रूहों और फरिश्तों के उतरने की बात लिखी है। तीसरे तकरार में फज्र होने की बात लिखी है। ग्यारहवीं सदी में दृष्टि डाल कर देखो।

और पेहेले सिपारेमें लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए ॥३८

और पहले सिपारे में जो हकीकत लिखी है, उसको क्या तुमने नहीं देखा? 'कुन'—दुनिया की उत्पत्ति से पहले खुदा ने 'कुन' कहा था—की गवाही जो देगा उसे खास उम्मत परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहना चाहिये।

अब जो कोई होवे खास उमत, देवे गवाही सो होए साबित।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ोंका गुमान ॥३९

अब जो कोई ब्रह्मसृष्टि खास उम्मत का दावा रखता हो वह सावधान होकर गवाही दो। अज्ञान रूपी गफलत उड़ा कर समझ कर पहचान करो। अपने जाहिरी इलम पढ़ने का गुमान छोड़ दो।

हकुल्यकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब ॥४०

सच्चे ईमान वाले सुन्नी जमात के जो मोमिम हैं सो सुन कर पहले ईमान लाएंगे। पीछे सब दुनियाँ इनको परमात्मा मानेगी। तब तमाम दुनियाँ के लोग ईमान लाएगे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिस्त दोजख़ जाहेर भई, नफा किसीको न देवे कोई ।
ले हिरदे हादीके पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए ॥४१

जब जमाने के साहिब मालिक ने आकर तारत्तम रूपी कुन्जी से हकीकत और मारिफत के दरवाजे खोल दिए, तो बहिश्त और दोजख जाहिर हो गई। तब कोई किसी को नफा नहीं पहुँचा पाएगा। सब अपनी करनी का फल भोगेगें। अपने हृदय में हादी (सद्गुरु) के चरणारबिंद लेकर छत्रसाल इस बात को पुकार कर (डंके की चोट पर) कहते हैं !

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ४१ ॥

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी—माएनों का नाहीं काम ।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहूकी ना रही ॥ १

यह जो कुरान है, एक तो अल्लाह के वचन हैं इनमें जाहिरी मायनों का बयान नहीं। ऊपरी (जाहिरी) बातों से काम नहीं चलेगा। दूसरे कुरान के बीच में इशारों (संकेतों) से बातें कही हैं। किसलिए कि रूह मोमिनों के लिए खुदा ने मूल खिलवत की इशारतें लिख भेजीं। उन संकेतों को मोमिनों के बिना दूसरा कौन समझे ! इसमें खुदा ताला के सिवा किसी की हुज्जत (दावा) नहीं चलती है।

तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोंहोंचे न चौदे तबकों की फिकर ।
सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिना दावा किनका नाहें ॥ २

तीसरे कुरान में जो जिक्र (बयान) है सो तो सिपारे-सिपारे में अलग-अलग जगहों पर आयतें लिखी हैं। जब इमाम मेंहदी ने आकर कुरान के बातिन मायने खोले तो सब जगहों के बयान मिला कर दिखा दिए। उन आयतों में से कड़ी-कड़ी निकाल कर इल्म रूपी जंजीर मोमिनों को पहनाई। इसके अन्दर चौदह लोक की बुद्धि नहीं पहुँच सकती। वह इल्म रूपी जंजीर मोती जो ब्रह्म सृष्टि हैं उनके दिल में (पिरो) पहना दी। यह काम खुदा के बिना दूसरे से नहीं हो सकता। कोई और इसका दावा नहीं ले सकता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केहेलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान ।
ना कुरान ना आप चिन्हार, एहेल—किताब यों कहावें दीनदार ॥३

कुरान पढ़ कढ़कर अपने को काजी कहलाते हैं। परन्तु खुदा मुहम्मद और मोमिनों की पहचान नहीं है। इनको न तो अपनी पहचान है न कुरान की और ऊपर से अपने आपको काजी मौलवी और कुरआन के वारिस और दीनदार कहलाते हैं।

जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर ।
ढांपे कुरानकी रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई ॥ ४

जाहिरी मुसलमान जाहिरी दृष्टि से जाहिरी मायने (शब्दार्थ) लेते हैं वे अन्धे हैं (शब्दार्थ समझ कर अनर्थ करते हैं) उनके लिए कुरान में जगह-जगह लानत लिखी है। कुरान में जो कियामत के निशान रूह अल्लाह का आना आदि लिखा है उसको ढांप देते हैं। हृदय में बैठा शैतान इन्हें हर तरह से कुफ्र की राह दिखाता है।

दिल पर दुसमन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलामकी राह ।
हुए हिरस हवाके बंदे, किए सैताने देखीते अंधे ॥ ५

दिल पर इबलीस शैतान बादशाह है वह शैतान धर्म की राह रोकता है। इसीलिए मोह माया और अहंकार के बीच गिरफ्तार हैं। शैतान ने दृष्टि रहते इन्हें अन्धा बना रखा है। ये पढ़ने, सुनने जानने पर भी समझते नहीं हैं।

सब अंगों बैठा दुसमन जोर, दिलके दीदे दिए फोर ।
दुसमनें छोड़चा ना कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी दौर ॥ ६

हर एक अंग में वह दुश्मन अपनी ताकत से बैठा है। दिल के नेत्र फोड़ दिए हैं। इस शैतान रूपी दुश्मन ने किसी जगह को नहीं छोड़ा। चौदह लोकों में इसका फैलाव है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उबरीं एक रूहें उमत, दूजी गिरो फिरस्तोंकी इत ।
जिनमें इमाम हुआ आखरी, हिन्दू फकीरोंमें पातसाही करी ॥ ७

इस शैतान के जाल से एक रूह मोमिन बचे हैं। और दूसरी जमायत ईश्वरीय सृष्टि (फरिश्तों) की बची है। जिन ब्रह्म सृष्टि में आखरी इमाम जाहिर हुए। यह जो मोमिन और फरिश्ते हिन्दु फकीर बन उनमें उन्होने राज्य किया।

देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबोंका दिया भान ।
ल्याया नहीं जो यकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन ॥ ८

सो तौरेत कलस है और सनंध कुरान है इनके द्वारा होकर इन ग्रन्थों के भेद खोल कर धर्म का मार्ग सबको दिखाया है। एक सच्ची राह दिखा कर सबका अज्ञान दूर किया। इन वचनों को सुन कर जो विश्वास नहीं लाए वे दोजख में जल कर धर्म में आए।

जो थी चौदे तबकों अंधेर, मार्यो सैतानी उल्टो फेर ।
कराया सबोंको सेजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा ॥ ९

जो चौदह लोक में अज्ञान रूपी अन्धकार था और जो शैतान सबको उल्टा फिराता था सो ईसा इमाम ने आकर शैतान को मारा, सबको सीधे रास्ते पर लाए। सबको परमात्मा के चरणों में नम्न कराया अर्थात् जो मिट्टी पत्थर आग आदि की पूजा करते थे उनसे वह पूजा छुड़वा दी। जो सदा का —अविनाशी— परमात्मा है, और जिसकी सूरत का किसी को पता नहीं था उसे प्रगट किया।

खासी गिरो नूरजमालमें लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई ।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही ॥१०

खास गिरोह ब्रह्म सृष्टि को परमधाम में पहुँचाया। अक्षर ब्रह्म का स्थान ईश्वरीय सृष्टि को दिलाया। तीसरी जो आम खल्क (जीव सृष्टि) है उसे नूर (अक्षर, ब्रह्म) की नजर तले आठों बहिश्तों में अखंड किया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबोंके किए यों सिध ।
कहे छत्ता पेहेले जो ल्यावे ईमान, खास उमतका सोई जान ॥११

इस तरह सबको बहिश्तें बांट दीं । सबके कार्य सिद्ध किए—सबको अपने कर्मों के अनुसार फल दिया । छत्रसाल जी कहते हैं पहले जो ईमान लाएगा उनको ही खास उम्मत का ब्रह्म सृष्टि जानियो ।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥५२ ॥

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे ।
कहे मक्केके काफर, आराम करे बैठे बीच घर ॥ १

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि खुदा के सम्पूर्ण सुख मोमिनों के लिए हैं । मक्का जो खुदा का घर है उसका दावा लेने वाले काफिर हैं ।

जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर ।
और जिनको खुदाएकी पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान ॥ २

जो मक्का के पत्थर की पूजा करते है उन लोगों ने उसे ही सत्य मान लिया है । परन्तु जिन्हें खुदा की पहचान है वे दुःख सहन करके भी विश्वास नहीं छोड़ते ।

तिनकी तसल्लीके कारण, महंमद को हुआ इजन ।
और इसलाम कहे दरवेस, कही खास उमत इन भेस ॥ ३

इन मोमिनों की तसल्ली के लिए आखरी महंमद श्री प्राणनाथ जी को अठारह हजार बाणी के द्वारा सुख देने का हुक्म हुआ । कुरान में इन्हीं मोमिनों को दरवेश अर्थात् दुनियां से अलग रह कर परमात्मा से प्रेम करने वाले कहा गया है । ब्रह्म सृष्टि को इसी प्रकार का भेस रखने वाले कहा गया है ।

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या माहें अल्ला कलाम ।
कोई कर ना सके भेव, जो देवें महंमदको फरेब ॥ ४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनकी मुराद इसलाम है अर्थात् ये लोग हमेशा दीन इसलाम—सत्य धर्म—की रोशनी चाहने वाले हैं। इस प्रकार कुरान में लिखा है। इमान रहित मनुष्य इसका निर्णय नहीं कर पाते। वे लोग आखरी महंमद अर्थात् स्वामी जी को धोखा देने वाला कहते हैं।

बीच आवें जाएँ सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर।
काफर होंए सिताबी दूर, मोमन साहेब के हजूर॥ ५

स्वामी जी का उपदेश सुनने बालों में भी सौदागर अर्थात् कथा श्रवण के बदले सांसारिक सुखों का व्यापार करने वाले भी आते हैं और झूठी वस्तुओं के लिए कुफ्र करते हैं अर्थात् कथा चर्चा में विघ्न करते हैं। इस प्रकार काफिर धर्म से बहुत दूर रहते हैं। मोमिन साहिब के निकट रहते हैं।

सो काफर पड़ें माहें दोजख, आखर को जो ल्यावें सक।
जो मोमन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार॥ ६

ऐसे जो काफिर हैं—जो आखरी स्वरूप स्वामी जी के ज्ञान पर शंका करते हैं—दोजख में पड़ते हैं। जो मोमिन इन्द्रिय आदि से खबरदार हैं वे हमेशा अपने परवरदिगार से डरते रहते हैं।

बीच आखरत के बुजरगी, हुई है इस उमतकी।
सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक॥ ७

आखिरी समय—(कियामत के समय) इस उम्मत की बड़ाई होगी। मोमिनों की खासी गिरोह जहां की रहने वाली हैं इस बहिश्त परमधाम में अच्छे बाग-बगीचों की गुलजार है।

दूध सहतकी नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तले।
है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदाकी मेहेरबानी॥ ८

उस परमधाम में दूध और शहद की नदियाँ बहती हैं। यमुना का जल दूध से सफेद और मिश्री से मीठा है। बागों और पेड़ों के नीचे नदियाँ बहती हैं। 'इसलाम' अर्थात् धर्म को मानने वाले मोमिनों के ऊपर खुदा की ओर से आतिथ्य होगा। उन पर परमात्मा की कृपा होगी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जहां बिध बिधकी हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त ।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेबके हजूर ॥ ९

जहां तरह-तरह की नियामतें हैं। बहिश्त में मेवा-मिठाई सब हैं। जब नूर-अक्षर-ब्रह्म का खेल पूरा होगा तो मोमिन खुदा के नजदीक पहुँचेंगे।

जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाएके ।
और जाहिद जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदारकी कस्त ॥१०

जो हमेशा दरगाह (हक के दरबार) के रहने वाले हैं वे खुदा की बहिश्त परमधाम के निवासी हैं। ईश्वरीय सृष्टि जाहिद अर्थात् परहेजगारी के साथ संसार से युद्ध करके बहिश्त चाहने वाले हैं। आशिक धाम, परमधाम कुछ नहीं चाहते। वे केवल धाम-धनी के दर्शन के लिए मेहनत करते हैं।

जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार ।
जो फुरमान—के—बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार ॥११

कुरान में जो नेक काम करने वाले कहे हैं उन्होंने छिपा (गुप्त) दीदार अर्थात् आत्म दृष्टि से अच्छी तरह परमात्मा का दीदार पाया। जो हुक्म बजा लाने वाले हैं वही नेक जमात मोमिनो की सरदार है।

ए जो कहीं किताबें तीन, तिनपर है हकका आकीन ।
सिफत जमाने पैगंमर, रखना बीच खुदाएका डर ॥१२

ये जो तीन किताबें—(अजील, तौरेत और कुरान) कही हैं, इन किताबों पर जिनका सच्चा ईमान है। इन किताबों में आखिरी पैगम्बर (इमाम मेंहदी) की सिफत (प्रशंसा) लिखी है। दूसरी बात यह भी लिखी है कि बन्दगी करो और खुदा का डर रखो।

अंजीर तौरते और कुरान, इन पर होए आया फुरमान ।
जो हबसेका पातसाह, पाई इन किताबोंसे राह ॥१३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंजील (रास), तौरेत (कलश) और कुरान (सनंध) इन तीनों किताबों में से होकर खुदाई हुक्म आया। कहा है कि जो खुदाई इश्क में हब्से का पातशाह है उसने दीन की राह इन किताबों से पाई।

इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद।
जो कहे दोस्त साहेब महल, नजीक खुदाएके खासे फैल ॥१४

जो इन किताबों की दिल में आशा रखते हैं वे अपनी चाहना के अनुसार कुरान और इसलाम का भेद पाते हैं। जिनको खुदा का दोस्त और महल अर्थात् अरस दिल करके लिखा है वही खुदा के निकट हैं और उन्हीं का चाल-चलन अच्छा है।

सबद न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद्द।
वास्ते नेकी आखरत, कबूं न छोड़ें खास उमत ॥१५

मुहम्मद का एक वचन भी ये नहीं छोड़ते—उसमें लिखे अनुसार ही चलते हैं। इसीलिए मोमिन दुनिया को रद्द कर देते हैं। आखिरी समय में मोमिनों को बड़ी भारी नेंकी मिलेगी, दुनिया के सुख के लिए दीन की राह नहीं छोड़ते।

अदा हुए सब फरज, तब सिरसे छूट्या करज।
खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी ॥१६

जब हक की पहचान हुई तो कर्मकांड आदि कर्ज से फारिग (निवृत) हो गए। शरीअत रूपी कर्ज छूट गया। तब मोमिनों को माया की गर्ज नहीं रह गई। इस लिए मोमिनों को बड़ी खुशी हुई जब अपनी बहिश्त—परमधाम का पहचान रूपी खजाना पाया।

इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाएके हिसाब।
सब बंदगी एही मोमन, जो अंदर के मारे दुसमन ॥१७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनका खुदा के निकट बहुत जल्द हिसाब होगा। मोमिनों की बन्दगी यही है कि अन्दर के इन्द्रियादि दुश्मनों को मारे। सब बन्दगियों उपासनाओं का मूल यही है।

एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत।
आप रखो पांउं उस्तवार, मैदान लड़ाई हो हुसियार ॥१८

यह जो चौथे सिपारे की तुम्हारे लिए हकीकत कही है, यही मोमिनों की शरीअत है इसी को तुम मोमिन लोग कबूल करो। दीन—सत्य धर्म के मार्ग पर कदम मजबूती से रखो, ईमान पर दृढ़ रहो। दिल रूपी जो मैदान है उसमें सावधान होकर इन्द्रियों से युद्ध करो।

ए जो बैठा माहें सबन, एही खुदाएका हैं दुसमन।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमनोंसों न चले जोर ॥१९

यह जो सबके दिल के ऊपर शैतान बैठा है यही शैतान खुदा का दुश्मन है। यही इबलीस भजन—बन्दगी करने में बहुत शोर करता है। परन्तु उसका मोमिनों से जोर नहीं चलता।

बाजे नजीक अरज निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाएका तुम राखो डर ॥२०

कुछ लोग परमात्मा के सामने हाथ जोड़ कर विनती करते हैं परन्तु उनके हुक्म, फर्मान और अठारह हज़ार वाणी से डरते नहीं अर्थात उसे जीवन में नहीं लाते। इस प्रकार कहा गया कि बंदगी के बाद खुदा का डर रखो। किसी समय भी बेखौफ न हो जाओ।

फुरमान बरदारी ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए।
जिनों कुरानकी पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर ॥२१

जो कोई सब तरह से फरमाए अनुसार हुक्म बजा लावेगा वह दुनिया के फँदों से बहुत जल्द छुटकारा पाएगा। महाराजा छत्रसाल कहते हैं जिन्होंने कुरान के भेद खोले उन्होंने हमें इस प्रकार कहा कि उसे तुम दिल में धारण करो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नफसोंसे करो सबर, मारो हिरस हवा परहेज कर ।
दिलसे दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर ॥२२

इन्द्रियों के विषयों से सब्र—(सन्तोष) रखो । झूठ, माया की चाह को परहेज़ (संयम) से मार दो । दिल को दृढ़ करके सब्र करो । तभी तुम्हारी बंदगी परमात्मा तक पहुँचे ।

बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए—सैती सलामत ।
कजाएका सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम ॥२३

बंदगी करने वाले की खुदा रक्षा करता है । शैतान की बला से सलामत रखता है अर्थात रक्षा करता है । कजा-इन्साफ का हुक्म-श्री मुख वाणी को अपने सिर लो यदि अपनी रूह को तुम अपने हक धनी से मिलाना चाहते हो ।

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तवारी जो बुजरक ।
लुत्फ मेहेरबान पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद ॥२४

बिना सांच के जो झूठी दुनियाँ है उसे दूर करो । बुजरक रास्ता दीन का है उसे दृढ़ता से पकड़े रहो । जो मुहब्बत की बातिन मेहरबानी खुदा की है उसका भेद पाओगे । निषिद्ध, त्याज्य झूठी माया के फंदे से तुम छूट जाओगे ।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब ।
पीछे फनाके फाएदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब ॥२५

खुदा और तुम्हारे बीच वजूद-शरीर ही का पर्दा है । यही तुम्हारी रूह को दबाए बैठा है, पहचान नहीं होने देता । अपना आप कुर्बान कर देने पर सब तरह का फायदा है । धाम धनी की अविनाशी दौलत, ब्रह्मानन्द सुख रूपी खज़ाना पाओगे ।

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए ।
छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होऊ बका पर ॥२६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो अखंड परमधाम का सुख चाहे वह हकके चरणों पर कुर्बान हो जाए। बिना कुर्बानी दिए अखण्ड सुख नहीं प्राप्त होता। नाचीज़-तुच्छ, कमतर (घटिया) जो माया है उसे छोड़ दो। अपने अखंड धनी पर कुर्बान हो जाओ।

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज—लों न खोले किन।
बातून जो कुरानके स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल ॥२७

इतने दिन तक जो कुरान के बातिन अर्थ छिपे थे जिन्हें आज तक किसी ने नहीं खोला था। महाराजा छत्रसाल कहते हैं उन कुरान के बातिनी प्रश्नों को महामति ने स्पष्ट किया।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ७९ ॥

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर।
सो महमूद गजनबी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान ॥ १

कुरान के तीसरे सिपारे में बड़ा बयान लिखा है। इमाम-फकीर और सुलतान-बादशाह की चर्चा की है। गजनी का महमूद बादशाह जब इमाम से मिला तो सब संसार को सुख हुआ। इसके बातिन अर्थ यह हैं कि जब महाराजा छत्रसाल ईमाम मेहदी श्री प्राणनाथ जी से मिले तो समस्त संसार को सुख हुआ।

लागन हिंदू मुसलमान, महमूद गजनबी सुलतान।
ढाए हिंदुओंके खाने—बुत, दिलमें इमामकी जारत ॥ २

हिन्दू मुसलमान की लड़ाई शुरू से है। महमूद गजनी ने हिन्दुओं के बुतखाने-मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा परन्तु उसे इमाम द्वारा नुस्खा प्राप्त न हुआ। आखिरत—कियामत के समय में महाराजा छत्रसाल ने हिन्दुओं से मूर्त्ति पूजा और कर्म कांड छुड़वा दिया। उनके दिल में इमाम मेहदी—(बुद्ध जी) के दीदार की चाह है।

अपने जमाने था उस्तवार, कुतब औलियों का सिरदार।
बंदगी माहें था बड़ा, सफ तलेकी रेहेता खड़ा ॥ ३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छत्रसाल जी अपने जमाने में धर्माचरण में दृढ़ थे। वे पढ़े लिखे-विद्वान-बारह हजार मोमिनों के सिरदार हैं बंदगी करने में बड़े तत्पर और तले की सफ जो गरीबी है उसमें रह कर तन-मन-धन अर्पण करते थे।

तलब द्वा फातियांओं की कर, चाहता था तोअजमंतिसा अवसर।
फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही ॥ ४

बड़ी चाहना से, स्तुति प्रार्थना-विनती करते थे। अजमंतिसा आयत में लिखा है कि खुदा जिसे चाहता है इज्जत देता है। वे भी मोमिनों में इज्जत चाहते थे। जब आप प्राणनाथ जी की और महाराजा छत्रसाल की भेंट हुई तभी महाराजा को विश्वास आया कि यही इमाम मेहदी और यही बुद्ध निष्कलंक अवतार हैं।

इमामें कह्या यों कर, पेसकसी ल्यावें हम घर।
बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कै सेहेर बाजार ॥ ५

तब इमाम ने इस तरह कहा कि हमारे लिए क्या नजराना (भेंट) लाए हो। तब छत्रसाल ने कहा कि पांच हजार कोस की बस्ती अर्थात् पांच तत्त्व का शरीर जो है यही आप को दिया। मुल्क मदीना के शहर बाजार—बुंदेल खंड की बस्ती-बातिन में शरीर में कई शहर बाजार जो कुछ भी है आप को दिया।

एक हजार सात सै हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी।
एती आएके पेसकसी करी, ओढ़के पुरानी कमरी ॥ ६

सत्ररह तत्व का जो सूक्ष्म शरीर है जिसमें दश इन्द्रिय, पांच प्राण मन और बुद्धि यही सत्तरह सौ हाथी हैं। एक क्षण में मन लाख कोस जाता है और उसके साथी अहंकार आदि हैं। इन्हीं चीजों का नजराना किया। स्वयं गरीबी और आधीनी (नम्रता) रूपी पुरानी कमरी ओढ़ कर—

आप होएके नंगे पाए, तलेकी सफमें खड़ा आए।
आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बखसीस ॥ ७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नंगे पांव अर्थात् राजमद छोड़ कर अपने आप को छोटा मान कर मोमिनों की सबसे पीछे की सफ-कतार में खड़ा हो गया। दीनता के साथ सिर झुकाया और प्रार्थना की कि मेरे अपराध क्षमा कर मुझ पर कृपा करो।

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ।
दुनियां थें आज़ाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया॥ ८

विनती की कि मुझे सब्र दो। फ़क़ीर जो मोमिन हैं उनमें शामिल करो। (इमाम ने) माया के फंदे से छुड़ा दिया और मोमिनों में शामिल कर लिया।

तोअजमंतिसामें सही, गजनबी को बखसीस भई।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊं सबन॥ ९

इस प्रकार कुरान की आयत अज मंतिसा में जो लिखा है कि खुदा जिसे चाहता है इज्जत देता है तो गजनी—(बुंदेलखंड) के सुलतान (छत्रसाल) को मोमिनों में सिरदारी की बखशिश हुई। छत्रसाल जी कहते हैं कि इमाम फकीर लिखा, है वही स्वामी जी हैं उनकी पहचान करो। मैं उनकी पहचान करवा कर सब के संशय निवारण कर दूं।

देऊँ कुरानकी साहेद, बिना फुरमान न काढ़ों सबद।
छठे सिपारेमें एह सनंध, ईसा नुस्खेका खावंद॥१०

छत्रसाल जी कहते हैं मैं कुरान की गवाही देकर कहता हूं। बिना कुरान के दूसरी बात नहीं कहूँगा। छठे सिपारे में इस तरह से लिखा है कि ईसा नुस्खे का मालिक है। श्री देवचन्द्र जी ने कष्टदायक तपस्या करके श्री तारतम रूपी नुस्खा पाया। तभी उन्हें नुस्खे का मालिक कहा।

और साहेदो देऊँ तीसरी, एहेल किताबें दिल में धरी।
दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित॥११

अब तीसरी गवाही और देता हूँ। जो कुरान के एहल-वारिस हैं उन्होंने दिल से इसे पहचान लिया। कुरान के ग्यारहवें सिपारे में यह शब्द लिखे हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरस नव से नब्बे हुए जब, मोमन गाजी आए तब ।
रूह अल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल ॥१२

जब मुहम्मद के कूच करने से नौ सौ नब्बे वर्ष हुए तब मरद नोमिन आए। उन मोमिनों की जमात के साथ रूह अल्लाह-श्री देव चन्द्र जी आए । जब दूसरे जामा में रूह अल्लाह शामिल होंगे (श्री प्राणनाथ जी के रूप में होंगे)—

बंदगी ए करसी कबूल, एकको हजार देवें इन सूल ।
ए दूजा जामा ईसेका होए, बातून माएने पाइए सोए ॥१३

आप हक्की सूरत आ कर सब की बन्दगी कबूल करेंगे । जो एक बन्दगी करेगा उसे हजार फल देंगें । ईसा रूह अल्लाह का दूसरा जामा जो लिखा है बातिन अर्थ खुलने से यह भेद मिलता है ।

चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रुहअल्ला का नुस्खा जहूर ।
नव सै नब्बे नव मास ऊपर, ए नुस्खा लिया मिसल मातबर ॥१४

चौथी गवाही नूर नामा किताब में लिखी है । रूह अल्लाह का नुस्खा जो तारत्तम मन्त्र है वह सब में जाहिर हुआ । रसूल के कूच से नौ सो नब्बे वर्ष पर जब नौ महीना हुए तब बुजरक जमात जो मोमिन हैं उन्होंने तारतम रूपी नुस्खे को कबूल किया ।

असराफील इत बीच इमाम, ए नुस्खे इलमकी किताबें कलाम ।
एक रोज आए खाने किताब, कह्या पोहोंचाओ नुस्खा सिताब ॥१५

असराफील ईमाम मेहदी के बीच बैठकर इस तारत्तम रूपी नुस्खा से चौदह किताब रूपी श्री मुख वाणी जाहिर किया । एक रोज किताब खाना-गढ़ा की मंजिल में (जहां बैठकर सभी मोमिन धर्म ग्रंथों की कड़िया मिला रहे थे) लालदास जी से स्वामी जी ने कहा कि औरंगजेब को फिर पैगाम पहुंचाओ । तब लालदास जी ने कुरान में फाल (शकुन) देखा तो सोलहवें सिपारे में मूसा पैगम्बर और फेरुन बादशाह का किस्सा आया । वहाँ मूसा ने फेरुन को जीता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है । उसे देख कर फल निकाला कि राजा से जल्दी मुलाकात होगी । तब स्वामी जी ने कहा कि छत्रसाल महाराजा के पास जल्दी नुस्खा-पैगाम (संदेश) पहुँचाओ ।

महंमद गजनबी सुलतान, ओ नुस्खा हासिल करे परवान ।
जब नुस्खा उनने सही किया, पंद्रह रोज सामें आएके लिया ॥१६

महमूद गजनी बादशाह (महाराजा छत्र साल) जी नुस्खा तारत्तम को जल्दी मंजूर करेंगे । जब छत्रसालजी ने उस पैगाम को सत्य मान कर तारत्तम लेना स्वीकार किया तो पन्द्रह रोज पहले से ही अपने भतीजे श्री देवकरण जी को श्री जी बुलाने के लिए भेज दिया ।

तब अव्वल आखरकी मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान
और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुस्खा करे विख्यात ॥१७

तब स्वामी जी के साथ आने वाले पहले के लोग और छत्रसाल आदि आखिर में आए वे सब मिले । वहाँ हिन्दू मुसलमान सब मिले । और भी अनेक जातियों और धर्मों के लोग वहाँ शामिल हुए । सब कोई नुस्खा-तारत्तम का प्रकाश फैलाने लगे ।

केतोंक अपना किया कुरान, करे निछावर बुजरग जान ।
इत पांच सै जुलजुलाटहू, संग रसूल के असलू रूह ॥१८

कितनों ने ही अपना तन-मन-धन सब न्यौछावर कर दिया । कइयों ने ने अपना बुजरक गुरु समझ अर्पण कर दिया । यहाँ स्वामी जी के साथ पांच सौ बड़े तेजधारी मोमिन थे । आखिरी रसूल के साथ असली रूह वाले मोमिन ब्रह्म सृष्टि थे ।

ए बखत हुआ कही क्यामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत ।
गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुस्खा हुआ साफ ॥१९

ऐसा लिखा था कि जब ऐसा होगा तो जानो कियामत आ गई । दोस्त जो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोमिन है उनको (सरत पर-कहे मुग्राफिक) परमधाम का बयान इल्म बाणी रूपी-खाना दाना पहुँचा। सुलातन जो महारजा छत्रसाल हैं उनके पिछले सब दोष मुग्राफ किए। जब तारत्तम ज्ञान लिया तो सब तरह से निर्मल हो गए।

बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद।
लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए ॥२०

बारह हल्क :—बारह हजार ब्रह्म सृष्टियों को, जो त्रिगुण फांस में बंधे थे उन्हें स्वामीजी ने ग्राजाद किया। वे माया के फंद से छूट गए। लाखों तरह के जवाहिरात ग्रर्थात ग्रखण्ड परमधाम के सिरोपाव मोमिनों को पहनाए। सब को सुख हुग्रा जौर दुःख चल गया।

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुस्खे भई सिफात।
हवेलियां जो थी बैरान, सो कियाँ खड़ियां हुए मेहेरबान ॥२१

पचास हजार बाग ग्रर्थात् परमधाम की पचास करोड़ योजन के ग्रन्दर ग्रनेकों बाग बगीचों का सुख मोमिनों के लिए खैरात किया। तारत्तम की बरकत से खुदा के नजदीक मोमिनो की प्रशंसा हुई। मोमिनों के ग्ररस दिल की हवेलियां खुदा की पहचान के बिना वीरान थीं। प्राणनाथ ने कृपा करके उन्हें फिर से खड़ा किया (ग्राबाद कर दिया) जागृत करके ग्रखण्ड कर दिया।

ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही।
इनका बयान करे आलम, बिना फरमाया करे जालम ॥२२

छत्रसाल जी कहते हैं ये बातें जो कुरान में कही हैं उनको मैं जाहिर करता हूँ। इल्म के जानने वाल इसका ऐसा (ग्रटपटा) वर्णन करते हैं—ऐसे जालिम लोग बिना फुरमाए काम करते हैं ग्रर्थात् कहे मुताबिक नहीं चलते।

तुम माएने ऊपरके यों लिए, किस्से कुरानके पेहले हो गए।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक ॥२३

स्वामी जी कहते हैं कि कुरान को पढ़ने वाले तुम लोग बातिनी भेद छोड़

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर उसका जाहिरी अर्थ इस प्रकार करते हो कि कुरान के किस्से तो पहले ही हो गए अब होने वाले नहीं हैं । पहले के जमाने तो मन्सूक-रद्द कर दिए गए । इस आखरत के समय में जाहिर होने वाली रोशनी को भूल से उनमें (गुजरे जमानों में) क्यों डालते हो ?

ए जो इमाम गजनवी का मजकूर, लिख्या आखरत को होसी जहूर
सो मजकूर कहें होए गया, जो जाहेर क्यामतमें कह्या ॥२४

ये जो इमाम फकीर और गजनवी बादशाह की बातें हैं कुरान में लिखा है कि वे आखिर में जरूर होंगी । जाहिरी अर्थ वाले कहते हैं कि यह बातें सब हो चुकीं । कुरान हदीसों में स्पष्ट कहा कि कियामत के निशान आखिर में प्रकट होंगे ।

उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिलके कान ।
काजी कजा पर आया आखर, खोल दिल दीदे देखो नजर ॥२५

उमी—आजतक दुनियाँ की चतुराई पढ़ने वाले अनपढ़ हिन्दू लोग अब कुरान को पढ़ते और लोगों को समझाते हैं—ए जाहिर अर्थ लेने वाले लोगो ! दिल के कान से सुनो । आखिर के वक्त काजी कजा पर आया है दिल के नेत्र खोल कर पहचान करो ।

ल्याओ आकीन कहें छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल ॥२६

छत्रसाल कहते हैं कि जो मुहमम्द से खुदा ने आने का वादा किया था सो आए हैं पहचान कर विश्वास लाओ । असल पाक जो मोमिन हैं सो दीदार पा कर धन्य-धन्य हुए ।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १०५ ।।

लिख्या माहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर ।
आरफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान ॥ १

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नूर नामा किताब में लिखा है कि मुहम्मद के नूर की जो रोशनी हैं वह तुम देखो। पढ़ने वाले लोग अपने आपको आरिफ-विद्वान कहलाते हैं किन्तु कुरान का बातिन भेद-(रहस्य) नहीं पाते हैं।

महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊँ पेहेचान ।
इन मुरगने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल ॥ २

मुहम्मद को आसमान में उड़ने वाला मुर्ग कहा है। इसकी अच्छी तरह पहचान करा दूँ। इन मुर्ग रुपी मुहम्मद ने इलम रूपी दरिया में गुस्ल-स्नान-किया। ईलम रुपी को अर्क-जल से पंखों (हृदय) को पवित्र किया।

तिन मुरगने झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर ।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगांम दिए सिरदार ॥ ३

उस मुर्ग ने अपने पंख झटके (हृदय में विचार किया)। उन बूंदों से पैगम्बर हुए बूंदे चौपाइयाँ हैं। उनके दिल में चौपाइयों का प्रकाश किया। वही परम धाम को खबर देने वाले पैगम्बर हुए। दस दस पैगम्बरों के पैगाम की शक्ति एक एक मोमिन में रखी इस प्रकार बारह हजार ब्रह्म सृष्टियों ने ही एक लाख बीस हजार पैंगम्बरों का काम किया। अठारह हजार श्री मुख वाणी को देश देश पहुँचाया। जिन मोमिनो ने बड़ा बुजरक पैगाम दिया।

कलाम अल्लाहकी तो एह नकल, देखो दुनियां की अकल ।
महंमदको करहीं औरों समान, इन दुनियाँकी ए पेहेचान ॥ ४

कुरान में तो इस तरह लिखा है लेकिन दुनियाँ की अक्ल तो देखो। मुहम्मद को भी दूसरे (पैगम्बरों) के समान समझतें हैं। इस दुनियाँ की समझ इसी तरह की है।

जो कहावें महंमदके बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदेके अंधे ।
कहावें जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमदको औरों समान ॥ ५

जो जाहिरी मुसलमान मुहम्मद की उम्मत कहे जाते हैं वे भी दिल के ऐसे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्धे हैं कि पहचान नहीं करते हैं। जाहिरी मुसलमान कहलाते हैं और महमद को दूसरे पैगम्बरों के समान गिनते हैं।

ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्लाकी सुध ना परी।
पेहेले कही जो तुम दिलमें आनी, तुम जो जानी मुसलमानी॥ ६

जाहिरी लोग जाहिरी अर्थों (शब्दार्थ) में भूले हैं। कुरान के बातिनी भेद की खबर किसी को नहीं मिली। मुहम्मद साहिब ने जो शरीअत का रास्ता बताया तुम लोग उसी को पकड़े हुए हो। शरीअत पर चलने, शराअ, को ही तुमने मुसलमान धर्म मान लिया है।

पाले अरकांन मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमन।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धरचा करज॥ ७

पानी से हाथ पांव धोना (वुजू) आदि बावन मसले (नियमों) को जो पालन करते हैं तुम उसी को मोमिन कहते हो। वुजू, निमाज, रोजा करना फर्ज है। यह बंदगी (शरीअत की) इन पर कर्ज की तरह है यह दिल के साथ नहीं करते।

और भी इनों मुसलमानी करी, सोभी देखो चलन जाहेरी।
ए लानत लिखी माहें फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान॥ ८

और इन्होंने तरीका मुसलमानी का लिया है जाहिरी लोंगो की चाल देखो। कुरान में इब्राहीम पैगम्बर को (किसी दोष के कारण) लानत लिखी थी। उसी को मुसलमानों ने बड़ी करके पकड़ लिया—(शराअ बना दिया)

सरीयत यों कहे इभराम, जिनों किए थे बद—फैल काम।
जिन अंगों लोप्या फुरमान, सो सारे किए नुकसान॥ ९

शरीअत के लोग कहते हैं इब्राहीम जिसने बुरा काम—(वचन भंग) किया था। उसने जिन इन्द्रियों के वशीभूत होकर बुरा काम किया था—पंचों ने मिल कर उन सारे अंगों को सजा दी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों सुंनत बड़ी कर लई ।
जिन लानत दई ऊपर तकसीर, सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर ॥१०

इब्राहीम के ऊपर इस तरह लानत कही है और पढ़े लिखे जाहिरी मुसलमानों ने सुन्नत को बड़ी करके मान लिया। जो गुनाह के बदले सजा दी गई थी उसको बड़े बड़े मीर पीरों ने शोभा समझ कर स्वीकार कर लिया। बिना सुन्नत के किसी को मुसलमान नहीं कहते।

ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याहीसें कर लई मुसलमानी ।
लानत करी ऊपरकी बानी, इनों सोई भली कर मानी ॥११

ये लोग खुदा के भेद को नहीं पाते हैं इन्होंने इसी इब्राहीम की अविज्ञा के दन्ड को मुसलमान धर्म समझ लिया। ऊपर के अर्थ लेने वालों को लानत कही है। इन्होंने उसी राह को अच्छा समझ लिया।

पढ़े आलम आरफ कहावें, पर एक हरफको अरथ न पावें ।
मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें बिचार ॥१२

जाहिरी पढ़ने वाले अपना नाम आलिम आरिफ धराते हैं परन्तु एक अक्षर का अर्थ नहीं पा सकते। मुंह से कहते हैं कि हम चारों कितावों के पढ़ने वाले हैं परन्तु ऐसे हृदय अंध हैं कि किताबों की सार वस्तु का विचार नहीं करते।

तौरेत अंजीर और जंबूर, चौथी कलाम—अल्ला जहूर ।
ए चारों उतरियां जिन पर, चारों नाम कहे पैगंमर ॥१३

तौरेत, जम्बूर (जबूर) और अंजील यह तीनों किताबें और चौथी किताब कुरआन शरीफ यह चारों किताबें जिन पर उतरीं उन चारों पैगम्बरों के नाम कहें हैं।

मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद ।
और आखरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद ॥१४

ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद ये चारों पैगम्बर जहूदों अर्थात् इब्राहीम ने अपनी छोटी पत्नि से प्रतिज्ञा करके वचन भंग किया तभी उसे यह दंड मिला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ मुसलिम जातियों में आए हैं और आखिरी पैगम्बर मुहमम्द साहब हैं। इनके बाद पैगम्बरी खतम है। इनके बाद मुसलमानों में कोई पैगम्बर नहीं हुआ।

मनसूख तीन कही तिन मिने, फुरकान एक यों भने।
समझे ना किताबोंके तांई, क्या लिख्या है माएनों माहीं ॥१५

उन चारों किताबों में से तीन रद्द कर दी गई कुरान इस तरह से कहता है। किताबों की पहचान मुसलमान नहीं कर पाते कि इनके अर्थों में क्या लिखा है।

तौरेत लिखी ठौर बीसक कही, जुदे जुदे नामों पर दई।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल क्यामत इनपर इसलाम ॥१६

लिखा है कि तौरेत किताब भिन्न-भिन्न नाम वाले बीस खलीफों ने कही है। अलग-अलग नामों पर जुदा-जुदा सम्बन्धों से खुदा ने दी है। उसी तौरेत किताब में होकर अव्वल में कुरान आया है और उसी तौरेत-कलश-किताब में होकर सनंध किताब अर्थात् अल्लाह का कलाम आया है। इसलम-दीन-धर्म में होकर कियामत की हकीकात मोमिन इस तरह से समझते हैं।

अब को मनसूख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक।
और भी तुमको कहूँ हक, बिना पाए मगज न छूटे सक ॥१७

अब कौनसी किताब रद्द कर दी और कौन सी सही रखी गई। इस बात को पहचान कर कोई भी जाहिर अर्थ लेने वाला बेशक न हो पाया। और भी तुमको सत्य बात कहता हूँ। बातिनी भेद पाए बिना शंका छूट नहीं सकती।

कुरान लिख दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और।
अब को अव्वल को कलाम आखरी, ए नीकें तुम ढूंढ़ो जाहेरी ॥१८

खुदाताला ने कुरान को चार जगहों पर लिखवा दिया मुहमम्द साहब श्री देवचन्द्रजी, श्री प्राणनाथ जी और ब्रह्म सृष्टि में। अथवा मामिनों के दिल पर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिबरील के पंखों पर, मुहम्मद साहिब ने शरीअत वालों में जाहिर किया और हकीकत मारिफत को हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी द्वारा जाहिर कराया। अब कौन सी किताब अव्वल को मनसूख करी और कौन सी आखिर में सही की। जाहिरी अर्थ लेने वालो ! इस बात की अच्छी तरह खोज करो।

किस्से कुरानके डारो तित, रद्द जमाने हो गए जित।
ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखर ॥१९

आखिरी समय में होने वाली जो बातें कुरान में लिखीं हैं उन्हें तुम बीते हुए काल में बतलाते हो। जो जमाने रद्द हो गए उनमें तुम उन सत्य बातों को बताते हो। जो रोशनी आखिर में (कियामत के समय) होने वाली है उसे तुम इस तरह क्यों कहते हो।

लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे।
ऊपर माएने ले देवे सैतान, ताको कहिए बे फुरमान ॥२०

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है जो जाहिरी नजर से देखने वाले हैं दोजख में पटके जाएंगे। शैतान जो इबलीस है वह जाहिरी मायनों में लगा देता है। ऐसे आदमी को असल काफिर कहना चाहिये।

जो कोई होसी बे फुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान।
ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सो जाहेरिओं हिरदेमें रखी ॥२१

जो कोई हुक्म से मुन्कर होगा—इन्कार करेगा वे निश्चय ही दोजख में जाएगा। उनको सिपारे-सिपारे में लानत लिखी है। उन्हीं बातों को जाहिरी लोगों ने दिल में धारण कर लिया है। (परमातमा की आज्ञा से मुंह मोड़ते हैं)

अब और कहूँ सो सुनो, महंमद को क्यों औरोंमें गिनो।
गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान ॥२२

स्वामी जी कहते हैं अब मै और जो कहता हूं उसे भी सुनो। मुहम्मद को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम औरों के समान क्यों गिनते हो। उनको मेराज-दीदार हुआ, खुदा ने नब्वे हजार हर्फ कहे और खुदा ने अपना माशूक (प्यारा) उन्हे कहा। इसलिए वे औरों के बराबर नहीं है। मुहम्मद और मोमिनों की पहचान तो तब होगी जब कुरान के बातिन भेद (भावार्थ) खुल जाएंगे।

एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार।
सात कलमें वाले पैगंबर, गिरो सबों को कही काफर ॥२३

जाहिरी पैगम्बर एक लाख बीस हजार हुए हैं जिन्होंने खुदा का पैगाम देकर दुनिया में सिरदारी की। सात पैगम्बरों ने कलमा कहा है। उनके नाम प्रकरण के अन्त में हैं। सब पैगम्बरों की जमात को काफिर करके लिखा है।

उनों करी बे फुरमानी, तार्थे गिरो सबों की रानी।
अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत ॥२४

उन पैगम्बरों की जमाअतों ने उन पैगम्बरों की हुकुम उदूली-आज्ञा को भंग-किया है। इसीलिए सब की जमात रद्द की गई अर्थात् दोजख में गई। तीसवें सिपारे की पहली सूरत अमेत सालून में यह बयान लिखा है।

महंमद की जो उमत भई, दस बिध दोजख तिनकों कही।
यामें फिरके कहे बहत्तर, तामें एक मोमन लिए अंदर ॥२५

जो मुहम्मद की उम्मत के लोग हैं, मुहम्मद के जो तिहत्तर फिरके हैं, उनमें से बहत्तर फिर्कों को दस प्रकार की दोजख कही है। तिहत्तरवां एक नाजी फिरका मोमिनों का है उनको परमधाम में लिया है।

कौन गिरो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही।
वाही सूरत में कही पुल सरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात२६

स्वामी जी कहते हैं कि हे जाहिरी लोगों ! आप सोचो किस जमायत को परमधाम में शामिल किया और कौन समुदाय काफिर हुआ। उसी अमेत सालून

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूरत में पुलसरात का बयान है। पुल सरात तलवार की धार पर चलना है। कौन जाति बिजली की तरह चल कर परमधाम में गई इसका विचार करो।

को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुल सरात की धार।
खास गिरो साहेबें सराही, गिरो दूजी पीछे लगी आई ॥२७

और कौन जमायत घोड़े की तरह उड़ कर पार पहुँच गई और कौन जमायत पुलसरात की धार से कटी। वचन रूपी रास्ता तलवार की धार के समान है उस पर काफिर नहीं चल सकते।

खास गिरोह जो मोमिनों की है उसे कुरआन में खुदा ने सराहा है। ईश्वरीय सृष्टि भी मोमिनों के पीछे उड़कर अक्षरधाम में पहुँच गई।

और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजखको चलाई।
ऐसे उलमा सबही कहें, माएना बातून कोई ना लहे ॥२८

तीसरी जमायत जो आम खलक है उसको शैतान ने पीछे लौटा दिया अर्थात् वचनों पर चलने नहीं दिया। उन्हें बद फैलों-बुरे कर्मों में उलझा कर दोजख की राह पर चला दिया। सब पढ़ने वाले इस तरह कहते हैं परन्तु बातिन अर्थ को कोई नहीं समझता है।

अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरफ।
बिना मगज ना महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ़्या कुरान ॥२९

अठारहवें सिपारे में यह लिखा हैं कि कुरान के भेद पाए बिना बुजुर्ग लोग कियामत के दिन को नहीं जान पाते। बातिनी भेद पाए बिना मुहम्मद की आत्मा की भी पहचान नहीं हो सकती है। बातिनी अर्थ समझे बिना कुरान का पढ़ना नहीं के बराबर है।

बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान।
एह वास्ता पाइए तब, मगज माएनें खुलें जब ॥३०

बिना बातिन भेद जाने कुरान की पहचान नहीं होती और यह भी पता नहीं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलता कि कुरान किस लिए आया। यह सब वस्तु तब मिलती है जब कुरआन के बातिन भेद खुलें।

खोल न सकें पढ़े अल्ला कलाम, सो खोलें उमी सब मेहेर इमाम।
अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी क्यामत ॥३१

कुरआन के (जिन) बातिन भेद को जाहिरी पढ़ने वाले नहीं खोल सकते सो उमी बिना पढ़े मोमिनों ने इमाम मेहदी की मेहर से खोल दिए। अव्वल के पैगम्बर ने यही वायदा किया था कि कुरान के बातिन मायने खुलने पर समझो कियामत आ गई।

किन खोले न माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान।
पढ़े आलम आरफ कै जन, पर एक हरफ न खोल्या किन ॥३२

किसी ने भी कुरआन के बातिन भेद कभी नहीं खोले। उसका भेद नहीं जानते और वर्णन करते फिरते हैं। कई आरिफ (विद्वान), आलिम पढ़े लिखे लोग पढ़ते हैं परन्तु एक अक्षर भी किसी ने स्पष्ट नहीं किया।

अब देऊँ दरवाजे खोल, कहूँ हकीकत बातून बोल।
जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज क्यामत ॥३३

स्वामी जी कहते हैं मैं तुम लोगों के लिए भेद खोल देता हूँ। बातिन भेद खोल कर सत्य वर्णन करता हूँ। जिससे पहचान जाहिर हो और कियामत के दिन की खबर हो।

साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम।
खोले माएने बातून हकी, मोमन जाहेर करों बुजरगी ॥३४

इस बात की गवाही कुरआन में लिखी है कि जब ईसा इमाम मेहदी अवेंगे तब दुनियाँ उनकी शिक्षा से एक धर्म में शमिल होगी। (इस्लाम-सत्य अनादि धर्म स्वीकार करेगी)। कुरआन के भेद आप हकी सूरत स्वामी जी ने आ कर खोले। स्वामी जी कहते हैं मैं मोमिनों की महानता जाहिर करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिख्या सब माएने बातन, सो हनोज लों ना खोले किन ।
सब खूबिआं हैं बातन, खुलें मगज सबों भई रोसन ॥३५

कुरआन में जो सब बातिन भेद लिखे हैं। हनोज लों (अब तक) किसी ने भी नहीं खोले। कुरआन की सब खूबियां उनके बातिन अर्थों में हैं। असराफील के पहले सूर फूंकने से पहाड़ उड़ेंगे, दूसरे से कब्र से मुर्दे उठेंगे—बहिश्त में पहुँचने की सब विशेषताएँ अपने बातिन अर्थ में सही उतरतीं हैं। अब कुरआन के सब भेद खुल जाने से वे रोशन-(प्रकट) हो गई हैं।

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम ।
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखर आए बीच जहूद ॥३६

कुरआन की पहली विशेषता यह है कि वह अल्लाह का कल्लाम-ब्रह्म वाक्य-हैं। दूसरी खूबी यह है कि दीन इसलाम के वारिस जो मोमिन हैं उनकी सिफ्त लिखी है। तीसरी खूबी यह है कि तीनों हादियों ने जो तीन शरीर धारण किए उनकी बुजुर्गी लिखी है। सो आखिर में जहूद अर्थात् हिन्दुओं के बीच आकर मोमिनों में राज्य किया।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी ॥३७

मुहम्मद, श्री देवचन्द्रजी और प्राणनाथजी तीनों को कुरआन में एक ही स्वरूप कहा गया है। बशरी-शरीयत का ज्ञान देने वाले मल्की हकीकत बयान करने वाले और हकी मारिफत-पूर्ण पहचान देने वाले सभी स्वरूप परमात्मा की तरफ से इश्क का प्याला पिलाने वाले हैं।

आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला माहें इमाम ।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातो कलमा आए इत भेले भए ॥३८

आदम-सफी अल्लाह, नूह नबी, मूसा-कलीम अल्लाह, इब्राहीम-खलील अल्लाह और अली पेगम्बर सब इमाम में आकर इकट्ठे हुए। मुहम्मद और ईसा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूह अल्लाह पहले कह आए हैं। यह कलिमा देने वाले सातों पैंगम्बर इमाम मेहदी आप स्वामी जी में आ गए। इनकी शोभा और सिफत आप स्वामी जी में आ कर मिल गई।

जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर।
सतरहें सिपारे यों कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया ॥३६

और भी जितने बड़े.बड़े पैगम्बर है उन सब की सिफतें आखिरी स्वरूप आप स्वामी जी के अन्दर आ कर इकट्ठी हुईं। सत्रहवें सिपारे में इस तरह लिखा है कि मुहम्मद को छोड़ कर कोई दूसरा मेराज में न आया और न गया।

और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैंगंमर सारे।
सब पैगंमरोंको जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही ॥४०

और अठारहवें सिपारे में खिला है कि मुहम्मद नाम से सब पैगम्बर हो गए हैं। जाहिर में सिफ्तें पहले हुए पैगम्बरों को दी हैं। वे सब सिफ्तें आखिरी महम्मद की हैं।

एक मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरगी देत ॥४१

जब इन बातों की पहचान हो तब जानो कि कुरआन का भेद खुल गया। तुम हिन्दू या मुसलमान सब सुनो। जो यह इलम देख कर दीन (धर्म) के मार्ग पर खड़ा रहेगा छत्रसाल जी कहते हैं साहिब उसे बुजुर्गी (बड़प्पन) देता है. अर्थात् परमधाम में पहुँचाता है।

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर ॥४२

छत्रसाल जी कहते हैं उनके नसीब को रोशनी नूर तजल्ला जो परमधाम है उसमें जाहिर होगी।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १४७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतनसे वास्ते तुम ।
इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी ॥ १

स्वामी जी कहते हैं हे सखो । हम खुदा का हुकुम लेकर आए हैं । परमधाम से हम तुम्हारे वास्ते आए हैं । जो हम अठारह हजार वाणी लाए हैं इसमें तुम्हारी सम्पूर्ण खबर लिखी है । जो इल्म हम ले आए हैं उसकी हकीकत-(वास्तविकता) देखो ।

सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम ।
कही खास उमत महंमद, जाको सिफतको न पोहोंचे सबद ॥ २

अल्लाह कलाम-कुरआन में आखिरी पैगम्बर की सिफ्त है । ईसा रूह अल्लाह यानो मल्की सूरत श्री देवचन्द्र जी और इमाम मेहदी अर्थात् हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी और महम्मद की जो खास उम्मत अर्थात् मोमिन है उनकी सिफ्त इन शब्दों में नहीं हो सकती ।

सोई कहूँगी जो लिख्या कुरान, सबद न काढूं बिना फुरमान ।
या तो कहूँ महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस ॥ ३

कुरआन में जो लिखा है वही कहूँगी । कुरआन के बिना एक शब्द नहीं कहूँगी । अथवा मुहम्मद ने जो हदीस में कहा है वह कहूँगी । भला मानो या बुरा—(सत्य तो कहना ही पड़ेगा) ।

दे साहेदी कहूँगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक ।
अब लों जाहेर थी सरीअत, खोले माएने बातून हकीकत ॥ ४

कुरआन हदीसों की गवाही देकर सत्य बात कहूँगी ! जिसको सन्देह हो वह जा कर कुरआन देख लो । जब से कुरआन आया तब से सब में शरीअत जाहिर थी । आप हकी सूरत आकर कुरआन के बातिन भेद जाहिर किए ।

अब सबमें जाहेर हुई क्यामत, खुले कलाम तब पोहोंची सरत ।
लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने ॥ ५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वामी जी के भेद खोल देने से सब में कियामत का दिन जाहिर हुआ। जब कलाम के भेद खोले तब कियामत का सरत-वायदा पूरा हुआ अर्थात् जाहिर हुआ। कुरआन के सोलहवें सिपारे में लिखा है कि आगे जो बड़े-बड़े बुजुर्ग पैगम्बर हो गए हैं उनमें से किसी ने भी ज्ञान की हकीकत नहीं पाई।

ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान।
जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी अकसा मसजिद ॥ ६

यह जो चौदह लोक के जीव हैं इनकी फिक्र-(चिन्तन-बुद्धि) वैकुंठ तक पहुँचती है। जब तक मुहम्मद सल्लिलाह जमीन पर नहीं आए-बातिन में जब तक आप हकी सूरत जाहिर नहीं हुए थे किसी ने अक्सा मस्जिद अर्थात् ला मकान शून्य को सिजदा करना नहीं छोड़ा। जाहिरी में अक्सा मस्जिद की ओर सिजदा करना मुहम्मद ने छुड़ा दिया।

और लिख्या मेराजनामे माहीं, जब हुआ मेराज रसूलके तांई।
रसूल चले पांऊं सिर दे, संग एक जबराईल ले ॥ ७

मेराज नामः किताब में लिखा है कि जब रसूल को मेराज हुआ अर्थात् खुदा का दीदार हुआ, तब रसूल अक्सा मस्जिद पर पांव रख कर अर्थात् पीठ दे कर हकीकत मारिफत के रास्ते पर चले। इसी प्रकार आप स्वामी जी ने शरीअत और कर्मकांड को पीठ दे कर हकीकत और मारिफत की राह ली। उनके साथ में केवल जिबरील-अक्षरातीत का जोश-था उसी से स्वामी जी वाणी जोश में उतरी।

चौदे तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही।
निराकार कहिए सुंन, एही बेचून बेचगून ॥ ८

जब मुहम्मद को मेराज हुआ तब उनको चौदह लोक की खबर हुई। इसी तरह जब शरीअत और कर्मकांड स्वामी जी ने छुड़ा दिया तब पिंड और ब्रह्मांड की की सब बातें सूझ गईं। ला मकान-हव्वा-शून्य को कहते हैं इसी को निराकार भी कहते है इसी को बेचून और बेचगून भी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोड़ याको आगे को गए, नूर—बनमें दाखिल भए ।
जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और ।। ६

मुहम्मद मेराज के समय इस निराकार को छोड़कर आगे को निकल गए। अक्षर धाम मे यमुना नदी के किनारे बनो-बगीचों में प्रविष्ट हुए । जिबरील यमुना के इस पार ही रह गया । ला मकान-शून्य निराकार से यह ठिकाना—मकान भिन्न अखंड है ।

आगे चल न सक्या क्योंए कर, नूर तजल्ला जलावे पर ।
तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही बिवेक ।।१०

जिबरील यमुना से आगे किसी तरह भी न पहुँच सका । नूर-तजल्ला (परमधाम) के तेज को वह किसी भी तरह नहीं सह सकता है । वहां परमधाम में एक मुहम्मद ही पहुँचे उनसे खुदा ने कई तरह की इशारतें कहीं ।

लिख्या दरिया मीठा मिसरीसे पाक, तित कह्या मुरग चोंचमें खाक
गिरो फिरस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर—खिलकत ।।११

मेराज नामा में लिखा है कि मुहम्मद को रहमत-(मेहर बानगी) का दरिया जो दूध से उजला और मिश्री से मीठा पाक साफ है खुदा ने मेहर करके दिखाया । वहाँ कहा है कि दरिया के किनारे दरख्त पर चोंच में खाक लेकर मुर्ग बैठा है । हुकुम रूपी दरख्त है उसमें श्यामा जी के दिल रूपी चोंच में पांच तत्व का शरीर रूपी खाक हैं । खुदा ने मोमिनों और फरिश्तों की ओर संकेत करके मुहम्मद को दिखाया । नूर खिलकत अक्षर की वासना फरिश्ते हैं । इनका भी खाक वजूद पांच तत्व का शरीर है ।

और कह्या देख दाहिनी तरफ, मोतिन के मुंह पर कुलफ ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों दिया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया ।।१२

खुदा ने मुहम्मद से कहा कि हे माशूक मेरे ! तुम अपने दाहिने हाथ की तरफ देखो । मुहम्मद सामने हैं—उनके दाहिनी तरफ श्यामाजी है । वे फरामोशी में है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोती जो बारह हजार रूहें हैं वे सब भी फरामोशी में बैठे हैं । मुहम्मद ने कहा कि हे परवरदिगार मेरे ! ए सब फरामोश क्यों बैठे हैं ? तब कहा कि हे मुहम्मद तेरी उम्मत जो मोमिन हैं उनको मैंने बार-बार मना किया और उन्होंने नहीं माना ! जब मुहम्मद ने कहा कि यह गुनाह किस तरह मिटेगा-खुदा ने कहा :—

इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल ।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावें सोई जिन पर होए खिताब ॥१३

इनके फरामोशी रूपी ताले की कुंजी तेरे दिल में है । तेरे दिल की रोशनी जब इनमें पुकार करेगी । जब इनका अज्ञान दूर होगा तो मिल कर परमधाम में आओगे । यह सब हकीकत कुरआन और मेहराजनामा में लिखी है । परन्तु वे ही पाएंगे जिन पर खुदा ने बातिन भेद खोलने का मुद्दआ रखा है ।

और कै बातें खुदा एसे करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी ।
तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियांमें तुम ॥१४

मुहम्मद से खुदा ने और भी बहुत सी बातें कीं । खुदा ने जो नब्बे हजार हर्फ कहे उन्हें दिल में धारण कर लिया । उनमें तीस हजार के लिए हुक्म हुआ कि तुम संसार में जाकर शरीअत कर्म कांड चलाओ (सही इन्सान बना कर ब्रह्म सृष्ठि के लिए वातावरण बना दो) । शराअ दुनियाँ में जाहिर कर दो ।

और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार ।
बाकी रहे जो तीस हजार, आखर इन पर है मुद्दार ॥१५

और जो तीस हजार हकीकत के हैं उनको प्रकट करने का अधिकार तुम्हें हैं । यदि कोई योग्य मिले तो कह देना । शेष जो तीस हजार मारिफत के शब्द हैं कियायत का मुद्दाअ इन्हीं पर है । इन्हें दिल में छिपा कर रखो । हम आ कर स्वयं इन्हें खोलेंगे ।

सो क्यामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान ।
अमेत—सालूनमें एह बात, बिध बिध कर लिखी बिख्यात ॥१६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मारिफत के हर्फ खोल कर कियामत जाहिर होने का, निसान बांधा है कि ग्यारहवीं सदी में जाहिर होगी। वह वायदा सच हुआ, कुरग्रान के भेद खुले इससे समझो कि कियामत आ पहुँची। कुरआन के तीसवें सिपारे अमेत सालून में यह बात तरह-तरह से विस्तार पूर्वक स्पष्ट लिखी है।

रूहें कहो बारे हजार, बुजरगो का नहीं सुमार।
जिनकी इच्छासों फिरस्ता होए, बड़ा सबनका कहिए सोए ॥१७

कुरआन में रूहें बारह हजार कही हैं उनकी बुजुर्गी और सिफत का पार नहीं पाया जा सकता। उनकी इच्छा से खेल पैदा हुआ है और पहचान के लिए वेद कतेब का आन्तरिक अर्थ खोल कर सूर बजाने असराफील फरिश्ता आया है। वह फरिश्ता सब फरिश्तों से बड़ा कहा गया। (खुलासा मारिफत में इसका विस्तार से प्रमाण दिया है)

सो रूहें दरगाहके माहें, ऐसे नजीकी और कोई नाहें।
सो रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल ॥१८

बारह हजार रूहें परमधाम में रहती हैं इन रूहों की तरह खुदा के निकट रहने वाला और कोई नहीं। इन रूहों की देखने में आदमी के जैसी शक्ल है, वास्तव में आदमी वे ही हैं। जितने आदमी माया के जीव हैं इनकी जड़ मूल कुछ नहीं वे उनकी नकल मात्र हैं।

[खुदा ने जब अजाजील को हुक्म दिया कि माटी लाओ और पुतला बनाओ तो अजाजील ने कहा बिना देखे मैं कैसा पुतला बनाऊं। खुदा ने जल में अपनी परछाई दिखा दी। उसी नकल को देख कर अजाजील ने आदम को बनाया। आदम की सन्तान ही मनुष्य हैं।]

और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंदसे उतारे।
काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियांमें बिस्तरे ॥१९

अठारहवें सिपारे में लिखा है कि खुदा ने नूर बिलंद अर्थात् परमधाम से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोमिनों को उतारा। मोमिनों का चाल-चलन, कहनी रहनी सब नूरमयी हैं। नूर जो तारत्तम ज्ञान है उसका प्रकाश दुनियाँ में फैलाया।

और जो अंधेरीसे पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे।
फिरे मनके फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों का अंधेर ॥२०

जो जीव नींद—माया से उत्पन्न हैं कुरआन में उनको काफिर लिखा गया। मन के वशीभूत झूठी माया में फिरते रहते हैं। उनका कार्य व्यवहार-चाल चलन सब अज्ञान मय है।

और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होएँ न्यारे।
फिरस्ते उतरे वास्ते कुरान, फिरस्तों ऊपर आया फुरमान ॥२१

उसी अठारहवें सिपारे में लिखा है कि मोमिन कुरआन से जरा भी अलग नहीं है। उसमें लिखे हुए के अनुसार चलते हैं। फरिश्ते,—ईश्वरीय सृष्टि भी कुरआन को लेने के लिए अवतरित हुई। इन्हीं लोगों के लिए कुरआन हकीकत कही गई। फरिश्ते और जो पाक मोमिन हैं इनकी बुजुर्गी जाहिर करने के लिए ही कुरआन आया।

फौज फिरस्तोंकी भरी नूर, असराफील बजावे सूर।
और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान ॥२२

फरिश्तों की फौज बारह हजार ब्रह्मसृष्टि नूर से भरे हैं। तारत्तम का तेज इनके अन्दर है। इसराफील ने इमाम मेहदी के बीच बैठ कर इन ब्रह्मसृष्टियों के लिए अठारह हजार वाणी का सूर बजाया। कुरआन के तीसवें पारे की इन्नाइन्जुलना सूरत के बीच यह हकीकत लिखी है।

फिरस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनीका हक।
उतरे लैलत कदरके माहें, तीन तकरार रातके जांहें ॥२३

फरिश्ते—जो खुदा के निकट रहने वाले पवित्र मोमिन हैं वे महान हैं। उनके साथ खुदा का हुक्म दीन का रास्ता दिखाने वाला है। लैलतुलकदरि जो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुदरत की रात है उसमें उतरे हैं। जिस रात के तीन हिस्से—बृज, रास और जागनी कहे। इन तीनो में रूहें और फरिश्ते उतरे।

रूहों फिरस्तों वजूद धरे, जोस धनीका ले उतरे।
रात नूर भरी कहीयत ए, जित रूहअल्लाके तन जो कहे ॥२४

रूहों और फरिश्तों ने शरीर धारण किया। धनी का जोश इनके साथ है यह रात्रि (जागनी का ब्रह्मांड) ब्रह्म ज्ञान की रोशनी से भरी कही है। इस रात्रि में रूहअल्लाह श्यामा जी के अंग ब्रह्मसृष्टि आए हैं।

एक तकरार हूदके घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर।
तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फिरस्ते पैगंमर ॥२५

एक हिस्सा रात्रि में बृज का ब्रह्मांड हुआ। वहां नंद जी ही हूद पैगम्बर हुए। दूसरा हिस्सा रात का नूह की किश्ती का वहां योगमाया की नाव में सखियों को चढ़ा कर रास मण्डल में रास खिलाई। वहां वासुदेव श्री कृष्ण को नूर कहा। तीसरा हिस्सा जागनी का जिसमें जागनी रास हुआ (ब्रह्मज्ञान का आनन्द पाया) उसी को फज्र कहा है। वहां रूहें-फरिस्ते और पैगम्बर सब मिल—इकट्ठे हुए। (पन्ना में बड़ा मेला हुआ)

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार।
हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥२६

आप श्री देवचन्द्र जी से लेकर हजार महीने से बेहतर (अधिक) ग्यारहवीं शताब्दी में खुदा की मेहर रूपी अठारह हजार वाणी प्रकट हुई। मोमिन और फरिश्तों की जमात पूर्ण पहचान पा कर सिरदार बनी। धाम धनी ने अपना हुक्म इनके हाथ दिया। इन मोमिनो के हाथों चौदह-लोक अखंड हुए।

आखर मिलावा साहेब इत, रूहें फिरस्ते पैगंमर जित।
याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित ॥२७

हदीस में लिखा है कि आखिर वक्त में खुदा आएगा और बड़ा मेला होगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सो पन्ना में रूहें फरिश्ते पैगम्बर इकट्ठे हुए। इसी सिपारे की छत्तीसवीं सूरत में यह बयान लिखा है। उस सूरत में तुम अच्छी तरह देखो।

तीन सरूप खुदाएके कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे।
एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर ॥२८

उसमें खुदा की तीन सूरतें लिखी है। रात्रि (लैल तुलकदरि) के तीनों हिस्सा में खुदा मोमिनों के साथ रहे। एक वृज में बाल अवस्था दूसरे रास में किशोर अवस्था तीसरे पन्ना में इल्म अठारह हजार वाणी में ज्ञान की भोर प्रकाश-करके बुढ़ापे की लीला की है।

दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर।
पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज माहें अंकूर ॥२९

उसी सूरत में दो और स्वरुप कहे हैं। एक स्वरुप मुहम्मद सलिस्लाह अरब देश में कुरआन लाए और दूसरे स्वरुप श्री देवचन्द्र जी तारत्तम रूपी कुंजी। इस कुंजी से वेद कतेब के ग्रंथ भेद खुले। पांच स्वरुप श्री इन्द्रावती के दिल में आ मिले। परमधाम का असल अंकुर बीज इन्द्रावती के दिल में पांचों शक्तियों के रूप में पड़ा और अठारह हजार वाणी रूपी अंकुर फूट उठे।

वजूद आदम का जैसा खाक, पांच पच्चीसों इनके पाक।
आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान ॥३०

आखिरी आदम हकी स्वरूप का वजूद देखने में तो आदमी जैसा है परन्तु इनके पांच तत्व और पच्चीस प्रकृति—गुण अंग इन्द्रिय सब पाक-पवित्र हैं। आठवें सिपारे में यह वर्णन लिखा है। कुरआन में आदम और अजाजील का किस्सा स्पष्ट लिखा है!

एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील।
न करे सेजदा ऊपर आखरी आदम,
फेरचा जाहेर कलाम—अल्लाका हुकम ॥३१

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह दज्जाल जो अजाजील है सब प्राणियों में इस कमसील—का दम-जोर हैं। आखिरी जमाने के खाविंद इमाम मेहदी के रूप को पहचान कर भी दुनियाँ के जीवों ने शैतान के वश में हो कर उनको सिजदा नहीं किया। अल्लाह का कल्लाम, तारत्तम का ज्ञान-मक्का से-वसीयत नामा आने पर भी स्वीकार नहीं किया।

माहें गया सबनको खाए, पढ़े ढूंढ़त जुदा ताए।
जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए ॥३२

शैतान सब के दिल में बैठ कर उनको खा गया अर्थात् धर्म की राह छुड़ा कर गुमराह कर दिया और विनाश के मार्ग पर ले गया। जाहिरी पढ़ने वाले शैतान को बाहर ढूंढ़ते हैं कि वह निमाज पढ़ते हुए आएगा। लेकिन वह अन्दर बैठा है यह नहीं समझते। जाहिरी लोगों को जाहिर नजर से दिखाई नहीं देता। ऊपर के अर्थों में शैतान ने इन्हें उलझा दिया है।

दाभतल अर्ज माएने बातन, मुख आदमका गधी तन।
बतन माएने कही क्यामत, देखसी खुले हकीकत ॥३३

कुरआन में दाभतल नाम का जानवर अर्ज अर्थात् धरती से पैदा होना लिखा है। उसका मुख आदमी का होगा और शरीर सब जानवर का होगा। सुअर जैसी आंखें जो बुरी चीजों पर दौड़ें। कान हाथी के समान जो एक कान से सुन कर (लेकर) दूसरे कान से उड़ा देता है। शेर छाती होगी अर्थात् उसमें रहम न होगा। सींग बैल जैसे जो लड़ने को हरदम तय्यार रहते हैं। पीठ गीदड़ के समान जो धर्म के काम में भाग जाते हैं। मुर्ग के समान गर्दन जो अहंकार में सिर उठाए रहते हैं। कुरआन में लिखा है कि इस प्रकार का एक जानकार होगा। बातिन अर्थ में ऐसा इन्सान! शैतान का दास इन्सान ही वह दाभ तल अर्ज है। कुरआन में बातिन अर्थों में ही कियामत कही गई है। जब वेद कतेब के मगज खुलेंगे तभी कियामत होगी और उसकी पहचान होगी।

दज्जाल एक आंख जाहेरो, कै बिध तिनकों लानत करी।
नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी ॥३४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दज्जाल की एक आँख जाहिरी ही खुली है। वह पांच तत्व का शरीर सत्य कर देखता है और आत्मा को नहीं पहचानता उसके लिए कुरआन में जगह जगह पर लानत कही हैं। दज्जाल के पास बातिन नजर दृष्टि नहीं है जिससे धाम धनी की पहचान हो।

खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुसमन जोरावर ।
पातसाई करे सबोंके दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर ॥३५

शैतान किसी को भी अन्दर की आँख खोलने नहीं देता। दिल पर बड़ा ही जोरावर—बलशाली-दुश्मन बन कर शत्रुता कर रहा है। सब के दिल पर राज्य करता है। यह दज्जाल कुफ्र और लानत लिए दिल पर बैठा हैं।

दुसमन राह मारे इन हाल, भूले देखे बाहेर दज्जाल ।
छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर ॥३६

यह शत्रु इस तरह से राह मारता है। भूल में पड़े लोग प्रकट दज्जाल को ढूंड रहे हैं। कुरआन के छठे सिपारे में इस तरह शब्द लिखे हैं कि ईसा रूहअल्लाह चौथे आसमान से उतर कर इस काफिर को मारेंगे।

करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस ।
साहेबी उमतकी साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ्यो जस ॥३७

दुनियाँ में आकर चालीस वर्ष राज्य करेंगे। तब सब जातियां धनी पर ईमान लाएंगी। दस साल तक ब्रह्मसृष्टि को बड़प्पन मिलेगा। जो धनी की खास उम्मत है उनकी जागनी दस वर्ष में होगी। ग्यारहवीं सदी के ऊपर तीस वर्ष में—बारहवी सदीं में—चौदह लोक की कायमी होगी। ग्यारहवीं सदी के दस साल और बारहवीं के तीस वर्ष में ईसा रूह अल्लाह ने दूसरे जामे में होकर राज्य किया।

अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें बिस्तरी ।
दुनियां दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन भेख ताए ॥३८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अखंड बहिश्त परम धाम की श्री मुख वाणी द्वारा इस खेल में जाहिर होगी उस समय तारत्तम का प्रकाश सब में फैलेगा। सब दुनियां दौड़ कर मिलेगी। उस समय जाति पांति—वर्ण भेष की खेंचा खेंच छूट जाएगी। (वर्ण भेष सब छूट जाएंगे) (यह सब पन्ना में उस युग में हुआ)।

कह्यो न जाए धनीको विलास, पूरी साथ सकलकी आस।
लीला विनोद करसी हांस, ए सुख उमत लेसी खास ॥३९

उस समय मोमिन धनी से जैसा हास विनोद करेंगे वह इस जबान से कहा नहीं जा सकता। सो आप हकी सूरत ने वादे पर आकर सब की मनोकामना पूरी की। धनी के साथ मिल कर मोमिन हंसी, विनोद करेंगे। खास उम्मत मोमिन यह सुख पाएंगे।

ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम वास।
इसक न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास ॥४०

अखंड लीला को जाहिर करने के लिए स्वामी जी के शिष्य श्री मुख वाणी लेकर दौड़ेंगे अर्थात् दुनिया में फैलाएंगे। जिस प्रकार पवन सुवास को चारों ओर फैला देती है। उस समय प्रेमियों को इश्क स्वास नहीं लेने देगा। जिस प्रकार अग्नि से दाना घास सब जल जाता है (उसी प्रकार मोमिनों के गुण अंग इन्द्रिय इश्क की आग में जल कर पवित्र हो जाएंगे)

जाए पड़े प्रेमके फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस।
पीछे तीसों नूर बरसात, तिन आगूं आवसी पुल— सरात ॥४१

जो प्रेम के पाश में बंध जाएगा जैसे आग में पड़ कर शरीर का लहू सूख जाता है और मांस गल जाता है इश्क की आग में शोभा, बुजुर्गी, आदि माया का फंद अपने आप हट जाएगा। ग्यारहवीं सदी के पीछे तीस वर्ष तक नूर की वर्षा होगी। सत्तरह सौ पैंतालीस में ग्यारहवी सदी पूर्ण हुई उसके बाद छः वर्ष स्वामीजी की आयु के और चौबीस वर्ष महाराजा छत्रसाल में हो के अठारह हजार वाणी का नूर बरसा। देश-देश में प्रसार हुआ। उसके आगे पुलसरात की धार पर चल कर उस सुख को पाना होगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फिरस्ते दिए चलाए ।
अजाजील बिरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल ॥४२

उसके बाद पुलसरात का मार्ग है। अर्थात् उसके बाद आत्म दृष्टि से श्री मुख वाणी पर चलने का समय होगा। ग्यारह सौ तीस से बारह सौ तक आग जलेगी। इन सत्तर वर्षों में फरिश्तों की जागनी होगी। तब अजाजील फरिश्ता (विष्णु) विरह की आग में जलेंगे। तब इसराफील इल्म द्वारा सब को निर्मल करेंगे।

आगे असराफीलें काएम किए, तेरहीमें नूर नजर तले लिए ।
नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध ॥४३

फिर इसराफील बुद्ध जी सबको तारतम देकर, कर्म कांड से छुड़ा कर अखंड कर देंगे। तेरहवीं सदी में सब अक्षर की नजरों तले अखंड होवेंगे। जब अक्षर जागृत हुए तब अक्षर की नजर में सब अखंड हुए। सब जागृत बुद्धि के बीच, बुद्धिजी के शरणागत होकर अखंड हो जाएंगे।

नतीजा पावें सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसालके होए ॥४४

अपनी अपनी बंदगी के अनुसार सब फल पाएंगे। यह हुक्म धनी ने छत्रसाल को दिया है।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १६१ ॥

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां ।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां, दैयां धनियां ॥ १

आप हक्की सूरत श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि हे छत्रसाल ! (साकुंडल सखी) तेरी बड़ी शोभा हुई। इस जबान से तेरी महिमा कही नहीं जाती। बारह हजार ब्रह्म सृष्टि माननियों की जमायत है जिनका मिलाप है उनमें धाम धनी ने तुमको बड़ाई दी है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कदम हादीके मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर ।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूँगी जो कह्या अल्ला कलाम ॥ २

हादी-सत्गुरु श्री देवचन्द्रजी के चरण मेरे सिर पर हैं । वही सब धर्मों की खबर देने वाला है । जिन हजरत का कुरआन में रूह अल्लाह नाम है । कुरआन में जो कहा है उसी के अनुसार कहूँगी ।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोकों दई ताम ।
मैं सिर पर एही लिए कलाम, आए कुँजी बकाकी करी इनाम ॥ ३

रसूल—मुहम्मद, रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी और इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी इन तीनों ने मिल कर मुझे रूहानी भोजन दिया । उन के वचनो को मैंने सिर पर लिया-(धारण किया) । उन्होंने आकर अखंड परमधाम के द्वार खोलने की तारत्तम रुपी कुंजी प्रदान की ।

ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आएत ।
या तो हदीसें कहूँ महंमद, या बिन और न कहूँ सबद ॥ ४

इस बात की गवाही कुरआन के सिपारों और सूरतों में दी गई है । वे खुदा के यहां से उतरी आयतें हैं । या तो फिर हदीसों की बात करती हूँ । कुरआन हदीसों के बिना दूसरी गवाही की बात नहीं करूंगी ।

बावन मसले जो कहे अरकान, जो बजाए ल्यावें मुसलमान ।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन ॥ ५

खुदा की बंदगी और निमाज आदि के समय पवित्र होने के बावन नियम जो धर्म के स्तम्भ माने जाते हैं । उनके अनुसार जो चले वही शरीअत में पक्का माना जाता है । उनका फल मिलने का वायदा इतने ही दिन का था कि जब अखिरी स्वरूप आएंगे तो बंदगी का फल मिलेगा । जिन्होंने सच्चे पवित्र दिल से उपासना की होगी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत ।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई क्यामत ॥ ६

यह शरीअत की बंदगी की बात है। जब हकीकत का भेद खुलेगा तो सच्ची शरीअत वाले बंदगी का फल पाएंगे। जब मारिफत के द्वार खोल दिए तो जो कियामत की सरत बताई गई थी वह आकर पहुँच गई।

और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तुमें ।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखरको आए धनी ॥ ७

जो हकीकत पाँचवें सिपारे में लिखी है सो तुम अच्छी तरह देखो। हिन्दुओं पर धनी की अपार कृपा है जिनमें अन्त में स्वयं स्वामी आए।

सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत ।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदोंके घर ॥ ८

सब पैगम्बर इस समय यहाँ आए। हदीसों में कहा है कि आखिर के समय नबियों का मुल्क होगा। जितने भी पैगम्बर हुए वे यहूदियों (अमुसलिम जातियों) हिन्दुओं के घर में हुए हैं।

ज्यों अव्वल त्योंहीं आखर, सोभा सारी महंमद पर ।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरानमें एही खबर ॥ ९

जैसे पहले होता रहा अब भी वैसाही हुआ। सारी शोभा आखिरी मुहम्मद की है। यह तुम आत्म दृष्टि से देखो! सारे कुरआन में यही खबर जगह-जगह पर दी गई है।

लोक ढूढ़ें माहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान ।
अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही ॥१०

हदीसों में इमाम मेहदी के आने की बात लिखी है। लोग मुसलमानों में ढूढ़ रहे हैं। जो कुरआन में लिखा है उसे नहीं देखते हैं। कुरआन के पहले सिपारे में यह खबर लिखी है वह मैं तुम्हारे सामने प्रकट करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम ।
जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरानसे किए दूर ॥११

अलिफ, लाम और मीम यह तीन हर्फ कुरआन के पहले सिपारे में हैं। इन तीनों अक्षरों को बहुत बुजुर्ग, महान, और एक कहा गया है। अलिफ मुहम्मद को कहा और ईसा रूह अल्लाह को लाम और मीम मेहदी को कहा। जिन लोगों ने यह जहूर-बातिन भेद-नहीं जाना उन्होंने इन अक्षरों को कुरान से निकाल कर दूर कर दिया।

याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध बिवेक ।
कलाम अल्लाएँ ऐसो कही, आलम आरफकी हुज्जत ना रही ॥१२

हदीसों में कहा है कि इन हरफों को जानने वाला एक खुदा है। इस तरह का बंदोबस्त कर दिया है। कुरआन शरीफ में ऐसा कहा है कि जो जाहिरी इल्म को पढ़ने वाले विज्ञान और ज्ञानी हैं उनका कुछ दावा नहीं है।

और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारेमें एह बयान ।
इनका जिन खोल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो बिचार ॥१३

कुरआन के दूसरे सिपारे में यह बात लिखी है। छत्रसाल जी कहते हैं कि जिन्होंने इन अक्षरों का भेद खोला उनका दिल से विचार करो।

ए महंमदको दिया खिताब, माएने खोले सब किताब ।
सो माएने रुजू उमतसे होए, खासी उमत कहिए सोए ॥१४

इन हरफों को खोलने का अधिकार खुदा ने मुहम्मद मेहदी पर रखा है। इसलिए कुरआन, पुराण के भेद खोल कर जाहिर किए हैं। इन अर्थों को पहचान कर रुजू होना—निश्चित रूप में मानना मोमिनों से ही सम्भव है। उन्हें ही खास उम्मत ब्रह्म सृष्टि कहते है।

महंमदकी इनपें पेहेचान, भली भाँत समझें कुरान ।
जैसे पेहेचानने का हक, इन उमतको कोई नहीं सक ॥१५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आखिरी मुहम्मद की पहचान करने वाले यही मोमिन हैं। कुरआन के भेद अच्छी तरह समझने वाले यही मोमिन है। जैसे पहचानना चाहिये वैसे ही इन्होंने पहचाना। इस उम्मत—मोमिनों के दिल में कोई शंका नहीं।

जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत।
माहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस ॥१६

जिन हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी को खुदा ने तौरेत—कलश किताब दी है, सब दुनियाँ को यही अखंड सुख देंगे। यह हकीकत कुरान के उन्नतीसवें सिपारें में लिखो है कि जिसे खुदा देता है। उससे कैसी रीस—कौन मुकाबिला कर सकता है?

आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर।
जो गिरो बनी असराईलकी भई, सो औलाद याकूबकी कही ॥१७

ईसा रूह अल्लाह पैगम्बर आए। उनके दो बेटे कहे एक बनी इसमाइल विहारीजी और एक बनी इसराइल श्री प्राणनाथ जी। जहूदों—हिन्दुओं में मोमिनों की जमायत आई वही बनी इसराईल की औलाद कही गई। इसराइल ही याकूब पैगम्बर हैं—वह खिताब आखिर में आने वाले इमाम मेहदी के लिए और उनके नाम लेने वाले मोमिन हुए।

हुए सांमिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म हुआ अहमद।
संग रोसन तौरेत कुरान, सो रान्या जाए न हुई पेहेचान ॥१८

रसूल मुहम्मद जब ईसा में आकर मिले तो रूह अल्लाह का नाम अहमद हुआ। उनके साथ दीन की रोशनी देने वाली किताबें कलश और सनंध की आईं। जिसने न पहचाना वह दीन से रद्द कर दिया गया।

भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरगी आए आखरत।
जाहेर हुए इत इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक ॥१९

हिन्दुओं के बड़े भाग्य उदय हुए। आखिरी जमाने के खाविंद ने इन में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकट हो कर इन्हें बड़प्पन दिया। सत्य मार्ग दिखाने वाले ईमाम हिन्दुओं में आए। जो इन पर शंका करे वही काफिर है।

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधोंका दुसमन नूर।
ए सुन वाका न ल्यावे ईमान, सोई चमगादड़ उल्लू जान ॥२०

उल्लू सूर्य की रोशनी देखना नहीं चाहते वैसे ही काफिर लोग दीन की रोशनी देखना नहीं चाहते। यह ऐसे अंधे हैं कि दीन की रोशनी से दुश्मनी रखते हैं। यह वचन सुन कर जो ईमान नहीं लाते हैं। उसे ही चमगादड़ और उल्लू मानना चाहिसे।

महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान।
जो तौहीद का कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे ॥२१

मुसलमान मुहम्मद के उम्मती—मजहवी कहे जाते हैं। यह तो जाहिरी शरीअत लिए हुए खड़े हैं। यदि तौहीद (एकेश्वर) का वचन कलमा सच्चे होकर कहते हैं और मोमिनों की बराबरी का दावा लेते हैं।

जो होए इसक आकीन साबित, तोभी झूठी ए सरीकत।
सिरें न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या माहें अल्ला कलाम ॥२२

जो कदाचित् ईमान और यकीन-विश्वास में पूरा हो तो भी मोमिनों की बराबरी करना झूठा है। ऐसे घमंडी लोगों का काम पूरा नहीं होता—कभी अच्छा नहीं होता ऐसा अल्लाह कलाम-कुरआन में कहा है।

सिपारे तीसरेमें कहीं, पांच वजेह की पैंदास भई।
दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ दो हाथन ॥२३

कुरआन के तीसरे सिपारे में कही है कि दुनियाँ की पैदाइश— सृष्टि-पाँच तरह की है। जब शुरू में खुदा ने 'कुन' कहा तो यह दुनियाँ पैदा हो गई। एक सृष्टि एक हाथ से दूसरी दो हाथ से हुई।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक सरूप कह्या एक हाथ, दो हाथ सरूप मिले दो साथ ।
रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम ॥२४

एक हाथ की पैदाइश बशरी सूरत बरारब —अरब देश में आए। दो हाथ की पैदाइश के दो स्वरुप मल्की सूरत श्री देवचन्द्रजी और हकी सूरत श्री प्राणनाथजी हैं। रसूल, रूहअल्लाह और इमाम मेहदी वे तीनों एक ही स्वरूप हैं हैं उनके नाम अलग-अलग हैं।

एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही ।
दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलाएक मुतकी नूर ठौर ॥२५

एक समुदाय मूल से (अनादि) कहा गया। वही हमेशा परमधाम की रहने वाली रूहें हैं। दूसरी गिरोह की जाति दूसरी है। वे मलायक—फरिश्ते, मुत्तकी-संयमी लोग अक्षर धाम में रहने वाले हैं।

तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध ।
नूह नबी के बेटे तीन, तिनमें स्याम सलाम अमीन ॥२६

तीसवें सिपारे में यह बात लिखी है दिल के अन्धे बातिन भेद कैसे पाएं? नूह पैगम्बर वासुदेवजी—के तीन बेटे कहे उनमें जो श्याम—श्री कृष्ण हैं वे ही सब को सलामती देने वाले हैं।

मुसलिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए ।
ए तीनों मिल दुनियाँ रची और, तीनों आए जुदे जुदे ठौर ॥२७

मुसलिम जो मोमिन हैं, उनको श्याम—श्री कृष्णजी ने योगमाया की किश्ती पर बिठा कर रास मण्डल में पहुँचाया। काफिर तूफान में डूब गए अर्थात् कालमाया का ब्रह्मांड प्रलय हो गया। नूह याने वसुदेव के तीन बेटों ने फिर नई दुनियाँ की रचना की। वे तीनों अलग-अलग जगह पर आए।

चाँद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बढ़ो जस ।
चाँद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए ॥२८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री कृष्ण ही अरब देश में मूर्त्ति पूजा और अज्ञानान्धकार हटा कर एकेश्वर (खुदा) के सामने सिजदा; (प्रकाश) कराने वाले चन्द्रमा मुहम्मद हैं। अरब देश में चांद मुहम्मद के सिवा दूसरा कौन हो सकता है। श्याम जो अरब के मुहम्मद हैं उन्होंने ज्ञान का प्रकाश दिखा कर बड़ा यश प्राप्त किया। मुहम्मद के बिना रोशनी देने वाला कोई दिखाई नहीं देता।

पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए ।
हिसाम चाँद कह्या हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिंदुओं साहेब जान ॥२८

पहली बार में बृज से योगमाया की नाव पर रास मंडल में पहुँचाया फिर अरब देश में कुरआन लाए तभी नाम रसूल कहलाए। हिस्याम ही बलभद्र हैं उनका अवतार ऋषि वेद व्यास हैं। वे हिन्दुस्तान के चाँद कहलाए। उन्होंने वेद का विभाग करके हिन्दुओं को कर्म कांड में लगाया। हिन्दुओं ने इन्हें परमेश्वर जान कर इनकी पूजा की और इनके कहे अनुसार चले।

याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान ।
आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन ॥३०

याफिस ही सोलह कला सम्पूर्ण विष्णु है वे तुरकिस्तान अर्थात् द्वारिका में आए। उनको कोई पहचान न सका। द्वारिका के स्वरूप श्री कृष्ण की किसी को पहचान न हुई। आजूज-याजूज-दिन और माजूज रात सो इनसे पैदा हुए। इनकी तीन फौज प्रात:काल, मध्याह्न और सायं काल तीनों मनुष्य को खा जाते हैं।

तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आँखें खोल ।
नूह का बेटा बुजरग स्याम, जाको दोनों जहानमें रोसन नाम ॥३१

तीसरे सिपारे में यह हकीकत लिखी है जाहिरी इलम पढ़ने वाले आत्म दृष्टि से पहचान नहीं करते हैं। नूह अर्थात् वसुदेव के बेटे श्याम का दोनों जहानों में नाम बड़ा है। हिन्दू श्री कृष्ण कह कर पूजते हैं और मुसलमानों में मुहम्मद के नाम से सम्मानित है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्याम ल्याए चीजें दोए, चौंदे तबकों न पाइए सोए ।
एक देवे अल्ला की गवाही, दूजे करे बयान हुकम चलाई ॥३२

श्याम जो मुहम्मद हैं वह अर्श से दो चीजें लाए। चौदह लोक में वे नहीं मिलतीं। एक चीज तो अल्लाह की गवाही है। (केवल उन्होंने ही कहा कि मैंने खुदा को देखा और उनसे बातें कीं)। और दूसरे कुरआन को जाहिर किया और खुदा का हुक्म चलाया।

पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन ।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए ॥३३

यार असहावों ने मुहम्मद साहिब से दो एक बातें पूछीं कि हे रसूल कियामत कब आएगी ? रसूल ने कहा कियामत का दिन खुदा जानता है। वे ही आकर कियामत करेंगे। छत्रसाल जी कहते हैं साहिब ने आकर अपने वादे के अनुसार कियामत का दिन जाहिर किया और सब को बहिश्त दी। यह दोनों बातें— कियामत का जाहिर करना, सबको अखण्ड बहिश्त देना दोनों काम खुदा ही कर सकता है। इस हकी स्वरूप को सब खुदा मान उसकी पूजा करेंगे।

तोफतल्कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिसबीचआठमें बाब ।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजखकी जली ॥३४

तोफतलकल्लाम नाम की किताब के आठवें प्रकरण में लिखा है कि आखिर के समय में सब पैगम्बरों की उम्मतें मिलेंगी अर्थात् सभी आचार्यों के शिष्य एकत्र होगे। सब के दिलों पर दोजख की आग जलेगी।

जलती सब पैगंबरोंपें गई, पर ठंढक दारू काहूं थें ना भई ।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर ॥३५

सब दुनियाँ उस आग से जलती हुई अपने अपने गुरुओं के पास जाएगी परन्तु ठंडक करने वाली दवा किसी के पास नहीं मिलेगी। सभी पैगम्बर हाथ झटक कर कुछ लज्जा और कुछ क्रोध से इस प्रकार कहेंगे कि हम सब लज्जित है—सत्य, ब्रह्म ज्ञान हमारे पास नहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब दुनियाँ को एही दिआ जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब ।
सब दुनियाँ जलती महंमदपें आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई ॥३६

दुनियाँ के सब लोगों को पेगम्बरों ने यही जवाब दिया कि सबको दोजख से छुड़ाने का पुण्य आखिरी मुहम्मद लेंगे। जिसकी सिफारिश वे करेंगे उसे बहिश्त मिलेगी। छत्रसाल जी कहते हैं जलती हुई दुनियाँ आखिरी महमद श्री प्राणनाथ जी के पास आई। खुदा के इस रसूल ने तारत्तम रूपी जल सींच कर दोजख अर्थात् पश्चाताप (पाप करते जाना कन्फेशन करते जाना) की आग से दुनियाँ को छुड़ाया।

सबको सुख महंमदें दिए, भिस्तमें नूर नजर तले लिए ।
कहे छत्ता अपनाएत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर ॥३७

सब को इल्म के द्वारा आखिरी मुहम्मद ने सुख दिया। बहिश्त में नूर जो अक्षर ब्रह्म हैं उनकी नजर में लिया। महाराजा छत्रसाल अपना जान कर कहते हैं कि ऐसा समय न छोड़ो, धनी को पहचान लो।

हुई फजर मिट गई रात, भूले बड़ो करसी पछताप ॥३८

अज्ञान रात मिट गई और सुज्ञान का प्रभात हो गया। जो इस समय भूलेगा बहुत पछताएगा।

प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २२६ ॥

लिख्या सिपारे अखारे सात—दसमी सूरत,
रोसन कुरान लिखी हकीकत ।
जो मोमनों का लिख्या मजकूर, सोए कहूं सब देखो जहूर ॥ १

कुरआन के तीसवें, आखिरी सिपारे की सत्ररहवीं सूरत में हकीकत—सत्य बात स्पष्ट लिखी है। उस सूरत में मोमिनों की चर्चा है उसे मैं कहता हूँ ध्यान दे कर सुनो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाई खलासी मोमन, हुआ मकसूद सबन ।
ऐसे होवें जो कोई, साँची बंदगीमें सोई ॥ २

इमाम मेहदी आए तो मोमिनों ने शैतान के युद्ध से छुटकारा पाया । सब मोमिनों की इच्छा पूरी हुई । जो कोई भी इस सूरत में लिखे अनुसार चलता है सच्ची बंदगी उसी की है ।

रखो खुदाए का डर, बंदे सेजदे पर नजर ।
किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर ॥ ३

पैगम्बर ने हदीस में कहा है कि हर समय खुदा से डरते रहो । हे बंदे हमेशा आत्म दृष्टि से सिजदे में नजर रखो । जिसने इस प्रकाश को कबूल किया अर्थात् उनके कहे अनुसार किया वही खुदा के निकट परमधाम में रहने वाले हैं ।

पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत ।
ऊपर से आएत आई, तब नजर आसमान से फिराई ॥ ४

पैगम्बर हजरत ने कहा कि इस तरह से कहे अनुसार निमाज अदा करे अर्थात् बंदगी उपासना करे । उसी समय आयत आई कि 'हे रसूल । आसमान की ओर नजर करना छोड़ आत्म दृष्टि से सिजदा करो ।' तब आसमान की ओर देखना छोड़ रूहानी सिजदा करने लगे ।

किया सेजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन ।
यों कह्या बोच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब ॥ ५

जो परमधाम सबसे बड़ा (अर्श अजीम) कहा उसी को सिजदा किया । लवाब नाम की किताब में कहा गया है जो आखिरी स्वरूप को पहचान कर सिजदा करेगा उसको हमेशा मूल—परमधाम का नफा मिलेगा ।

जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर ।
ए सेजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए ॥ ६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो साहिब का अखंड घर परमधाम है वहाँ धनी के चरणों में अपनी आत्म दृष्टि रखो। यह सिजदा तभी सम्भव है यदि अपने घर परमधाम की खूबियाँ तुम्हारी नजर में आ जाएं।

जब ए हुई खुसाली, तब भूले सेजदे खाली।
निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाएँ बाएँ नजर॥ ७

जब परमधाम की खुशहाली-खुशियाँ-तुम्हारी आत्म दृष्टि में आगई तो खाली सिजदाओं को अर्थात् मिट्टी पानी पत्थर और देवी देवताओं को (जिनसे कुछ प्राप्त होने का नहीं) नमन करना भूल गए। बंदगी के समय उसी का ध्यान धरो तो स्वयं ही इधर-उधर दृष्टि नहीं जाएगी। (मन का भटकना छूट जाएगा)।

हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम।
हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल॥ ८

तब समझो कि परमात्मा की तुम पर कृपा हो गई। परमधाम में खिलवत का भेद पा लिया। जब इस प्रकार की उपासना निमाज खुदा को कबूल हुई तब साहिब की ओर से खुशी मिली।

सिरसे छूट गया करज, हुए मोमन बेगरज।
छूटा मूल जो हुकम, हुआ सेजदा हजूर कदम॥ ९

शराअ और कर्मकांड का बोझ सिर से उतर गया और मोमिन दुनियाँ की तरफ से बेगर्ज हुए। पहले जो हुक्म हुआ था कि 'तुम मुझे भूल मिट्टी पानी की पूजा करोगे' वह भी भूल गया अर्थात् फिर गया। आत्म दृष्टि खुली और मूल स्वरूप हकके कदमों में सिज्दा हुआ।

इनकी करता हों तफसीर, जुदे कर देऊँ खीर और नीर।
पेहले था बहरूल्हैवान, तब तो तिनमें था फुरमान॥१०

इस बात को और खोल कर कहता हूँ। सत्य और झूठ अलग-अलग किए देता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हूँ। जब मुहम्मद अरब में आए तो वहाँ बहरूल—हैवान अर्थात् पशुओं के स्वभाव वाले मनुष्य थे। तब कुरआन की शराअ (उन लोंगों को सही मनुष्य बनाने के लिने) उनमें उतरी।

अब दरिया हुआ हक, इनमें न रहे किसी की सक।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर ॥११

अब पन्ना में मोमिनों के लिए अठारह हजार वाणी रूपी सत्य ज्ञान समुद्र के समान उमड़ पड़ा है। वेशक कर देने वाला इल्म आ जाने से किसी की शंका बाकी नहीं रही। परमात्मा के अर्श अजीम का वर्णन मोमिनों से अन्दर है। नूर तेज रोशनी प्रकाश की खुशहाली आप स्वामी जी जाहिर कर रहे हैं।

सुरत दाएँ बाएँ भान, सिर आगूँ धरियाँ आन।
खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर ॥१२

दाहिनी ओर हिन्दू और बाईं ओर मुसलमान उनका कर्म कांड छुड़ा कर, इधर-उधर से ध्यान हटा कर एक सच्चे धनी के चरणों पर रखा। मोमिन ईमान को पकड़ कर, वचनों को दोनों हाथ से पकड़ कर फुरमान के अनुसार चले। वे ही धनी के नजदीक बैठ कर बातें कर सकते हैं।

हुआ साहेबसों परस, दिलसे छूटी हवा हिरस।
भेद पाया सिरर हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक ॥१३

जब साहिब से स्पर्श हुआ अर्थात् स्वामी जी का मिलाप हुआ तब दिल से दुनियाँ की चाह रूप हिरस हवा छूट गई। खुदा के दिल का मर्म पाया और माशूक के इश्क रूपी दरिया में गर्क हो गया।

सोए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान।
एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई ॥१४

छत्रसाल जी कहते हैं खुदा की तरफ से रोशन करने वाले बड़े निशान प्रकट हुए। स्वयं हक की नूर शोभा की खूबी में गलतान—मग्न हुए। जिस स्वरूप से बातिन भेद खुले हैं उसी स्वरूप ने हमको निश्चय करके यह सब फर्माया है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिर ताज ।
मिले वाहीके तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब ॥१५

मोमिनो को पहली बंदगी यही है कि सबके सिरताज श्री प्राणनाथ जी (परमात्मा) की सेवा बंदगी में समय बीते । जो हमेशा खुदा की ही दोस्ती चाहते हैं उन्ही के चाहने वाले हैं—उनको ही हक की पहचान होती है ।

जबतें एह आसा मेटी, तब तो तूँ साहेबसों भेटी ।
जो लों कछू देखे आपा, तो लों साहेबसों नहीं मिलाप ॥१६

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि हे मेरी रूह ! जब से तूने दुनियाँ की चाह छोड़ दी तब तू जान कि तेरा मिलाप स्वामी से हो गया । जब तक थोड़ा भी अभिमान—अपना आप देखती है तब तक साहिब से मिलन नहीं होता ।

जो लों कछूए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे ।
तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा ॥१७

जब तक अपने आप को कुछ समझती है तबतक अखंड सुख का स्वाद कभी नहीं मिलता । माला, गुदड़ी, करुआ सब कर्मकांड में फंसा देने वाले हैं मुसलमानों इन्हें छोड़ दो । और हे हिन्दू लोगा जनेऊ—हिरस हवा अर्थात् संसार का लोभ मोह सब छोड़ दो ।

दोऊ जहानको करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक ।
या हँस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए ॥१८

दोनो जहान—हिन्दू मुसलमान अपना खुदा से अलग ले जाने वाले दोनों मार्ग छोड़ दो । एक सच्चे धाम धनी की शरण पकड़ लो । हंस कर छोड़ो या रोकर । (उन्हें पाना है तो) किसी भी तरह का अंदेशा न करो—निःसंकोच हो कर सब कुछ छोड़ दो ।

जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए ।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्सेसों कहे सोई ॥१९

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतना काम करलो तो वतन परमधाम की सुगन्धि मिल गई समझो। और जो बद फैल दुष्कर्म करने वाले हैं उन्हें ही गुस्से में आकर काफिर कहा गया है।

कहत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आएत करी।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहें बेसक ॥२०

केसरी नाम के इमाम ने अपनी किताब में कहा है कि खुदा ने इन मोमिनों के लिए नई आयतें—चौपाइयां भेजी हैं। खास बुजुर्ग मोमिन वही हैं। आप साहिब ने नई आयत श्री मुख वाणी में इन्हें ही बेशक कहा है।

और जो कोई साहेबसों फिरे, काम दुनीका दिलमें धरे।
याही सें पावे आराम, सोई रहे छल बाजी काम ॥२१

जो कोई खुदा के हुकुम से फिरे अर्थात् मुन्किर हो जाए। दुनियाँ के काम में मन लगा दे। इसी संसार के स्वाद में आराम पाते हैं वे लोग माया जाल और छल के अन्दर पड़े रहते हैं।

साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक ॥२२

मोमिनों का चलना और रहना साफ अर्थात् पवित्र है। उनमें काम क्रोध आदि का कुछ भी मैल नहीं रहता। ऐसी जो धाम धनी की मिल्क (सम्पत्ति) अंगनाएं हैं उनको स्वामी जी के चरणों पर तन मन धन कुर्बान करना है। जगात (दान) में दे देना है।

देना है ठौर बुजरक, आप सदका देना बलक।
छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार ॥२३

खुदा को मोमिनों को बुजुर्ग जगह परमधाम में का ठिकाना देना है। मोमिनों को बल्क—जरुर-अपना आपा दे डालना है। छोटा बड़ा नर नारि जो भी हो उसे यह अवश्य करना ही है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसी गिरों जो दरगाहो, ताए रखना आप दृढ़ाई ।
जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नहीं तिन काम ॥२४

ऐसी जो परमधाम की रहने वाली मोमिन हैं उन्हें अपने गुण अंग इन्द्रियों पर संयम रखना है । दुनियां में जिनती बातें हराम (वर्जित) हैं उनके नजदीक जाना मोमिनों का काम नहीं ।

या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना ।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेबके बिकानीं ॥२५

क्या अपना क्या बिराना (मेरा तेरा) सब झूठ है । दिल से मान कर सब से (मेरा तेरा से) परहेज किया । यही बात जान कर (ब्रह्म सृष्टि) साहिब के हाथ बिक गई ।

दाहिनी तरफ जो हैं हक, लड़कियां तिनकी मिलक ।
निगाह रखें जानो सुपना, इंद्रियों से आप अपना ॥२६

श्यामा के दाईं ओर जो हक परमात्मा है यह लड़कियां (ब्रह्म सृष्टि) उनकी सम्पत्ति अंगनाएं हैं । मोमिन खेल में शरीर को झूठा समझते हैं । अपने गुण अंग इन्द्रियों को कैद में रखते हैं ।

इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर ।
इन भांतकी जो है औरत, तिन पाया रोज सरत ॥२७

इन्होंने इस तरह से अपने दिल को दृढ़ कर लिया है अर्थात् माया से हटा लिया है । उनसे कोई गुनाह नहीं होता । जो इस प्रकार के ब्रह्म सृष्टि—मोमिन हैं उन्होंने ही कियामत और खुदा के आने की सरत को पहचाना ।

और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बे काम ।
और जेता कोई बद—काम, सो नफसानी हिरस हराम ॥२८

मोमिन गुण अंग इन्द्रियों के आराम नहीं चाहते और बेकाम-बेकार—परमातमा की वंदगी के बिना एक क्षण भी रहना नहीं चाहते । जितने भी दुष्कर्म हैं उन्हें झूठी हिर्स से उत्पन्न दुःखदाई समझ कर छोड़ देते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो ए काम ढूंढ़े बद फैल, काफर चाहें उलटी गैल ।
ऐसे जो हैं सितमगार, पाया न समया हुए खुआर ॥२९

बुरे काम की तलाश में रहने वाले काफिर उल्टी राह चलते हैं । वे नर्क की राह चल रहे हैं । ऐसे अत्याचारी लोग दूसरों से भी नेकी की राह छुड़ा कर उल्टी राह दिखाते हैं । वे धर्म का मार्ग नहीं पाते और दोजख में पड़ जाते हैं ।

और जो कोई गिरो पाक आकीन,
किया अमानत बीच अमीन ।
इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत ॥३०

पाक जमात वाले ईमानदार मोमिनों को खुदा ने अपनी उम्मत ब्रह्म सृष्टि का अमीन बना कर भेजा । श्री देवचन्द्र जी को खुदा ने मार्ग बताने वाला सिरदार बना कर भेजा । यहाँ खुदाई अमानत (धरोहर) ब्रह्म सृष्टि पाक मोमिनों के लिए ही सांकेतिक शब्द प्रयुक्त हुआ ।

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रब्बानी बेसक ।
याही बीच निमाज असल, रखें आप कर गुसल ॥३१

यह खुदा की अमानत खेल में खुदा से ही उत्पन्न हुए । बेशक इन्हीं मोमिनों के अन्दर खुदाई हुक्म और कुर्बानी रूपी रोजा हैं । इन्हीं मोमिनों की बंदगी असली है । ये मोमिन अपने आप को पाक साफ करके रखते हैं । वे इल्म रूपी जल से स्नान किए हैं ।

इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक ।
निगाह रखें खड़ा रहें आप, सूरत आएत करें मिलाप ॥३२

इनके साथ और दिल में हक विराजमान हैं यह वचन जमाने भर के धर्मग्रंथों और भविष्य वाणियों ने लिखे हैं । गुण अंग इन्द्रियों पर निगाह रख कर (द्रष्टा बन कर) धर्म पर खड़ा रहता है । कुरआन हदीसों धर्म शास्त्रों के वचनों को इकट्ठा करके हृदय में संजोय रहते हैं । तत्व दर्शी बन जाते है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूँ ना फिरे ।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत ॥३३

जो कहे हुए को दृष्टि में रख कर बंदगी करते हैं । मोह माया के धक्के लगने पर भी वचनों से पीछे हटते नहीं हैं । बंदगी की मर्यादाओं को अदब से पूरा करते है वही फर्मान को सही रूप में बजा लाते हैं ।

मूलथें बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई आखर ।
ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान ॥३४

जो दिखावे के लिए भी मुख से पूजा बंदगी करने वाले नेक जीव हैं उन्होंने भी आखिरी स्वरूप की बड़ाई कही है । स्वामी जी की वे भी बड़ाई कर रहे हैं। मुत्तकी परहेजगार संयमी लोग जो ईश्वरीय सृष्टि के हैं वे दिल के साथ तन मन से बंदगी करते हैं । इनके ईमान के लिए मोमिनों के बराबर ही संकेत दिए हैं ।

बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक ।
गिरो मोमन जमे करें, छे सिफतें वारसी धरें ॥३५

पाक मोमिनों और दूसरी ईश्वरीय सृष्टि इन दोनों की वंदगी महान है । मोमिन खुदाई खजाना इकट्ठा करते हैं । धामधनी के छः गुणों, हुकुम, जोश, मेहर, इल्म, इश्क ईमान के वारिस वे ही हैं ।

और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम ।
जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास अल्ला नजीक ॥३६

और भी जितने परमात्मा के वारिस (पाने वाले) हैं वे कभी हराम (निषिद्ध वस्तु) को छूते नहीं हैं । जिन्होंने निश्चित रूप से धामधनी को पहचान लिया है उन्होंने उसके निकट उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकार पा लिया ।

जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई ।
लै औरों भिस्त मिरास, जो रहे मोमन बीच विलास ॥३७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिन्होंने बहिश्त—अखंड परमधाम की बिलंदी-ऊंचाई की छू लिया इस गिरोह को स्वामी जी ने बड़े मर्तबे-पद पर पहुँचा दिया। दूसरी जमायत ने भी बहिश्त की विरासत पाई। वे रास लीला के समय ब्रह्म सृष्टि के संग रहे। एक एक सखी में दो दो कुमारिकाओं ने प्रवेश पाकर रास का आनन्द लिया।

बिना मोमन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर।
और काफर दोजखमें जल, देखें भिस्ती मरें जल ॥३८

मोमिनों के बिना जो सृष्टि—आमखलक है उनकी जगह बहिश्त और दोजख के बीच शून्य निराकार में है। काफिर लोग दोजख में पड़ेंगे और बहिश्तों में पहुँचे लोगों के सुख को देख कर वे जल मरेंगे।

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमन होवें सुख।
यों कह्या बीच मिसलजादल, पावे ईमान बीच मिसल ॥३९

बहिश्त में रहने वाले मोमिन इन दोजखियों के दुःख को देख कर दुःखी होंगे। मोमिन अपनी कृपा दृष्टि से दोजखियों को देखेंगे तो उनको सुख मिलेगा। जादिल मिस्ल नामक किताब में इस प्रकार लिखा है कि असल ईमान इन एक मोमिनों की जात में है।

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ॥४०

छत्रसाल जी कहते हैं जो इन स्वरूप को सत्य जान कर इनके बताए मार्ग पर नहीं चलते वे काफिर दोजख की आग में जलेंगे। बहिश्त वालों के सुख जैसे-जैसे दोजखी दूर से देखेंगे। वैसे-वैसे उनकी आग और अधिक जलेगी।

ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस।
इन आदमकी पैदास, किया बीच खलकके खास ॥४१

और जो बहिश्त परमधाम के वारिस आखिरी स्वरूप हैं वे हमेशा परमधाम के रहने वाले हैं। यह भी आदम, (श्री देवचन्द्र जी), की पैदाइश, सन्तान के हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन आखिरी स्वरूप श्री प्राणनाथ जी को खुदा ने दुनिया के बीच सिरदार बनाया।

खैंच किया सबोंके आगे, मोमन इनपे पेसवा लागे।
बीज मिट्टी दुनियां की न्यांत, पर ए पाक साफ कही जात ॥४२

दुनिया में जितने भी धर्म स्वर्ग बैकुण्ठ आदि दिलाने वाले हैं उनमें से खींच कर इनको सबसे आगे परमधाम में ले गए। मोमिन इनके पीछे साथ-साथ चलते हैं। इनका बीज मिट्टी आदि का शरीर दुनिया के लोगों की तरह ही दिखाई देता है परन्तु यह स्वरूप पाक और स्वच्छ कहे जाते हैं।

एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल।
आय इन तरफ बहार, जिने पकड़्या पाक करार ॥४३

श्री देवचन्द्र जी के नसली नजरी दो बेटे कहे हैं उनमें एक नसली बिहारी जी को खुदा ने नकली किया है। दूसरे हकी स्वरूप को आप श्री देवचन्द्र जी ने असल पाक कहा है। स्वामी प्राणनाथ जी की तरफ से उन मोमिनों के लिए अठारह हजार वाणी के रूप में परमधाम की बहार अर्थात् खबर आई है जिन्होंने खुदा की तरफ का पाक रास्ता पकड़ा है।

नुस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तवार।
तीन सरूप की एह बयान, ए सो कहे एक के दरम्यान ॥४४

तारत्तम रूपी नुस्खा उस स्वरूप को मेहरबानी करके पहुँचाने वाले श्री देवचन्द्र जी दूसरे स्वरूप श्री प्राणनाथ जी में दृढ़ता से विराजमान हुए हैं और वहां से अठारह हजार वाणी प्रकट हुई। बसरी सूरत महम्मद, मल्की सूरत श्री देवचन्द्र जी और हकी सूरत स्वयं हक यह तीनों एक श्री इन्द्रावति के अन्दर विराजमान हैं ऐसा कहा है।

सिफत तीनोंकी जुदी कही, सो सब बुजरगी एक पर दई।
ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी ॥४५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीनों स्वरूपों की शोभा प्रशंसा अलग-अलग है। वह सब बुजुर्गी परमात्मा ने एक हकी स्वरूप पर दे दी। जिस तरह बशरी, मल्की हकी तीनों दर्जा कहा है उसी तरह दूसरा नाम रसूल, रूह अल्लाह और इमाम मेंहदी का है।

न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजोंसों इसारत करी।
एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन ॥४६

जाहिरी लोग ऊपर के अर्थों से बातिन भेद नहीं पाते हैं और यह बातें गूढ़ार्थों और संकेतों में तीनों स्वरूपों का भेद (इस प्रकार) कहा है—एक आदमी के अन्दर तीन अवस्थाएं होती हैं लड़कपन, जवानी और बुढ़ापा। तीनों स्वरूपों की पैदाइश में (शक्तियों की) वढ़ोतरी कही है। मुहम्मद लड़कपन, रूह अल्लाह जवानी और स्वामी जी बुढ़ापा एक ही (हुक्म के) स्वरूप की तीन अवस्थाएं हैं।

तीन सरूप चढ़ती उतपनी, बढ़ती बढ़ती कही रोसनी।
खोली राह आखर बागकी, तंगसेंती पोहोंचे बुजरकी ॥४७

हदीसों में तीनों स्वरूपों की रोशनी अधिक-अधिक हुई, कही है—मोमिनों के बीच आकर परमधाम के बाग की राह खोल दो। अनूप शहर में स्वामी जी को कसनी में से गुजरना पड़ा उसके बाद खुदा के पास से हक स्वरूप की बुजुर्गी मिली। उन्होंने परोक्ष का खजाना पाया।

बिध बिधकी न्यामत पोहोंचाई, और कै तरबियत फुरमाई।
लड़केसेंती पोहोंचे ज्वान, रख्या कदम हक बयान ॥४८

परमात्मा ने तरह-तरह से इल्म रूपी नेमतें भेजीं। और कई तरह से वेद-शास्त्रों के ज्ञान से ताजगी भेजी। जब लड़कपन से जवान हुए अर्थात् रूह अल्लाह के भेष में आए तो सच्चा बयान खुदा की पहचान और धर्म की रोशनी जाहिर की।

पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक।
लाएक खुदाएके करी सिफत, पैदा किया अरस दोस्त ॥४९

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब ईसा मेहदी से मिले तब तीसरी अवस्था बुढ़ापन की हुई। तब खुदा की तरफ से बुजुर्गी अर्थात् खुदाई खिताब आया। झूठे जीवों को—क्षण भंगुर संसार के जीवों को ज्ञान देकर अखंड करेंगे इसमें जरा भी शक नहीं। खुदा के अनुरूप ही इस हकी सूरत की तारीफ है। हकी सूरत को खुदा ने अपना अर्श दोस्त पैदा किया।

कुरसी फिरस्ते लोहकलमी, काएम सितारा आसमान जिमी।
पीछे आदमके पैदा भया, जात पाकसे दोस्त कह्या।५०

खुदा ने विष्णु फरिश्ते की कुर्सी (बैठने की जगह-धाम) बैकुन्ठ बनाया। अर्श में लोह कलम—आदि में कहे शब्दों को मूर्त्त रूप देने के लिए जमीन आसमान बनाए। जमीन में आदमी आदि जीव पैदा किए और आकाश में चांद सितारे स्थापित किए। आदम जो श्री देवचन्द्र जी हैं उनके पीछे जो स्वरूप पैदा वह हुआ पाक जात होने से खुदा का दोस्त कहा गया।

बुजरगी दलील फुरमाई, आदम पर बखसीस बड़ाई।
मेहेर करी ऊपर सूरत, तिनकी करी न जाए सिफत ॥५१

खुदा ताला के हुक्म ने कुरआन, और वेद शास्त्रों में श्यामा जी की बुजुर्गी अनादि काल से फर्माई है। आदम जो श्री देवचन्द्र जी हैं उनको खुदा ने महानता प्रदान की है। खुदा की जो मेहर उन पर हुई उसकी महिमा कही नहीं जा सकती। उनको उन्होंने तीन बार दर्शन दिए एक बार राह में, दूसरी बार बृज में तीसरी बार श्याम जी के मन्दिर में।

जो कह्या इनसेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर।
इनका रंग है तबकल, सिर बिलंदी ताज सकल ॥५२

कुरआन में कहा है कि ईसा रूहअल्लाह के नूर की रोशनी स्वामी प्राणनाथ जी हैं। उन्होंने सब बातें प्रकट कीं। मारिफत की पहचान रूपी सूर्य का प्रकाश करने वाले स्वामी प्राणनाथ जी सच्चे शूरवीर हैं। इसके प्रेम का रंग पक्का है। दुनियां में जितने धर्म हैं उनके बिलंद अर्थात् ऊँचे ताज हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरगीका गलेमें तोक ।
ए बखसीस औरसे रोसन, उन सुने गैबके सुकन ॥५३

बारह हजार मोमिन और चौबीस हजार ईश्वरीय सृष्टि यह सब लोग इनके चारों ओर आकर मिले हैं। इन हकी स्वरूप को जो बड़प्पन मिला इसे इन्होंने अपने गले का बन्धन माना। ब्रह्म ज्ञान की बखशिश उन्हें श्री देवचन्द्र जी से मिली और उन्होंने उसे श्याम जी के मन्दिर में स्वयं श्री कृष्ण से पाया।

एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई ।
ए तीनों सिफत भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल ॥५४

इस तरह इस स्वरूप की पैदाइश की बात कही गई है। यह सब सिफ्त आखिरी मुहम्मद की कही है। रसूल के तीनों स्वरूपों के इल्म की सिफ्त एक हकी सूरत इमाम साहिब में आई है। इसीलिए इनको संजीवन मोती की उपमा देकर अमूल्य कहा गया है।

इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूँ कानों सुनाए ।
सोई जले जो मोल करें, और सुनने वाला भी जल मरे ॥५५

ऐसे मोती जो हकी स्वरूप हैं उनका मूल्य इस जुबान से कहा नहीं जा सकता। न ही आज तक इनके जैसा बुजुर्ग सुनने में ही आया है। (इनकी सिफ्त करने वाला जल जाता है अर्थात् उसका अहंकार भी काम-क्रोध आदि जल जाते हैं और सुनने वाले का अहंकार भी जल जाता है)। दुनियां के लोग अखण्ड स्वरूप का प्रकाश सहन नहीं कर सकते न ही सुन सकते हैं इसी को जल मरना कहा है।

बाजे कहे साहेब इसक, ए सबसे जुदा आदम हक ।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान ॥५६

कई सन्त महात्माओं आचार्यों के ग्रन्थों में इस स्वरूप को प्रेम का स्वामी बताया है। इन्हीं के लिए स्वर्ग बैकुण्ठ आदि से अलग परमात्मा का स्वरूप कह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर चर्चा की गई है। जैसे खुदा की जाति पवित्र है वैसी ही जाति इनकी कही गई है।

हद्द सबोंकी करी जुबान, क्यों कर कहे ए सिफत जहान।
अब क्यों कहूँ मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात ॥५७

अठारह हजार वाणी में सब की सीमा बता दी गई। ब्रह्म सृष्टि परमधाम में, ईश्वरीय सृष्टि अक्षर धाम और जीव सृष्टि के लिए आठ बहिश्तों का ठिकाना बता दिया गया। छत्रसाल जी कहते हैं इन स्वरूप की सिफ्त चौदह लोक में कोई नहीं कर सकता तो मैं अपनी जवान से कैसे कहूँ। इनको तो हदीसों ने खुदा की जात कहा है।

सो अफताली महंमदका भया, जो आदम ऐसा बुजरग कह्या।
ए पैदा हुआ कारन महंमद, एही रसूलकी कही हद्द ॥५८

सो ऐसा बुजुर्ग आदम आखरी मुहम्मद का पेशवा हुआ अर्थात् नेता (आगेवान) बना। वह उनकी बुजुर्गी को जाहिर करने वाला बना। जो आदम श्री देवचन्द्र जी ऐसे बुजुर्ग कहे गए हैं मुहम्मद साहब के कारण—कुरान हदीसों के अर्थ खोल कर मोमिनों को बताने के लिए इमाम मेहदी नाम से पैदा हुए। रसूल अल्लाह मुहम्मद साहब की हद, सीमा यही स्वामी जी है।

जो सिफत आदमकी कही न जाए,
तो महंमदकी क्यों कहूँ जुबांए।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इनमें देख ॥५९

छत्रसाल जी कहते हैं इस जवान से आदम श्री देवचन्द्र जी की सिफ्त कही नहीं जा सकती तो आखरी महंमद श्री प्राणनाथ की सिफ्त किस तरह जवान से कहूँ। इन दोनों स्वरूपों की सिफ्त एक जैसी है। तीसरा खुदा की ओर से प्रेम की मदिरा पिलाने वाला पैगम्बर का स्वरूप भी इन्हीं के अन्दर है।

ईसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम।
और जो कहे मुरदों की भाँति, साकी प्याले होसी कलपांत ॥६०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईसा, आदम और मुहम्मद ए तीनों सूरतें मिल कर एक इमाम मेहदी में आईं। शेष मुर्दों की तरह जो तमाम दुनियां है वह साकी के इश्क के प्याले से मिट जाएगी।

सो सारे फना आखर, जेती वस्त कही जाहेर।
जिन माएने लिए ऊपर, सोए वजूद कों रहे पकर ॥६१

जितनी भी प्रकट, दिखाई देने वाली वस्तु है वह सब आखिर में फना हो जाएगी। उन्होंने बातिन अर्थ छोड़ कर जाहिरी अर्थ लिए। वे सच्ची अविनाशी आत्मा को छोड़ कर वजूद को पकड़े रह गए।

जाहेर जिनकी भई नजर, क्यामत बदला कह्या तिन पर।
करे जिमीन सात आसमान, वास्ते महंमद उमत दरम्यान ॥६२

जिनकी नजर जाहिरी है वे बातिन को नहीं पहचानते। उन्हें कियामत के समय फल मिलेगा अर्थात् दोजक में जलेंगे। खुदा ने अपनी उम्मत ब्रह्म सृष्टि को उतारने के लिए सात आसमान पैदा किए।

सात हजार राह फिरस्ते, करी इसारत दुनी क्यामतें।
अब खुदाएनें यों कर कह्या, मैं आसमान जिमीसे जुदा रह्या ॥६३

रसूल अल्लाह मुहम्मद ने कुरआन हदीसों में दुनियां में कियामत होने की बात सात हजार साल की राह फरिश्ते अर्थात् देवताओं के लिए कही है। यह संकेत दुनियां की उमर की ओर है। खुदा ने कुरआन में यह भी कहा है कि मैं आसमान में रहने वाले देवताओं और जमीन के रहने वाले मानवों से अलग हूँ।

जेती कोई पैदाईस कुंन, मोको तिन थें जानो भिन।
मैं ना इनमें ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग ॥६४

जो 'कुन', (माया) की सृष्टि आम खलक है, मुझ को उनसे न्यारा समझो। मैं न इनके बीच न इनके संग हूँ। इन बेखबर लोगों के गुण अंग इन्द्रिय माया के स्वाद की ओर भागते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरोंमें नाहीं आप ।
मैं इनसों नहीं गाफिल, ए दुख सुखमें रहे मिल ॥६५

मेरा और इनका कभी मिलाप नहीं है। ऐसे बेखबर और गफलती लोगों में से मैं नहीं हूँ। मैं इनके समान लापरवाह नहीं हूँ। यह लोग माया के दुःख-सुख में मिले हुए हैं। दुःखों को सुख माने बैठे हैं।

सिरक इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं ।
ऊपर के उतरचा पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी ॥६६

इनकी शिर्क अर्थात् घमण्ड को मैं जानता हूँ। यह लोग मिट्टी पानी पत्थर की पूजा करते हैं। और अपने बराबर किसी को नहीं समझते। इन बेखबर लोगों में जरा भी पवित्रता नहीं है कुरआन में कहा है कि बहिश्त से पांच नहरें उतरीं पांच स्वरूपों में होकर परमधाम की बातें अवतरित हुई। उनसे खुदा के बन्दों ने ताजगी पाई। बन्दों की नेकी जानी गई।

मरतबा इनों देऊँ उस्तबार, इन पानी से होए करार ।
इब्बन अब्बास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान ॥६७

इन मोमिनों को निश्चय ही मजबूत मर्तबा (पद) देना है। इस इसलाम (सत्य धर्म) रूपी जल से सबको चैन मिलेगा। अब्बास के बेटे इब्न ने अपनी किताब में यह वर्णन किया है कि यह इल्म रूपी जल इन्हीं मोमिनों में आया।

पाँच नेहेरें जबराईल पर, आईयां भिस्त से उतर ।
पांचों कहीं जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न जाने और ॥६८

जिबरील के पंखों पर होकर पांच नहरें आईं। जिबरील धनी का जोश है उसी के सहारे खुदाई शक्तियां इन्सान में अवतरित होतीं हैं। पांच स्वरूपों में धनी का जोश आया इसीलिए 'पर' कहा गया। कुरआन में कहा कि पांच नहरें अलग-अलग स्थान पर आईं। कुरआन का बातिन भेद इमाम के बिना कोई नहीं जानता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच्चमें ।
हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर ॥६९

पांच स्वरूप ही पांच झरने हैं जो जगह-जगह उतरे । सच्चा झरना जो इन्द्रावती का दिल है सब उसमें आ मिले । हिन्द, बलख और मिसर आदि का नाम दिया है । पांच स्थान :—हिन्दुस्तान जहां स्वामी जी आए—बलख नवतन पुरी जहां श्री देवचन्द्र जी आए । मिसर ही बराबर मदीना है जहां मुहम्मद साहिब आए । इन्हीं तीनों स्वरूपों के मुख से जो कौल अर्थात् वचन रूपी जल से पत्थर के समान दिल वाले इन्सानों को भी आराम मिला ।

ए मेला हुआ आखर दिन, तब नफा मसल्हत होए सबन ।
दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई ॥७०

यह मेला कियामत के दिन हुआ । तब सब में सलाह मशविरा हुआ कि सब को नफा दिया जाय । मोमिनो के प्रताप से दुनिया को इनाम मिलना चाहिये । तीनों स्वरूपों ने सब को बहिश्त दी । दजला (ब्रज) फिरात (रास) दोनों नहरें अलग कही गई हैं । जाहिरी मायनों से अल -अलग दिखाई देती हैं परन्तु बातिन में पांचों शक्तियां श्री इन्द्रावती के दिल में इकट्ठी हुई हैं ।

चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें काएम पानी भरे ।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी ॥७१

चश्मा परमधाम है और मूल स्वरूप अक्षरातीत स्वामी ही पहाड़ हैं । वहां से पांच नहरें अर्थात् पांच स्वरूप अवतरित हुए । कायम चश्मा श्री इन्द्रावती का दिल है वहीं पांच स्वरूप इकट्ठे हुए । इन्द्रावती का दिल जमीन है और बादल श्री देवचन्द्र जी । उनसे तारत्तम ज्ञान रूपी जल बरसा जिससे सब दुनियाँ ने अमर पद पाया ।

उतरचा पानी ले जाए, सब कर सके जो कछू चाहे ।
इन बीरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप ॥७२

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमधाम से जो तारत्तम रूपी जल आया है वह सब को दोजख की राह छुड़ा कर परमधाम को ले जाता है। तारत्तम बाणी जो चाहे वह कर सकती है। इसे वीर्य (शक्तिशाली जल तारत्तम वाणी) में स्वयं धाम धनी विराजमान हैं। वह वीर्य इन्द्रावती का दिल है उसी के द्वारा धामधनी से मिलन हो सकता है। नहीं तो खुदा दुनियाँ से बहुत दूर है उनका संसार से मिलाप नहीं।

इन समे उतरचा आजूज, और संग इनके माजूज।
पीछे उतरचा जबराईल, लेवे सबको न करे ढील ॥७३

स्वामी जी के समय में याजूज (दिन) उतरा अर्थात् माजूज (रात) और याजूज की पहचान हुई। इनके बाद अपनी सरत (वायदे) पर असराफील आए। सो एक सूर में सब का अज्ञान उड़ा कर बहिश्त में भेज दिया। इसमें जरा भी ढील नहीं हुई।

एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम ॥७४

जाहिर में मक्के का काला पत्थर शरीयत है। बातिन में मक्का नवतनपुरी (जामनगर) और काला पत्थर बिहारी जी हैं जिनको वचनों की चोट कभी न लगी। कुरआन (श्री मुखवानी) यही हब्सा में उतरी। खुदा का घर चाकला मन्दिर है। इब्राहीम पैगम्बर श्री देवचन्द्र जी हैं इनकी चितवनी की जगह खीजड़ा मन्दिर है। मेहदी मुहम्मद स्वामी जी के दोस्तों के भजन का ठिकाना है। बातिन में श्री देवचन्द्र जी के बैठने का ठिकाना स्वामी जी का दिल है उसकी रोशनी से मोमिनों ने आराम पाया।

पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहवे किन।
एक बेर फना सब किए, फेर काएम उठाए के लिए ॥७५

बीते युग में जितने भी पीर पैगम्बर हो गए वे सब स्वामी जी में आ विराजे। पीछे कोई बाकी न रहा। इसराफील ने एक सूर फूंक कर (बिगुल

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बजा कर) सब का अहंकार उड़ा दिया। दूसरे सूर में सबको उठाकर उनका अवगुण दूर करके बहिश्त के बीच खड़ा किया।

ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियाँ भई जिंदगानी।
बागोंने ताजगियां पाई, सो भी पानी हादिएँ पिलाई ॥७६

यह पाँचों नहरें पांच स्वरूप और पानी श्री तारत्तम वाणी है। इसी वाणी से समस्त दुनियां अखंड हुई अर्थात् ताजगी पाई। बाग जो मोमिन हैं उन्हें वाणी के द्वारा परमधाम का सुख मिला। वह तारत्तम रूपी जल हकी स्वरूप ने मोमिनों को पिलाया।

सो भी कहे भिस्त के पाग, जिनसे खेती पायो सुहाग।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊँ खीर और नीर ॥७७

मोमिनों को परमधाम का बाग कहा है इनसे दुनियां की खेती को भी तरोताजिगी—बहिश्त—का सुख मिला। इनको और भी स्पष्ट कर दूं। सत्य और झूठ को अलग करके रख दूं।

उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर।
मलकूतीको खेतीं कही, इनकों बड़ाई उनथें भई ॥७८

लाहूती उम्मत ब्रह्म सृष्टि को अंगूर का बाग कहा गया, अक्षर धाम की ईश्वरीय सृष्टि को खजूर कहा बैकुण्ठ के जीवों को खेती कहा है। परमधाम की रूहों की बदौलत जीव सृष्टि को भी बड़ाई, बुजुर्गी और बहिश्त का अखण्ड सुख मिला।

दोऊ काएम भई उमत, उठे बीच हादी क्यामत।
तीसरी काएम भई दुनियां और, तिन सबों की हज्ज इन ठौर ॥७९

दोनों उम्मत—ब्रह्म और ईश्वरीय—अपने-अपने ठिकाने अखण्ड धामों में पहुँचे। हादी आखिरी मुहम्मद उनको संग लेकर कियामत के समय परमधाम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में उठे। तीसरी दुनिया जीव सृष्टि भी बहिश्त में कायम हो गई। इन सब की 'हज्ज' तीर्थ स्वामी जी के चरण हैं।

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासल आई।
एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर ॥८०

दुनियां के जीवों ने तारत्तम वाणी की फसल पाई। मोमिनों के प्रताप से दुनियां को बहिश्तों का सुख मिला। उन पर स्वामी जी के मुख से अखण्ड ज्ञान की वर्षा हुई। छत्रसाल का जहूर प्रकाश देखो कि दुनियाँ (माया) का सिर तोड़ कर परमधाम का रास्ता पकड़ा।

हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर ॥८१

राजपाट की मोह माया छोड़ कर स्वामी के चरणों में खड़ा हो गया। खुदा के सम्मुख इनकी बात सबने स्वीकार की।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३१० ॥

लिख्या सिपारे सूरतों, और आएतों देखो जाए।
क्यामत कलाम—अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए ॥ १

कुरआन के सिपारों, सूरतों और आयतों में लिखा है जा कर देख लो। कलाम अल्लाह—कुरआन में कियामत के विषय में जगह-जगह संकेत आए हैं।

अब लों तारीख आखर की, न पाई कुरानथें किन।
सो रूहअल्ला के इलमसे, जाहेर हुई सबन ॥ २

अब तक कुरआन में से किसी ने कियामत की तिथि को नहीं जाना। वह तिथि रूह अल्लाह—श्री देवचन्द्र जी—के इलम से प्रकट हो गई।

सबों सिपारों क्यामत, एही लिख्या है मजकूर।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर ॥ ३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुरआन के सभी सिपारों में कियामत का यही बयान लिखा है। परन्तु हादी (सत्गुरु) के भेद खोले बिना खुदा के वचनों का प्रकाश कैसे दिखाई दे ?

आगूँ नव सदीअ के, कह्या होसी रूहों मिलाप ।
बुजरग मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदाए आप ॥ ४

हदीसों में लिखा है कि जब हजरत रसूल के कूच के बाद नौ सौ नव्वे वर्ष बीत जाएंगे—अर्थात् नव सदी के बाद—तो रूह मोमिनों का मिलाप होगा। बहुत भारी मेला होगा। उस समय अर्श अजीम से खुद—खुदा आकर दर्शन देंगे।

बाकी दसमी सदीअ के, सवा नव साल रहे ।
गाजी मिसल मोमन की, रूहअल्ला उतरे कहे ॥ ५

दसवीं सदी जब पूरी होने में सवा नौ वर्ष शेष रहेंगे तब मरद (धर्म योद्धाओं) की जमात खेल में आई। और यह भी कहा है कि मोमिनों के संग में रूह अल्लाह भी उतरे।

रूहअल्ला रोसन ज्यादा किया, दूजा अपना नाम ।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम ॥ ६

रूह अल्लाह ने अपने दूसरे जामें का प्रकाश अधिक कहा है। उस स्वरूप पर एक बन्दगी करने का हजार गुणा फल मिलेगा। आखिरी इमाम बन्दगी कबूल कर उसका फल देंगे।

बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजल भई जित ।
हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरानमें तित ॥ ७

ग्यारहवीं शताब्दी के बीच सब रोशनी हुई अर्थात् श्री मुख वाणी अवतरित हुई। जैसी-जैसी मंजिल (स्थिति) हुई वैसी-वैसी आवश्यकता अनुसार वाणी उतरी। अखन्ड परमधाम कि नेमतें जैसे-जैसे मल्की सूरत श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी ने पाई वैसे-वैसे उन्हें वाणी में उतारते गए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए हुए तिन ।
मुदतें एक जुदा हुआ, साल सतानबे पोहोंचे इन ।। ८

श्री देवचन्द्र जी के एक स्वरूप से दो जने पैदा हुए एक श्री प्राणनाथ जी दूसरे बिहारी जी । कुछ समय उपरान्त एक अलग हो गए । श्री देवचन्द्र जी के जन्म से अनूप शहर तक सत्तानबे वर्ष हो गए ।

किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत ।
महीने आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत ।। ९

अनूप शहर में इलाही किताब सनंध की उतरी । गैब-परोक्ष से वह ज्ञान आया । आठ महीने तक दिल्ली में धर्म युद्ध (औरंगजेब के मुल्ला लोगों और मोमिनों में) हुआ । मदीना अर्थात् सूरत से जब दिल्ली आए तो इस बीच के काल का यह वृत्तान्त है ।

पाँच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई ।
ए साल निन्यानबे लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई ।।१०

मोमिनों की पहचान के लिए पांच किताबों में वाणी अवतरित हुई । रास, प्रकाश, षटऋतु कलश और सनंध खुदा के हुकुम से उतरीं । श्री देवचन्द्र जी के जन्म से निन्यानबे वर्ष बाद रामनगर की मंजिल तक बहुत से बातिन भेद जाहिर हुए ।

लकब इद्रीस जान्या गया, सौ सालकी मजल ।
जित तीस वरक खुदाए के, हुए थे नाजल ।।११

रामनगर से हकी स्वरूप पर इद्रीस का खिताब पाया । आदम—श्री देवचन्द्र जी के जन्म से सौ साल बाद यह खिताब मिला । तीस वर्क अर्थात् प्रकरण सनंध के खुदा के घर से अनूप शहर में उतरे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टोना किया महंमद पर, अग्यारे गाँठ लगाए ।
वह गांठें छूटे बिना, काहूं ना सकें जगाए ॥१२

कुरआन हदीस में लिखा है कि रसूल मुहम्मद पर एक यहूद लड़की ने टोना किया । उसने हजरत मुहम्मद का नाम पढ़ कर मुहम्मद के बालों के ग्यारह गांठे लगाईं । जब तक ग्यारह गांठे नहीं छूटीं टोना रहा अर्थात् बातिन में जब तक ग्यारहवीं सदी पूरी नहीं हुई तब तक कोई अपनी आत्मा को जगा न सका और कियामत के निशान नहीं खुले ।

दसपर एक सदी भई, छूट गईं गांठें सब ।
आमर महंमद आखर हुई, ठौर पोहोंचे मोमन सब ॥१३

ग्यारहवीं शताब्दी जब पूर्ण हुई तो सब जादू की गांठे छूट गईं अर्थात् मुहम्मद के वायदे की पहचान हुई । खुदा को सबने पहचाना । मुहम्मद साहिब ने खुदा का हुक्म जाहिर किया था कि खुदा आवेंगे वे अपने वायदे पर आए । मोमिन अपने ठिकाने—परमधाम में पहुँचे ।

दस और दोए बुरज कहे, वह बारहीं सदी क्यामत ।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरग इन सरत ॥१४

कुरआन में जो बाहर बुर्ज कहे हैं वह बारहवीं शताब्दी का संकेत कियामत का है । जाहिरी नजर वाले खुदा के आने के बड़े समय के बातिन भेद को कैसे जान सकते हैं ?

दसमी से दोए भए, सो हादी होए बुजरक ।
आखर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक ॥१५

कुरान सूरा अल फज्र दसवीं सदी से दो और कहे हैं । अर्थात् दसवीं सदी के बाद दो बुजुर्ग हादी महान सत्गुरु—होंगे । इन हादियों ने कियामत का सब काम करके सब को अखण्ड धाम और बहिश्तों में पहुँचाया ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर ।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर ॥१६

कियामत का काम करने में जो समय व्यतीत हुई उनका हिसाब कहता हूँ। दस वर्ष ग्यारहवीं शताब्दी के और तीस वर्ष बारहवीं सदी के और सत्तर वर्ष हकीकत के अर्थात् पुलसरात के कहे हैं।

इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब ।
पुल सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखर फिरस्तों तब ॥१७

ग्यारहवीं सदी के अन्तिम दस वर्ष में मोमिन पहचान करके परमधाम की राह चले। बारहवीं सदी के जो तीस वर्ष हैं उनमें दुनियां की जागनी कही। पुलसरात सत्तर वर्ष की है तब फरिश्तों—देवी देवता को तारत्तम ज्ञान की रोशनी पहुँची।

पीछे तेरही में उठ खड़े, सुख काएम पोहोंचे सब ।
आठों भिस्त विवेकसों, हुए नजरों न छूटे अब ॥१८

पीछे तेरहवीं सदी में सब कबरों से उठ खड़े होंगे। सब इल्म की राह से अखण्ड सुख में पहुँचेगें। आठों बहिश्तों में अपनी-अपनी समझ के अनुसार आचरण करके सब पहुँचेगें। अक्षर की नजरों से एक क्षण भी दूर न होंगे अर्थात् ब्रह्मांड उसकी नजर में अखण्ड हो जाएगा।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३२८ ॥

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी ।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत ॥ १

चौथे सिपारे की रोशनी मैंने दिल में रख ली है। कुरआन के बातिन भेद मैं मोमिनों के लिए खोलता हूँ क्योंकि उसे खोलने का समय आ गया है।

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे ।
कैयों आकीन कै मुनकर, यों लिख्या होसी आखर ॥ २

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहां कहा है कि जब खुदा आ कर सब का इन्साफ करेंगे तो उस समय मोमिनों के मुँह उजले होंगे और काफिरों के मुँह काले होंगे। उस समय कई तो विश्वास करेंगे और कई विमुख हो जाएंगे। हदीसों में लिखा हैं कि आखिरी समय में ऐसा होगा।

हक तालाने किया फुरमान, डाटत हैं कीने कुफरांन ।
अंजीर तौरेत से जो फिरे, काफर हुए खरे ॥ ३

श्री मुख वाणी के द्वारा खुदा ने हुकुम भेजा है काफिर लोग उस रोशनी को ढांपते हैं। (जैसे बिहारी जी ने रोशनी को छिपाया)। अंजीर (रास), तौरेत (कलश)—से जो मुनकर होते हैं वे ही असली काफिर हैं।

काफर दिलमें कीना आनें, अंजीर तौरेत पर मारे ताने ।
जो खुदाएका पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर ॥ ४

काफिर लोग दिल में गुस्सा करते हैं। अंजीर और तौरेत किताब को बुरा-भला कहते हैं। (बिहारी जी कहते थे कि यह कलश क्लेश है इसको छिपा कर रखो)। जो खुदा का सच्चा पैगम्बर है उस स्वरूप से जो फिर जाए वही काफिर है।

जुबां आकीन क्यामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आनें ।
उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर ॥ ५

जुबान से कहते हैं हम ईमान लाए—ईमानदार कहलाते हैं और कियामत की सरत को नहीं मानते। इसलाम (सत्य धर्म) के ऊपर कपट करते हैं। जो हकी सूरत को नहीं पहचानते उसी जमायत को काफिर कहते हैं।

मुनकर हुकम और क्यामत, हुए नाहीं नेक-बखत ।
फंद माहें हुए गिरपतार, भमर हलाकी पड़े कुफार ॥ ६

जो लोग खुदाई हुक्म और कियामत को अस्वीकार करते हैं वे नेक बख्त अर्थात् खुशकिस्मत नहीं हैं—उनके अच्छे दिन नहीं आए। वे लोग माया के फंदे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में गिरफ्तार हैं। ऐसे कुफ्र, वेइमानी और भ्रम में पड़े लोग हलाक हो रहे हैं। हैरान गति में पड़े हैं।

उस्तवार न पाई सुंनत, ए जो हुए बद बखत।
सुपेत मुंह कहे मोमन, पाई राह जमातसे तिन॥ ७

इन लोगों ने सुन्नत जमात—मोमिनों की दृढ़ता का मार्ग नहीं पाया है। यह लोग ऐसे बदवख्त—भाग्यहीन हैं कि खुदा को नहीं पहचानते। कुरआन में कहा है कि आखिरी समय में मोमिनों का मुंह उज्जवल होगा। उन मोमिनों ने दीन-धर्म—का रास्ता अपनी जमायत से पाया।

नव सदीके आगे रोसन, कह्या होसी भिस्तका दिन।
अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबो सरत॥ ८

हदीसों में कहा है कि धर्म की रोशनी नव सदी के आगे होगी। और कहा हैं कि उस समय सब को बहिश्तें बांटी जाएंगी। अरफा दसवीं सदी के आगे ग्यारहवीं सदी में बहिश्तों की बख्शिश का दिन होगा। अरफा के आगे बहिश्त का दिन कहा है। खुदा आएगा तो पैगम्बर की कही सरत का दिन जाहिर होगा।

रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाहके आप।
होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार॥ ९

उस समय रूह मोमिनों का आखिरी मिलाप होगा। खुदा का दीदार होगा। बसरी स्वरूप महमद, मल्की श्री देवचन्द्र जी और हकी तीनों सिरदार श्री इन्द्रावती के दिल में मिलेंगे।

ए हमेसां भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके।
सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाएकी राह पर करी है कस्त॥१०

यह तीनों स्वरूप हमेशा बहिश्त के रहने वाले हैं। इनके बराबर कोई बुज़र्ग नहीं है। इनका मुख नूर से भरा उज्जवल है और यह आठों पहर खुदाई इश्क में मस्त खुदा की राह पर बड़ी मेहनत करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो गुजरचा बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत ।
ए जो कही आएत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे महंमद ॥११

इन स्वरूपों को पहचान कर जिनका जन्म ईमान, इश्क, प्रेम, सेवा, बन्दगी में गुजरा, छिपे खुदाई भेद की हकीकत उसी को मिलेगी। यह जो आयतें—अठारह हजार वाणी-खुदा ने भेजी है आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी कहते हैं मैने मोमिनों में पहचान जाहिर करने के लिए उनको पढ़ा अर्थात् कहा है।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ३३९ ॥

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप ।
कलाम अल्लाका जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर ॥ १

पैगम्बर ने जो खुदा के आने का दिन कहा है वह झूठ नहीं सत्य है। नव सदी के आगे खुदा और मोमिनों का मिलाप होगा। कलाम अल्लाह कुरआन की रोशनी और बातिन मायने जाहिर होंगे। यह संकेत ग्यारहवें सिपारे का है।

ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नेक खूब कारन ।
बीच राह हक्के एक, तिन नेकोंका बदला नेक ॥ २

यह सब इसलिए लिखा गया है कि जो नेक पाक लोग हैं उनको बदला दिया जाएगा। हक की राह पर एक स्वरूप है श्री देवचन्द्र जी। उन्हीं के नक्शे-कदम पर चलने वाले नेक लोगों को नेक ही फल मिलेंगे।

उनसों ज्यादा मिल्या है तित, बोहोतक सवाब लेना है इत ।
बोहोताएत बीच यों नबिएँ,
सो मिसल—गाजियों बीच जाहेर किए ॥ ३

उन स्वरूप से भी ज्यादह रोशनी एक और स्वरूप को मिली। वही हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी हैं। उनमें से बहुत सवाब लेना है अर्थात् उनसे एक बन्दगी के बदले हजार गुणा पुण्य मिलेगा। बहुतायत नाम की किताब में लिखा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है वह बात गाजियों की मिसल अर्थात् धर्म योद्धा मोमिनों की जमायत के लिए जाहिर की है ।

तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए ।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे साहेब एही हक ॥ ४

इन स्वरूप पर सच्चे दिल से जो एक बन्दगी करेगा उसकी पूजा हजार बन्दगियों से बड़ी और अच्छी कही गयी । उनको बहुत बड़ा सवाब, यही महान सत्य स्वरूप, देंगे ।

नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस ।
तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल ॥ ५

जब नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीना होगा तो हजरत ईसा उतरेंगे । उनके बाद रूह अल्लाह दूसरा जामा कबूल करेंगे अर्थात् स्वामी जी के मन पर विराजमान होंगे । वही सब की बन्दगियाँ कबूल करेगा ।

सो बखसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे ।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर ॥ ६

यह स्वरूप सबको बहिश्तों की बखशिश करेंगे । एक बन्दगी के बदले हजार का नफा देवेंगे । इनके बराबर मोमिन भी इसी तरह खुदा की राह पर मेहनत करेंगे ।

खिलाफ राह चलें काफर, दुनियाँ को देखावें डर ।
ए जो सरत कही इस दिन, इस बखत उतरे मोमन ॥ ७

काफिर उल्टी राह पर चलते है । और दुनियां को अपने धन से या शक्ति से दबाकर डराते हैं । हदीसों में खुदा के आने की सरत (वायदा पूरा करने का समय) लिखी है मोमिन उसी समय की चाह करते हैं ।

होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमन करें कस्त ।
कस्त करें सब आरब, ए आएत उतरी है तब ॥ ८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह दज्जाल से लड़ाई करेंगे तो बड़ा शोर होगा। सब दुनियां हा हा कार करेगी। आरब लोग दूसरों पर अत्याचार करते हैं कि इमाम के धर्म का सवाब मिले। परन्तु यह तो धर्म का युद्ध है स्वयं कष्ट पूर्ण जीवन जी कर दूसरों को राह दिखाई जाती है आरब भी मेहनत करते हैं। वे जाहिरी शैतान की लड़ाई की बाट देख रहे हैं। आरब अर्थात् ईश्वरीय सृष्टि भी शैतान से लड़ाई करने को तैयारी हुई। यह आयत अर्थात् वाणी तभी उतरी।

ना—रवा मोमन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़नेको जाए।
होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए ॥ ९

वर्जित—हराम-वस्तु मोमिन नहीं चाहते, घर को अर्थात् अपने गुण अंग इन्द्रियों को छोड़ बाहर दूसरों से लड़ने के लिए नहीं जाते। (संयम से अपने विकारों को दूर करते हैं दूसरों को काफिर कहकर उन्हें मारने नहीं जाते)। कहा है कि उस समय शहर उजाड़ हो जाएंगे। अर्थात् सब के दिल ईमान रहित हो जाएंगे। ईमान की खुराक किसी को भी न मिल पाएगी।

पोहोंचे जब एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इल्म किस्सों मुराद किबला ॥ १०

जब ऐसा समय आ जाए तो लड़ने के लिए बाहर मत जाना। अपने अन्तर में मन और इन्द्रिरों को काबू में रखना। उस समय सब जातियां एक हो जाएंगी और सब की चाहना यही होगी कि उस अखंड किबला—परमधाम का ठिकाना हमें मिले।

जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड़ न जाएं लड़ाई काम।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे ॥ ११

जिन मोमिनों के सिर पर परमधाम है वे घर में इन्द्रियों की लड़ाई छोड़ बाहर नहीं जाते हैं। जो मोमिन पीछे बाकी है वे भी जब जीतना चाहते हैं तो एक के इलम की दानाई-चतुराई—लेकर लड़ना चाहते हैं। (दूसरों को इलम द्वारा समझाते हैं युद्ध करके नहीं)।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो कोई उन गामके हैं, तिनको इलम दीनका कहे ।
सवा नव बरस दसमीके बाकी, इतथें मजकूर भई है ताकी ॥१२

जो मोमिन परमधाम के रहने वाले हैं उनको इल्म—तारत्तम ज्ञान रुपी-हथियार लेकर दीन-धर्म- के लिए लड़ने को कहा है । दसवीं शताब्दी के जब सवा नौ वर्ष बाकी रहे तो रूह अल्लाह और मोमिनो के आने की साहिदी पूरी हुई ।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ३५१ ॥

कुरान तफसीर हुसेनी, बुजरक एह पेड़से केहेनी ।
मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार ॥ १

कुरआन की जो हुसैनी तफसीर (टीका) है वह पहले से ही बड़ी मानी जाती है । जिन सूरतों को कुरआन में बड़ा कहा है उनमें बशरी, मलकी और हकी तीनों स्वरूपों पर कियामत का मुद्दआ है ।

ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनो सरूप बिसेक ।
सब नामों बुजरगी लिखी जित, मगज खुलें सब देखो तित ॥ २

यह तीनों स्वरूप एक ही हैं और आखिरी रसूल हकी सूरत इमाम मेहदी इनमें सिरदार कहा है । छत्र साल जी कहते हैं कि जब बातिन भेद खुलेंगे तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि सब नामों की बुजुर्गी आखिरी स्वरूप इमाम मेहदी पर है ।

ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल ।
ए इलम ले रूहअल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया ॥ ३

जब मुहम्मद कुरआन लाए तो रसूल कहलाए । परन्तु जिस स्वरूप को खुदा ने उसके बातिनी अर्थ खोलने का अखत्यार दिया सो भेद आखिरी स्वरूप ने आकर खोले । यह ज्ञान ले कर श्री देवचन्द्र जी आए । उन भेदों को खोल कर इमाम कहलाए ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदास सरूप सरस ।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखरी इमाम ॥ ४

जब दसवीं सदी के सवा नौ वर्ष बाकी रहे तब सब के सिरदार श्री देवचन्द्र जी प्रकट हुए । पीछे जो हकी स्वरूप जाहिर हुए वे ही इस चांद (श्री देवचन्द्र जी) के बाद सूरज कहलाए । श्रीदेवचन्द्र जी के समय किसी को पहचान नहीं हुई इसी से उन्हें चाँद कहा । हकी सूरत को मारिफत का ज्ञान सब ओर फैलाने के कारण सूर्य कहा ।

कहूँ कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊँ आड़ा अंतर ।
उस ईसे पीछे जो उस्तवारी,
सो तो काएदे खुदा के सिफत सारी ॥ ५

छत्रसाल जी कहते है मैं कुरान की गवाही देकर कहता हूं आप दिल की आंख खोल कर देखो । तुम्हारे अन्तर में जो भ्रम रूपी परदा है उसे उड़ा दूं । श्री देवचन्द्र जी के बाद हकी स्वरूप ने जो धर्म की दृढ़ता से कायम किया वह कायदा—तरीका और सिफ्त-प्रशंसा-सब खुदा के अनुरूप ही है ।

बुनियाद रसूल सोई आखरी, ए सिफत सारी इनकी करी ।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरूद करे हुसियार ॥ ६

बुनियाद—नींव स्वरूप जो पहले मुहम्मद हैं वे ही आखिरी स्वरूप हैं यानी दोनों स्वरूप एक ही हैं । सम्पूर्ण वेद कतेब में इनकी ही प्रशंसा की हुई है । इमाम के यार और औलाद परमधाम के मोमिन हैं यह हमेशा पाक होकर स्तुति प्रार्थना करते रहते हैं ।

एक के इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुस्खबरे ।
इन देहुरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक ॥ ७

कुरआन का यह इशारा एक से दूसरे पर किया गया है । दूसरे स्वरूप इमाम मेहदी बिलंद स्थान परमधाम की खुशखबरी देने वाले हैं । यह देहरी जो स्वामी जी का स्वरूप है उनके चरणों की खाक सब चूमेंगे । यही स्वरूप सबके सिरदार मेहरबान और पाक दिल हैं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी ।
मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही ॥ ८

सब धर्मों के आगे चल कर परमधाम दिखाने वाले यही हैं । वे ही खुदा के नजदीकी सबके बादशाह और परमात्मा की पहचान कराने वाले हैं । कहा है कि इनको बादशाही मुल्क मिला । दरगाह की रहने वाली ब्रह्म सृष्टि का राज्य उसे मिला ।

उतपंन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत ।
बड़े साहेब की इत पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई ॥ ९

खुदा ने इस स्वरूप को बड़ी दौलत पैदा किया । मोमिन और फरिश्ते दोनों उनके संग हैं । दीन की यह बड़ी बादशाही बड़े साहब श्री देवचन्द्र जी की है । जमीन आसमान में यह स्वरूप खुदाई स्तम्भ जाहिर हुआ । उसने सबको अखण्ड बहिश्तों में पहुँचा (चढ़ा) दिया ।

जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन ।
मोती कह्या डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक ॥१०

जिस स्वरूप में खुदा ने दीन की रोशनी करने का हुकुम दिया उसी ने सब को ईमान रूपी दौलत बक्शी है । इसी स्वरूप को कुरआन में डिब्बे का बड़ा मोती कहा है । सन्दूक परमधाम है, डिब्बा मूल मिलावा है वहां के-बुजुर्ग—महान मोती यही आखिरी स्वरूप हैं ।

दबदबे का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर ।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हदीसों होए पेहेचान ॥११

इस स्वरूप का सब धर्मों पर दबदबा (जोर) है और सब में इनके ही नूर की रोशनी है । इसी लिए इनको हकी सूरत (स्वरूप) कहा । इस स्वरूप पर खुदा की मेहरबानगी का साया है और तमाम खुदाई रोशनी इनके अन्दर है । यह सम्पूर्ण जो निशान कहे हैं हादी बताएंगे तो इन बातों को सब पहचानेगे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिरदार अस्वार इज्जत मैदान,
आली सेर इन दरगाह का जान ।
इन पातसाह ऐसा जमाना, बखसीस चाहे बखत की पना ॥१२

सब धर्मों के ऊपर सवार यही स्वरूप है । सबके ऊपर परमधाम का रास्ता इन्होंने बताया और हरिद्वार के धर्मों के मैदान में इन्हीं की इज्जत रही । परमधाम की दरगाह के बड़े शेर अली भी यही हैं । इन बादशाह का ऐसा जमाना है कि इस समय की पनाह—शरण सब मांगते है ।

इन गुलजारी को खुस्बोए, रोसन होवे दिल रूह दोए ।
सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन ॥१३

यह गुलजार स्वरूप हकीसूरत के दिल की खुशबू यह अठारह हजार वाणी है । उससे दिल और रूह दोनो रोशन हो जाते हैं । दुनियाँ में इसी खुदाई ज्ञान का विवेक फैलेगा ।

चांद सूरज दोऊ कही दौलत, सिने चार बिलंदी और मिलत ।
जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील ॥१४

चांद स्वरूप श्री देवचन्द्र और सूर्य स्वरूप श्री प्राणनाथ दोनों स्वरूप खुदाई दौलत हैं । खुदाई का सम्पूर्ण भेद इनके अन्दर है । इस स्वरूप में चार महान शक्तियां और इकट्ठी हुई हैं । जिबरील जोश स्वरूप है वह मोमिनों की वकालत—सफाई पेश-करने के लिए इनमें आया । नूर-अक्षर ब्रह्म की बुद्धि का फरिस्ता इसराफील है वह भी आया ।

रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर ।
ए इमाम की सब कही सिफत, मोमन मुतकी दोऊ साथें उमत ॥१५

ईसा रूह अल्लाह श्री देवचन्द्र जी का नूर, तारत्तम ज्ञान भी इनमें आया । मुहम्मद जो हुकुम के स्वरूप है वे भी इनके अन्दर है । यह सब सिफ्त आखरी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुहम्मद, इमाम मेहदी की कही। फरिश्ते—ईश्वरीय सृष्टि और ब्रह्म सृष्टि सब इनके साथ हैं।

ढूंढ़ेगे हरघड़ी मरतबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान,
होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान ॥१६

जिसको पहचान हो जाएगी वे इस स्वरूप से परमधाम का पद चाहेंगे। दुनियाँ के सिर पर आखिरी स्वरूप का साया है। दुनियाँ का सिर ऊँचा हुआ क्योंकि सब वैकुन्ठ को छोड़ परमधाम को चाहने लगे। पहचान हो गई तो मनचाहा दर्जा सब पाने लगे।

इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरगी पावे इत ॥१७

इस आखिरी स्वरूप पर खुदा का बड़ा प्यार है। इस स्वरूप ने कुरआन पुराण के छिपे हुए भेद खोले। इनके पास दोनों जहान हिन्दुओं और मुसलमानों के ज्ञान को खोल देने की खबरदारी है। इन्होंने खुदा से बड़ा नेक, असल समय पाया है। इस स्वरूप से हिन्दू मुसलमान बड़प्पन पाएंगे।

सब रोसनाई तमामिअत, पाई बुजरगी कर कर कस्त।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब ॥१८

बड़ी कस्त (मेहनत) से सब रोशनी, पूर्णता और खुदा की तरफ से बुजुर्गी पाई। चौदह किताब इनके मुख से नाजिल हुई। चारों किताबों रास, प्रकाश, षटऋतु और कलश पर जल्दी दृष्टि खुल गई।

जवेर बयान तोहफे हुकम, चार जिलदों पर दई खसम।
तलब पाकी की पकड़ी, तरबीयत तमामिअत पाई बड़ी ॥१९

हुकुम का नायाब तोहफा जाहिर बयान के रूप में आया। खुदा ने चारों किताबों के बाद सनंध की बखशिश की। तब खुदा की ओर से पक्की होने की चाहना पकड़ी। खुदाई ज्ञान का बातिन भेद पाया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पेहेली जिलद तमामिअत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत ।
कबूलियत पाइए जित, बोहोत साथ मिलावत ॥२०

कुरआन के ज्ञान की पहली किताब सनंध खत्म हुई। उसके गूढ़ार्थ और संकेत सब खुल गए। यह किताब हाथ में आई तो खुदा की पनाह पकड़ी, बुजुर्ग मरातवा बड़ा पद—पाया। खुदा के दिल के छिपे भेद जाहिर हो गए। छत्रसाल जी कहते हैं जिस स्वरूप में सबकी बन्दगी कबूल हुई उनके साथ बहुत बड़ी जमायतें इकट्ठी हो गईं। बड़ा मेला हुआ।

लिखना बाकी जिल्दका है, सो तले तरजुमें लिखना कहे ॥
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर,
सो कौन पावे बिना महंमद फकीर ॥२१

जो बाकी किताब (कीर्तन) का लिखना है वह सनंध के तले उसका तर्जमा (स्पष्टीकरण) करना है। कीर्तन के जुदे-जुदे ठिकाने सम्बन्ध के प्रकरण उतरे हैं उनकी सनंध से कड़ियां मिलाई हैं। इन कड़ियों का भेद फकीर मुहम्मद के बिना कौन मिला सकता है।

पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थे तिन पाया हक ।
इस थें बरस सत्तानबे, तित दूजे जामें जाहेर भए ॥२२

पहली बड़ी किताब सनंध की पाई। मेहरम (राजदार) मोमिनों ने उस किताब से हक और कियामत का भेद पाया। जहाँ से सत्तानवें वर्ष तक श्री देवचन्द्र जी के जन्म से सं० सत्तरह सौ पैंतीस (हरिद्वार के मेला तक) के साल दूसरे जामें श्री प्राणनाथ जी में ईसा रूह अल्लाह संसार में जाहिर हुए।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत ।
आठ महीने हुए इन पर, तब पेहेली किताब भई मुयसर ॥२३

जब मेरता में गैब—परोक्ष—की आवाज से कलिमा का संकेत पाया तो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सनंध की इलाही किताब अवतरित हुई। आठ महीने तक दिल्ली में धर्म युद्ध हुआ तब यह पहली किताब हासिल हुई।

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान ॥२४

यह जो खुदा की जात, आलिम मोमिनों की है उन पर तंगी (गरीबी) परेशानी और बीमारी आई। हुसैन मुहम्मद ने हुसैनी तपसीर में यह बयान किया है कि कुरआन अन्त में आखिरी रसूल के हाथ खुलेगा।

ए जो दूसरे जामे की कही, तहां पांच बुजरगी भेली भई।
आगे दिन कहेंने क्यामत, सोई खोलों मैं हकीकत ॥२५

यह हकीकत—दूसरा जामा जो स्वामीजी हैं उनकी कही। उनमें पांच नेमतें इकट्ठी हो गई। धनी जी का जोश, श्यामा की आत्मा, हुक्म (मुहम्मद) नूर अर्थात् अक्षर की बुद्धि और इन्द्रावती की रूह। इन ने मिल कर कियामत का दिन जाहिर करना है। कुरआन में कियामत का जो दिन बताया है उसकी हकीकत मैं खोल कर जाहिर करता हूँ।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३७६ ॥

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊँ सही।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए ॥ १

यह जो बात पिछले प्रकरण में कही गई वह पहले सिपारे की है इसमें सोलहवें सिपारे की कड़ी मिलाता हूँ। वहाँ इस तरह से लिखा है परन्तु जब तक (सतगुरु) दिखा न दें तब तक समझ नहीं आती।

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे।
काएदा उमेदा गया सब भूल, मुझ ऐसे की दुआ करी कबूल ॥ २

जकरिया पैगम्बर का किस्सा जाहिर में कुरआन में दिया परन्तु बातिन में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस किस्से की बात का संकेत श्री देवचन्द्र जी पर घटित होता है। जकरिया अर्थात् देवचन्द्र जी कहते हैं मेरे परवर दिगार स्वामी ! मैं तेरी उपासना और बन्दगी में नहीं था ! बन्दगी का कायदा और उम्मीद सब भूल गया था। मुझ जैसे नादान की दुआ आपने स्वीकार की।

तुम कबूल में तरबिअत पाई, खसलत तुमारी इनमें आई ।
भी देखियो तुम एह बचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन ।। ३

जकरिया पैगम्बर श्री देवचन्द्र जी अर्ज करते हैं कि हे मेरे खुदा ! जब आपने मेरी दुआ कवूल की तो मुझे चैन मिला। जो बेटा आपने मुझे दिया उसमें खुदाई शोभा और खूबियाँ हैं। आप हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी ! जो हजरत ईसा श्री देवचन्द्र जी ने वचन कहे हैं उन्हें तुम देखो।

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर ।
पीछे मेरे मोहीम खैरात, जो बर पाए करे दीन की बात ।। ४

श्री देवचन्द्र जी कहते हैं, हे मेरे परवर दिगार ! मुझे निश्चय ही डर है कि अपनी खल्क (नसली बेटा बिहारी जी) हाजिर तो हैं परन्तु धर्म की रोशनी करने का लक्षण इनमें नहीं दिखता है। मेरे मोहीम पाने अर्थात् मरने के बाद इल्म का ज्ञान दान दे और दृढ़ता से खड़ा रह कर दीन-धर्म—की रोशनी जाहिर करे।

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत ।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत,
चाहिए खलीफा इस बखत ।। ५

मेरी पातशाही मोमिनों के बीच है। इस बात को वे कवूल करें और दीन (सत्य धर्म) का हुकुम माने। हजरत ने कहा मेरे मरने की पीछे खलीफा, उस्ताद चाहिये जो वेद कतेबों के मगज मायने जानने वाला हो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न जननेवाली मेरी औरत, अठानबे बरस की मजल है इत ।
और बस—बखस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर ।। ६

मेरी औरत बूढ़ी है और लड़का पैदा करने वाली नहीं । यहाँ औरत अपनी ढलती उम्र के लिए कहा गया । श्री देवचन्द्र जी के जन्म से जब इस बात का तथ्य जाना गया, कि असली पुत्र मेहराज ठाकुर (प्राणनाथ) हैं बिहारी जी नहीं, अठानवे बरस व्यतीत हो चुके और मंदसोर में श्री देवचन्द्र अपने दूसरे जामा में थे । हे मेरे खुदा एक बेटा दे और कुछ न दे । निश्चित ही यह बात आपके हाथ में है ।

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए ।
लेवे मिरास इमामत, लेवे मुझसे हकीकत ।। ७

हे मेरे परमात्मा मेरा बेटा ऐसा हो जो मेरे धर्म का वारिस बने । मेरी इमानत अर्थात् नसीहत करने की और मोमिनों को राह दिखाने का उत्तराधिकार सम्भाले । मुझसे वह हकीकत लेकर जाहिर करे ।

एह मिरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत ।। ८

मेरी मिल्क (कौम) जो मोमिन हैं उनमें सिरदारी लेवे । खुदाई हुक्म की मुझसे हिक्मत (बुद्धिमता) सीखे ।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३८४ ।।

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक ।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर ।। १

कुरआन में इसहाक पैगम्बर की औलाद याकूब कही है । इसहाक श्री देवचन्द्र जी और याकूब आप स्वामी जी हैं । इनका कबीला पाक मोमिन हैं । पहले प्रकरण में भी इसी की चर्चा है अब दूसरी तरह से जाहिर करके लिखा है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सोई जुदे कर देऊँ खीर और नीर ।
एही अगली फेर और बिध लिखी,
सोई समझी चाहिए दिल में रखी ।। २

यह जो अलग सिपारों की कड़ियों मिलाई हैं इनसे सत्य-झूठ सब अलग-अलग स्पष्ट हो जाएगा। इससे कुरआन के गूढ़ भेद खुल जाएंगे। हकीकत तो पहले प्रकरण में कही, वही है परन्तु यहाँ दूसरी तरह से वर्णन हुआ है।

भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिच्छा महंमद फकीर ।
खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कह्या ।। ३

खुलासा किए बिना भेद नहीं मिलता। यह शिक्षा हमको आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी से मिली। वे ही कुरआन में एहिया-याहिया के नाम से कहे गए। वे श्री देवचन्द्र जी के सच्चे चेले बने। उन्हीं को ईसा रूहअल्लाह का नजरी बेटा कहा गया।

ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कहे हुरम ।
कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया ।। ४

याहिया ने ईसा रूहअल्लाह श्री देवचन्द्र जी को परमात्मा का स्वरूप जान खसम-पति कहा। कुरआन में ईसा को अल्लाह की (हुरम) स्त्री करके कहा है। कुरआन और दूसरी किताबों में लिखा है कि ईसा ने खुदा से बेटा के लिए बहुत जिक्र किया इसलिए उनका (श्री देवचन्द्र जी का) नाम जकरिया कहा गया।

जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या ।
इन बिध केती कहूँ जंजीर, कुरान कै भांतों तफसीर ।। ५

जो नसली—वंशज—पुत्र ईसा श्री देवचन्द्र जी के बिहारी जी हैं, कुरआन में कहा है कि वह धर्म से अलग ही रहा। इस तरह कुरआन में (श्री देवचन्द्र और प्राणनाथ के विषय में) कितने ही संकेत हैं उनको मैं कहां तक वर्णन करूँ। कुरआन की कई तपसीरों में इस तरह का जिक्र है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हादिएं इनको ऐसा किया, फरजंद मेरे मुद्दा लिया ।
हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे ।। ६

हादी रूह अल्लाह ने खुदा से ऐसा कहा कि मेरे बेटे ने धर्म का मुद्दआ अर्थात् दीन का काम अपने सिर लिया । हे मेरे परवरदिगार ! तूने मेरी अर्ज कबूल करके मुझे लड़का दिया मैं तुमसे बहुत ही रजामंद अर्थात् प्रसन्न हूँ ।

अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक ।
पीछे इसके सेजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर ।। ७

जकरिया पैगम्बर कहते हैं कि आपने मुझे जो बेटा दिया पहले तो उसके वचन बेशक ऐसे हैं जिनसे खुदा राजी होगा । वह मेरे वजूद के सिजदे पर (अर्थात् जहाँ मेरा सिर झुकता है) सिर झुकाने वाला हो । इसके लिए जकरिया रो-रो कर दुआ करते हैं ।

करम खुदाए का साहेब सेजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वाएदे ।
इन समे सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे ।। ८

तब फरिश्ते आवाज देते हैं कि ए सिज्दा करने वाले जकरिया तेरे ऊपर खुदा की मिहरबानी है । तुमने जो अपने मुँह से दुआ मांगी थी खुदा ने तेरा वचन पूरा किया । अर्थात् बेटा दिया । तेरी दुआ खुदा ने कबूल की । वह उसे दिल के साथ सुनता है ।

खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या ।
ए बेटा तुझे बखसिया, कह्या नाम उसका एहिया ।। ९

खुदा ने कहा है कि हे जकरिया तुम्हें मैं एक खुश-खबर सुनाता हूँ । मैंने तुझे बेटा प्रदान किया । उसका नाम याहिया है ।

पैदा किया एहिया को देख, आगूं में नाम एक ।
बीच ल्याए जादल—मिसल, भांत बुजरगी नाम नकल ।।१०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छत्रसाल जी कहते हैं कि खुदा ने याहिया को पैदा किया। यह बात तुम दिल में देखो। खुदा ने कहा कि आगे चल कर वह याहिया और मेरा नाम एक होगा। (वह खुदा हकी सूरत कहलाएगा)। जादल मिस्ल नामक किताब में लिखा है कि याहिया की बुजुर्गी खुदा के बराबर और उसका नाम खुदा के मुआफिक होगा।

आगूँ इसके ऐसा नहीं नाम, ना माफक इसके कोई काम।
बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदम इस इसम ॥११

याहिया के समान बड़ा नाम किसी का नहीं होगा। और न ही इसके समान महान किसी के कर्म होंगे। परमात्मा के नाम का उपदेश देने वाले कई पैगम्बर हुए परन्तु इसके जैसा बुजुर्ग नाम वाला आदमी नहीं हुआ है।

बल्क एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक।
ना कछू मेहेतारीने पाले, बापके ना हुए हवाले ॥१२

बलिक यही याहिया (श्री प्राणनाथ जी) का स्वरूप सबसे महान है। खुदा ने इन्हें सच्चा पैगम्बर किया। इनका महतारी ने पालन-पोषण नहीं किया और न ही इल्म सीखने के लिए पिता के आश्रित रहे। (अन्य लोगों की तरह इन्हें किसी को शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं पड़ी। इनका ज्ञान खुदाई देन था।)

इमाम सालबी से नकल आई, आगूँ इस थें नकल फुरमाई।
पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जाहेरके ल्यावे ॥१३

इमाम साल्हवी ने अपनी किताब में कहा है और हम उसकी नकल देते हैं कि जकरिया ने ऐसा लड़का चाहा जो ईसा रूह अल्लाह (श्री देवचन्द्र जी) के दीन (सत्य धर्म) की बुजुर्गी (महानता) का प्रकाश करे।

पीछे उसके एते नाम लेवे, खासोंमें खासगी देवे।
भाँत भाँत नाम जुदे बे सुमार, अपने नामें सब किए उस्तवार ॥१४

जकरिया के पीछे बन्दगी करने वाला हो और खासे मोमिनों को खास

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमधाम पहुँचाने वाला बने। तरह-तरह के बेशुमार नाम देकर खुदा ने उन्हें अपने काम पर पक्का किया है।

आखर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कह्या मेहेमूद ।
आखर बुजरगी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही ॥१५

आखिरत कियामत के काम में यह स्वरूप होशियार है। इन स्वरूप का नाम खुदा के अनुरूप है—खुद खुदा ही है। (खुदा के समान दूसरा कोई नहीं इसीलिए इस रूप में खुद खुदा ही आया है)। आखिरत के समय सब महानता आखिरी मुहम्मद श्री जी पर आई। आखिरी मुहम्मद ने ब्रह्म सृष्टि की महानता को जाहिर किया।

इसम धरेका माएना एह, ऐसी सबी कोई और न देह ।
ए तिस वास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया ॥१६

याहिया के खुदा का नाम लेने का अर्थ यह है कि उनके अनुरूप कोई दूसरा चेहरा देहधारी का नहीं है। इसलिए इस स्वरूप की इतनी प्रशंसा की गई। इनसे धर्म का काम तो लिया गया किन्तु इनसे गुनाह का कोई काम नहीं हुआ।

हो साहेब मेरे जिकरिया, यो केहेवे मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे ।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली ॥१७

जकरिया कहते हैं हे खुदा मेरा बेटा ऐसा कैसे होगा! मेरी औरत (वजूद) ऐसा है अर्थात् बूढ़ा है वह बेटा पैदा करने लायक नहीं। मनुष्य शरीर से निष्कलंक वजूद पैदा नहीं होता परन्तु याहिया (श्री जी) जकरिया (श्री देव-चन्द्र जी) के निष्कलंक पुत्र हुए।

अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरगी पाइए इनसेती ।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर ॥१८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब मैं इस उम्र को पहुँचा हूँ। इस लड़के से सत्य धर्म की बुजुर्गी मिले। हे खुदा! मुझे आपकी मेहरबानी की खबर नहीं थी और न मेरे दिल में आपका कुछ डर था।

मोहे गरीबी और नातवान, ए बड़ाई आपसों होए पेहेचान।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए ॥१९

मुझे गरीब और नादान जान कर जैसे आप महान हैं वैसी ही बड़ी बखशिश आपने की। ऐसा बेटा दीजिए जो आपकी पहचान और मेरी बुजुर्गी जाहिर करने वाला हो। बड़ा भारी विस्तार करने के लिए श्री तारत्तम इलम की कुदरत और सामर्थ्य सिर पर उठावे।

कहे फिरस्ते खुदाके हुकम, ऐ जिकरिया कह्या जो तुम।
ए बात योंहीं कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे ॥२०

खुदा के हुकुम से फरिश्तों ने कहा यह बात तुमने जैसी कही ठीक है। तेरा बुढ़ापा और नादानी जान कर :—

ए तेरे खुदाएने कह्या, पैदा करने काम फरजंदका भया।
कह्या बीच इस सिनसे, आसान खुदाके दो सख्सोंसे ॥२१

खुदा ने कहा है कि तेरे लिए पुत्र पैदा करने का हुक्म हुआ। जकरिया ने पूछा कि लड़का कब होगा तो कहा इसी सन (वर्ष) में ही होगा। खुदा के अहसान से दो शख्सों से पैदा होगा।

तो सांचा एहिया पैदा किया नाबूद सेंती बूदमें लिया।
बुजरगी सों खुदाएने कही, जिकरिया फरजंद पोंहोंच्या सही ॥२२

इस तरह खुदा ने सच्चा पेगाम देने वाला याहिया पैदा किया। दुनिया के बीच अपने माँ-बाप के घर में नाबूद थे, अर्थात् कुछ नहीं थे, और उन्हें खुदा ने मेहरबानी करके अखण्ड परमधाम की तरफ खींच लिया। फरिश्ते कहते हैं तेरे दीन की बुजुर्गी जाहिर करने के लिए खुदा ने कही है कि हे जकरिया तुम सन्तोष रखो! खुदा ने तुम्हारे लिए बेटा प्रदान किया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खुस्खबरी सों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजूद इन हाल ।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरातबे ॥२३

खुदा की तरफ से खुश खबर सुन कर जकरिया बड़ा प्रसन्न हुआ। पहले अपने शरीर की हालत देख कर बड़ा निराश था। यह बात जाहिर कभी किसी ने नहीं जानी—किसी को इस बात का भेद पता न लगा। जब ईसा रूह अल्लाह दूसरे जामे में आए तो इस बुजुर्गी को पहुँचे।

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन विध बाका होसी तेरे ।
मेरी निसानीकी खबर जेह, मोहे नहीं पड़त मालूम एह ॥२४

जकरिया श्री देवचन्द्र जी कहते है ए मेरे साहिब ! तुम्हारे वचन कैसे सत्य होंगे ! मेरी निशानी जो नसली वेटा बिहारी जी है उससे मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वह मेरे धर्म का बोझ उठा पाएगा।

कह्या खुदाएने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी ।
मरदोंसें बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन ॥२५

तब खुदा ने कहा कि तेरी निशानी तेरा नसली बेटा (बिहारी जी) मेरी हकीकत न कह सकेगा। यह मरदों से अर्थात् मोमिनों से बात न कर सकेगा। तीन रात और चौथे दिन की खबर इसे नहीं होगी। (व्रज, रास, जागनी और परमधाम की लीला का वर्णन यह न कर सकेगा)।

ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिछन वीर ।
लैलत कदरके तीन तकरार, दिन फजरका खबरदार ॥२६

यह नसली बेटे बिहारी जी की हकीकत है। विलक्षण बुद्धि वाले धर्म योद्धा ही कुरआन के भेद जानते हैं। लैल तुलकदरि की रात के तीन हिस्सा और जो दिन अर्थात् फज्र के बयान की खबर दुनियाँ में नजरी बेटे ने की।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी ॥२७

नसली बेटा पैगम्बरी क्या जाने ! यह खिताब याहिया—नजरी बेटे स्वामी श्री प्राणनाथ को खुदा ने दिया ।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ४११ ॥

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद ।
बड़ी द्वा छिपके मांहें ल्याय, सब गिरोहसों करे छिपाए ॥ १

खुदा की बन्दगी छिप कर करो । खासल खास मोमिन खुदा के नजदीकी छिपी बन्दगी की लज्जत पाते हैं । सबसे बड़ी दुग्रा कुरग्रान में छिपी बन्दगी को कहा है । मोमिन सब जमायतों से छिप कर बन्दगी करते हैं ।

बरस निन्यानबेलो सरम, न करी जाहेर होए के गरम ।
बरस निन्धानबे हकी हुरम, साथ ईसाके समझियो मरम ॥ २

श्री देवचन्द्र जी के जन्म से लेकर निन्यानवे वर्ष की मन्जिल मंदसोर से हो राम नगर तक की है । इस समय उदयपुर के साथियों की चल-विचल सुन कर ग्रापको बहुत शर्म ग्राई । ग्रापने खुदाई दावा जाहिर नहीं किया । ग्रर्थात् तब तक इन्द्रावती का खिताब ही रखा । इससे निन्यानबे वर्ष तक हुरम ग्रर्थात् (खुदा की) पत्नी का ही खिताब रहा । यह संकेत हुरम का ईसा रूह ग्रल्लाह के लिए है जो दूसरे जामे श्री जी—में हुरम के रूप में रहे ।

सोए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही ।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे ॥ ३

सो ईसा की ग्रौरत जनने वाली नहीं कही गई ग्रर्थात् बुढ़ापा ग्रा गया ग्रौर बेटे (मेहराज ठाकुर) को मिलने की चाह दिल में रही । बूढ़ा ईसा, जकरिया—श्री देवचन्द्र जी—बार-बार कहते हैं (श्री मेहराज ठाकुर को बुलाग्रो)—परन्तु बुढ़ापे के कारण उनकी धीमी ग्रावाज कोई नहीं सुनता ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँच जिल्दें इन मजलें पाईं, तो लों बात करी छिपाईं ।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार । ४

पांच किताबें खुदा के यहाँ से उतरीं । रास—प्रकाश, षटऋतु, कलश और सनंघ । तब तक आपने हिन्दू मुसलमान को इकट्ठा करने की बात को छिपाए रखा । जब भी कभी यह बात किसी तरह चलाते थे तो उसे सुन कर उसके अनुसार कार्य करने वाला कोई सिरदार आगे नहीं आता था ।

आवाज उनकी थी इन पर, चाहें आप कोई लेवे खबर ।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामेंकी कहूँ बात । ५

ईसा जकरिया के ज्ञान की आवाज ऐसी थी कि कोई पहचान ले तो सत्य-धर्म का हुक्म जारी कर दे । छत्रसाल जी कहते हैं कि दूसरे जामे—श्री प्राणनाथ जी की बात सुनो ।

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार ।
खंभमें वजूद इद घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर ।। ६

वृद्ध अवस्था आ गई, हड्डियां सुस्त हो गई । नार—अन्दर की आग—शीतल हो गई । शरीर खंभ—रीढ़ की हड्डी—पर टिका है अर्थात् उठने की शक्ति नहीं । इस प्रकार बुढ़ापे के कारण सभी अंग ढीले पड़ गए ।

कह्या होवे वजूद तमाम, इन थें भली भांत होवे काम ।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत ।। ७

कहा है कि वजूद के ठंडा होने के बाद भी इनसे भली भांति काम होगा । कहा कि मेरा सिर सफेद हो गया तो क्या हुआ अन्दर से धर्म की रोशनी के प्रति अचेत नहीं हूँ ।

अंदर ज्वानी है रोसन, कांह ज्यों पकड़े अगिन ।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गईं भूल ।। ८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरे अन्दर धर्म का काम करने वाली आग है। जैसे आग सूखी लकड़ी को जला डालती है उसी तरह अन्दर के प्रकाश से सब बन्दगी कबूल होती है। बुढ़ापे की उम्र में धर्म की रोशनी नहीं भूलती है।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ४१९ ॥

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जांहें।
याद करो माहें कुरान, किस्से इद्रीसकी पेहेचान ॥ १

यह हकीकत कुरआन के सोलहवें सिपारे की है जहाँ सौ वर्ष की मंजिल का बयान आया है। आदम जो श्री देवचन्द्र जी हैं उनके जन्म से सौ वर्ष बाद दूसरे शरीर में होकर उन पर इद्रीस का खिताब आया है सोलहवें सिपारे को जब याद किया अर्थात् उस पर विचार किया तो इद्रीस पैगम्बर की पहचान हुई।

बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था।
अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब कह्या इस ठाम ॥ २

साहब उग्रसेन के लिए कहा उनका नवासा अर्थात् दौहित्र देवकी का पुत्र श्री कृष्ण हुआ। उनका बाप दादानूह, अर्थात् वसुदेव हुआ। कुरआन में श्री कृष्ण के लिए अबनूस नाम आया है। वही अबनूस अब प्राणनाथ में आए तो उनका खिताब इद्रीस अर्थात् सत्य झूठ की पहचान कराने वाला हुआ।

ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन।
अव्वल खत यों लिख्या कलाम,
नजूम दरजी पना किया इसलाम ॥ ३

इद्रीस का लकब (उपाधि) हकीकत जाहिर करने के कारण हुआ। इन्हीं—श्री जी—के द्वारा सब को कियामत की पहचान हुई। जब तक अल्लाह कलाम कुरआन और अन्य ग्रंथों के भेद स्वामी जी ने नहीं जाहिर किए तो किसी को पता न चला। इद्रीस जिस प्रकार कपड़े काट कर सीता था उसी प्रकार स्वामी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जी ने सब ग्रन्थों की कड़ियां मिला कर कियामत की हकीकत को जाहिर किया। कियामत, ईसा ईमाम का आना, कियामत के सात निशान जाहिर होने का समय सबको बतलाया। सब ग्रन्थों को मिलाया इसीलिए इद्रीस खिताब पाया।

तीस वरक हुए नाजल, ऊपर जामें कहे असल ।
बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदमके सौ बरीस ॥ ४

असल जामा जो दूसरा स्वामी जी का है उसमें होकर तीस सनंध उतरीं। जामला किताब अर्थात् कुरआन में इद्रीस पैगम्बर का बयान लिखा है। आदम श्री देवचन्द्र जी के सौ वर्ष बाद स्वामी जी को इद्रीस का खिताब मिला। तब स्वामी जी रामनगर की मंजिल के निकट थे।

तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक ।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेराज भिस्त पेहेंचान ॥ ५

सब खल्क—जनता ने स्वीकार किया कि इद्रीस पैगम्बर यही है—यही संसार को सत्य करेंगे—अर्थात् मुक्त करेंगे। बहिश्त में पहुँचाएंगे। इद्रीस—श्री जी—ने मोमिनों को चौथे आसमान परमधाम में पहुँचाया। जिस बहिश्त में मुहम्मद को मेराज हुआ उसकी सब को पहचान करा दी।

पेंगंमरकी दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत ॥ ६

पैगम्बर ने जो दरगाह—दरबार—देखा और वहाँ खुदाई बयान जाहिर किया और जो इद्रीस का बयान जाहिर किया था वह यहाँ पूरा हुआ। अर्थात् हकी स्वरूप ने इद्रीस का खिताब पा कर परमधाम की हकीकत जाहिर की।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपई ॥ ४२५ ॥

कह्या आम सिपारे माहें, अग्यारे सदी लिखी है जाँहें ।
हुकम हादीके खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर क्यामत ॥ १

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुरआन के आम सिपारे में कहा है जहाँ ग्यारहवीं सदी का वर्णन आया है। हादी श्री देवचन्द्र जी के हुकुम से कुरआन के संकेतों को स्पष्ट करते हैं जिससे कियामत की हकीकत जाहिर समझी जाय।

दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बांध्या सरत एती।
नाम हजरत के सेहेर कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई ॥ २

हजरत मुहम्मद रसूल ने खुदा को दावा पेश किया अर्थात् विनती की कि मेरे हाथों कियामत का भेद खुले तब कुरआन और हदीसों में यह करार बांधा है कि जब ग्यारहवीं सदी पूरी होगी तब कियामत होगी। इसके विषय में इशारा इस तरह है कि एक लड़की ने धोखे से मुहम्मद के बाल ले लिए—उसकी रस्सी बना कर मुहम्मद का नाम लेकर उसमें ग्यारह गांठ लगा दीं।

रस्सी रखी कूएँ के माहें, ऊपर पत्थर दिया तांहें।
जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कूएँ गया उतर ॥ ३

उस गांठ वाली बालों की रस्सी को कुएँ में रख दिया। बातिन में सुरत (रूहों के ध्यान जो खेल में लगाए गए) रस्सी है। गाठें ग्यारह सदी हैं और कुआँ भवसागर है जिसमें सुरत रूपी रस्सी को उतार दिया। उस पर फरामोशी का पत्थर रख दिया गया। इसी से पहचान नहीं होती है। जब मुहम्मद के शिर में पीड़ा हुई तो जिबरील ने बताया कि तुम्हारे ऊपर यहूदी लड़की ने टोना किया है। बातिन में धनी का जोश आया तो स्वामी जी को खबर दी कि सुन्दर बाई ने कियामत का भार तुम पर दिया है। तब मुहम्मद साहिब ने अली को कुएं में भेजा।

अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारे सदी हुई नजर।
अग्यारे आएत आई ततपर, भेजी खुदाएने जबराईल खबर ॥ ४

अली कुएं में उतर कर रस्सी बाहर लाया। बातिन में श्री जी भवसागर में मरजिया बन कर सोई रूहों की सुरत को बाहर लाए। उन्हें दीन की राह पर चलाया। ग्यारह गांठ देख मुहम्मद को—बातिन में स्वामी जी को मालूम हुआ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि ग्यारहवीं सदी में जागनी होगी। उसी समय ग्यारह आयतें उतरीं। खुदा ने इस प्रकार ग्यारहवीं सदी की खबर रसूल मुहम्मद साहिब पर भेजी।

इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आएत हर गिरह खुल गई।
उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आएत आई सकल॥ ५

इनको पढ़ कर रसूल साहिब को ग्यारहवीं सदी की खबर हो गई। एक-एक आयत से एक-एक गांठ खुलती गई। उमर रजी अल्लाह ने उन आयतों की नकल करके कहा हे रसूल! यह आयतें अजीबों गरीब हैं। इनसे जादू छूट गया। बातिन में ग्यारहवीं सदी के बाद रूहों पर से माया का जादू छूटा।

वास्ते रद्द करने को सेहेर, खोली गांठें छूटे पैगंमर।
इनसे पनाह पकड़ी मैं, सो तिनकी फजर करी जिने॥ ६

खुदा ने सेहर अर्थात् जादू को खोलने के लिए ग्यारह आयतें भेजीं। जब सब गांठें खुल गईं तो पैगम्बर छूट जाए (जादू से मुक्त हुए)। इसी से हम खुदा की शरण में हैं। स्वामी जी कहते हैं, परमधाम में हक ने मुहम्मद अर्थात् श्यामा और बारह हजार रूहों के ऊपर फरामोशी का जादू किया। ग्यारहवीं सदी रूपी गांठ लगायीं। ग्यारहवीं सदी के अन्त में गांठें खुलीं तो श्यामा और रूहों का जादू टूटा। जागनी हुई। उन गांठों को खोल कर खुदा ने फज्र—ज्ञान का प्रकाश किया।

फलक चीज केहेत हैं एक, हुआ चाहे दोऊ देखो विवेक।
महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास॥ ७

छत्रसाल जी कहते हैं फलक-आसमान एक है वैसे श्री देवचन्द्र और स्वामी जी एक ही स्वरूप के दो वजूद हैं। आसमान का रंग जैसे सुबह और शाम अलग दिखाई देता है वैसे देखने मात्र के लिए दो वजूद हैं। विवेक से यह बात स्पष्ट होती है। आखिरी मुहम्मद जो हकी स्वरूप हैं सो वचनों के द्वारा ब्रह्म-सृष्टि को ला कर जागृत हुए। और इश्क के बीच (द्वारा) परमधाम में धनी के विलास में पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास ॥ ८

जो इन वचनों के अनुरूप नहीं चला उसे पत्थर घास जानो। वह इस दुनियां की पैदाइश है (यहीं जन्म मरण के चक्करों में पड़ा रहेगा)।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ४३३ ॥

सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए सूरत रोसन ।
खास उम्मत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान ॥ १

जहाँ आम सिपारा—अर्थात् तीसवें सिपारे की अठारहवीं सूरत खत्म हुई वहाँ मक्की सूरत में फज्र का बयान लिखा है। खास उम्मत जो मोमिन हैं उनके आगे बयान करता हूँ। उस प्रकाश को हृदय में ले कर काम क्रोध लोभ माया आदि शैतान के रूप को मार कर दूर करो।

सौगंद खाई बीच होंने फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर ।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम ॥ २

मुहम्मद साहब ने हदीसों में सौगन्ध खा कर कहा कि फज्र होगी तब खुदा आएंगे। दोस्त लोगों ने दुआ मांगी कि हमें दीदार हो। हकी स्वरूप ने पहचान करा कर दीदार कराया। जो कोई फज्र के स्वरूप को पहचान कर उसकी बन्दगी करेगा उनको बहिश्तों में बड़ा आराम मिलेगा। माया के जीव भी मोमिनों के प्रताप से अपने दिल में आराम पकड़ेंगे।

पेहेला रोज कौल हुरमत, सो हादी देखावे रोज क्यामत ।
जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिलहज थें खुली नजर ॥ ३

पहले रोज दशवीं सदी में श्री देवचन्द्र जी कौल—तारत्तम वाणी—लाए तब मोमिनों को शोभा और इज्जत मिली। वही हादी दूसरे जामा—श्री जी में बैठ कर कियामत का दिन दिखाते हैं। जिन वर्षों में फज्र होना लिखा है जिलहज—दसवीं सदी—में श्री देवचन्द्र जी तारत्तम लाए। वहाँ से दीन (सत्य-धर्म) की तरफ की नजर खुली।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पेहेले दिनकी कही दसमी रात,
दसमी सदी बीच आए साख्यात ।
इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात,
मिले दोस्तों सों करी बिख्यात ॥ ४

पहला दिन जो दसवीं सदी का है उसे रात कहा क्योंकि किसी को पहचान नहीं हुई । दसवीं सदी में श्री देवचन्द्र जी आए । जब ग्यारहवीं सदी हुई तो फज्र हो गई । तीनों सूरत (स्वरूप, बशरी मल्की और हकी) जो खुदा के दोस्त हैं उन्होंने मिल कर मोमिनों के आगे हकीकत जाहिर कर दी ।

दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी मस्कीनों को देखाई वस्त ।
कह्या अरफेका अगला दिन, वास्ते ईद अग्यारहीं रोसन ॥ ५

जब ईसा रूह अल्लाह—श्री देवचन्द्र जी दूसरे जामा–स्वामी जी–में आए तब धर्म के काम पर मेहनत करके दृढ़ता लाए । हज—धर्म की राह पर चलने वाले मोमिन जो मसकीन अर्थात् गरीब हैं उनको अखण्ड परमधाम दिखाया । तपसीर में कहा है कि अरफा का अगला दिन अरफा दसवीं सदी है उसका अगला दिन ग्यारहवीं शताब्दी ईद का दिन है जिस दिन मोमिनों ने इल्म वाणी रूपी निमाज पढ़ी ।

पढ़ना द्वा वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का होवें इत ।
पाक होवे सबोंका दम, तब जाहेर होवे ईद खसम ॥ ६

जिस बात के वास्ते मोमिन वजीफा अर्थात् स्तुति करके दुआ मांगते थे और हाजी (तीर्थाटन करने वाले) लोग अर्थात् मोमिन जो चाह करते थे उन्होंने खुदा का दीदार पाया । कहा है कि उस समय सब का दम पाक होगा जब सुबह के समय ईद के खसम खुदा जाहिर होंगे ।

पेहेला रोज क्यामत बयान, सो हजार बरसकी इसारत जान ।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमीसे दूजी अग्यारहीं मिली ॥ ७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहला दिन जो दसवीं सदी का है वह कियामत के बयान के लिए है। संकेत से हजार वर्ष का दिन कहा है। यार अस्हावों ने रसूल से पूछा क़ियामत कब आएगी तब मुहम्मद साहब ने दो उंगली खड़ा करके इशारा किया। उनका अभिप्राय था कि जब दसवीं सदी पर दो स्वरूप आएंगे तब कियामत जानो। दसवीं से जब ग्यारहवीं सदी शुरु हुई।

दोऊ मिल अग्यारहों भई, सब सालेह मिलाइयां बीच कही ।
कलीमअल्ला रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमीमें ऊग्या दिनें ॥ ८

एक स्वरुप दूसरे में मिला तो ग्यारहवीं सदी पूरी हुई। अर्थात् मलकी हकी सूरत मिल कर एक हो गए। इसी सदी में सालेह—पुण्यात्मा मोमिनों का मिलाप हुआ। कलीम अल्लाह जो श्री देवचन्द्र जी हैं उनकी रोशनी दसवीं सदी में चांद के जैसी है। ग्यारहवीं सदी में दिन उग आया। सबको पहचान हो गई।

रातमें सब रोसनी जुदी भई,इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही ।
भी फजर कही रोसनी बादल,बरस्या नूर रूहअल्लासों मिल ॥ ९

ग्यारहवीं शताब्दी में वाणी अलग-अलग मंजिलों पर उतरी। वाणी का प्रकाश मंजिल-मंजिल पर हुआ। इब्राहीम (श्री देवचन्द्र जी) साल्हे (श्री प्राणनाथ जी) ने मिल कर फज्र को (जाहिर) बयान किया। फज्र के वक्त ग्यारहवीं सदी का जो बादल तारत्तम ज्ञान है उसकी बड़ी रोशनी कही है। जब रुहअल्लाह स्वामी जी से मिले तो उस बादल से नूर की बूंदे गिरी। इल्म की वर्षा हुई। उस जल ने चौदह लोक में प्रकाश किया।

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन ।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हल होसी सारी जहान ॥ १०

छत्रसाल जी कहते हैं जिन लोगों ने वचनों से पीठ फेरी और बदफैल करते रहे उनकी आँखों से बड़े-बड़े आंसू गिरेंगे और वे शरमिन्दा होंगे। उस सम-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(कियामत के) सब रोएंगे और परेशान हो जाएंगे। यही हालत सारे संसार का हो जाएगा।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४४३ ॥

साखी—तीन दिन कहे जो बुजरग, सो तीनों सूरत के दिन ।
रसूल से क्यामत लगे, ए जो किए रोसन ॥ १

कुरआन में जो तीन दिन बड़े कहे हैं—वे तीनों स्वरूपों के आने के दिन हैं। रसूल मुहम्मद से लेकर कियामत तक तीन दिन का जिक्र है। वह तुम्हारे लिए स्पष्ट करके कहा है।

याद करो खुदाएके तांईं, तकबीर कहों दिन गिने हैं जांहीं ।
ए तीन दिन जो हें बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक ॥ २

आप खुदा को याद करो। जहाँ सब दिन का हिसाब किया है उसका तुम तकबीर अर्थात् विचार करो। यह तीन दिन बड़े—ईद अर्थात् ग्यारहवीं शताब्दी और जुहा—बारहवी शताब्दी—में हक खुदा—के स्वरूप जाहिर हुए।

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबहकी भई ।
अरफासे असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन ॥ ३

इमाम आजिम ने अपनी किताब में कहा है--ग्यारहवीं सदी के बाद बारहवीं सदी में फज्र—सुबह की पहचान की निमाज पढ़ी गई। अरफा—दसवीं सदी से असरईद तक जिस दिन श्री देवचन्द्र जी को तारत्तम मिला इन्हीं का असर और अमल है। कहा है इस तरह दो सदी में दो साहिब पैदा हुए।

सुबह सेंती अरफेका दिन, आखर तांईं असर इन ।
बाँधी उमेद बड़ी आगूँ आवन,
भई तीनों दिन निमाज पूरन ॥ ४

बारहवीं सदी जो सुबह का दिन है वहाँ से पीछे दसवीं सदी तक—अर्थात दसवीं से बारहवीं सदी तक श्री देवचन्द्र जी का अमल (दो जामा में) है। इन स्वरूप के आने का आशय कुरआन पुराण दोनों में लिखा है। उस वर्णन के उम्मीदवार मोमिन थे। सो इनने (मोमिनों ने) तीनों स्वरूपों को पहचान कर अपना आप कुर्बान कर डाला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन मसलें साफी इमाम, माफक दूजे साहेबका नाम ।
सिताबी जो करे कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई ॥ ५

साफी---शुद्ध करने वाले---ईमाम आप स्वामी जी ने इस तरह बयान किया है । इन स्वरूप की सिफ्त और काम खुदा के मानिन्द हैं अर्थात् यह ही खुदा हैं—(खुदा ही इनमें काम कर रहे हैं) । जो कोई कियामत में शक करे अथवा जल्दी जानना चाहे तो कुरआन के साथ कियामत का हिसाब मिला ले ।

अग्यारहीं बारहीं जिल्हज्ज करे, सो गुनाह कछू ना धरे ।
बाजे हैं जाहिल आरब, बातें करें सिताबी तब ॥ ६

ग्यारहवीं के स्वरूप श्री देवचन्द्र जी और बारहवीं के स्वरूप स्वामी जी को पहचान कर जो जलहज–कुर्बानी–करे उसके लिए कोई गुनाह नहीं है । कुछ-कुछ जो जाहिल—नासमझ अरब के लोग हैं कियामत का दिन जानने में जल्द-बाजी करते हैं और कियामत पर शक लाते हैं ।

गिरोह एक बखत आखर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर ।
सिताबी होवे रुखसद, तुझ पर गुनाह नाहीं कद ॥ ७

हदीसों में लिखा है कि आखिर में एक जमायत आवेगी । आबिद—तप-स्वियों की जमात मोमिनों के लिए खुदा ताला ने मुहम्मद को मेराज में कहा था । दुनियां के बद फैलों और विषय विकारों से जो जल्दी दूर होगा उसको कभी गुनाह नहीं पहुँचेगा ।

और जो कोई ढील करे ताँहीं, तीन रात रहे मजल माहीं ।
तिनको नहीं कछुए आजार, तेहेकीक योंहीं है निरधार ॥ ८

जो कोई दुनियाँ—माया जाल—को हराम जान कर छोड़ दे वह तीन रातों की मंजिल बृज, रास और जागनी के स्वरूप श्री कृष्ण, श्री देवचन्द्र श्री प्राण-नाथ को पहचान कर इनकी सेवा बन्दगी में रहे । उनको दुनियाँ की तरफ से कुछ आजार—आपत्ति—नहीं है । इस बात को निश्चित जानो ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनमें जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हजार गुनाहसे डरे ।
जो कोई खतरों से फिरचा होए,
परहेज करे आराम वास्ते सोए ॥ ९

इन इन्द्रियों की बदफैली से जो परहेज करें—सरतें लिखी अनुसार बन्दगी करे और हजार तरीकों से गुनाहों से डरता रहे । जो कोई गुनाहों से परहेज करेगा सो अपने भले के लिए ही उनसे दूर रहेगा । किसी पर उसका एहसान नहीं है ।

बाकी जेती रही उमर, तिनमें रखे खुदाएका डर ।
क्यामत को होवें जाहेर, पोहोंचेगे बदले यों कर ॥१०

शेष जितनी भी उमर रह गई है उसमें खुदा का डर रखे । कियामत में सब जाहिर होंगे इस तरह सबको बदले मिलेंगे ।

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥४५३ ॥

अथ तारीख नामा

जिनको क्यामत की है सक, क्यों कर उठसी यह खलक ।
बात नहीं ए बरकरार, काफर न देखें ए विस्तार ॥ १

जिनको कियामत के आने में शंका है कि कब्रों में गड़े मुर्दे किस तरह उठेंगे । जिस तरह काफिरों को बात ठीक नहीं होती उसी तरह उनका शंका करना भी ठीक नहीं है । खुदाई कुदरत का विस्तार काफिर नहीं देखते ।

न देखें अपना हवाल, कै पैदा किए आदमी डाल ।
खुदाए खाक पाक से पैदा किया,
तिन बूंदका ए बिस्तार कर किया ॥ २

अपना हाल नहीं देखते कि जब नहीं पैदा हुए थे तो किस तरह आदमी से अर्थात् माता के गर्भ से उन्हें पैदा किया । खुदा ने तमाम खल्क को मिट्टी में से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाक—पवित्र—पैदा किया। एक बूंद (वीर्य) का इतना बड़ा विस्तार हो गया कि इतना बड़ा शरीर दिखाई देने लगा।

एह तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊँ सही ।
जिनसेती होवे मकसूद, इन नाबूद सेती ल्याया बूद ॥ ३

छत्रसाल जी कहते हैं कि यह तमाम दुनियाँ जो दिखाई देती है उसका मैं खुलासा कहता हूँ। जिस स्वरूप के द्वारा सब दुनियाँ का मतलब पूरा होना है अर्थात् फल मिलना है उसे वह नाबूद से बूद में लाया अर्थात् दुनियाँ के झूठे कबीलों से निकाल कर सच्चे अखण्ड घर परमधाम में लाया।

तिनमें बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आई बुध ।
इनमें खुदाए किए दोए, क्यामत काम दूजे से होए ॥ ४

उनमें कुछ बे सुद्ध रहे। बिहारी जी की तरह उन्हें कभी पहचान नहीं हुई। ईसा रूह अल्लाह के घर खुदा ने दो बेटे दिए। कियामत का काम दूसरे बेटे मेहराज ठाकुर से हुआ।

साहेब चाहे सो करे, निपट माहें नजरमें धरे ।
ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार ॥ ५

खुदा जैसा चाहे वैसा करे। मेहर की नजर में ले कर गरीब को सम्राट् बना दे। खुदा ने पहले ही मेराज में मुहम्मद को वचन दिया था कि आखिर में बड़ा बुजुर्ग जमाना होगा। नजरी बेटा मोमिनों में सिरदारी करेगा।

खावंद होएके करसी काम, तिनका अव्वल सेती धरिया नाम ।
बाहेर ल्याया तुमारे तांई, छिपा लड़का था पेट माहीं ॥ ६

मालिक बन कर कियामत का सब काम करेगा। सबको हिसाब से बहिश्त प्रदान करेगा। उसका नाम पहले से ही कुरआन और पुराण में जाहिर है। वही तुम्हें नाबूद माया से निकाल कर अखण्ड परमधाम में लाया। जैसे बालक माँ के पेट में छिपा रहता है वैसे ही पिता केशवदास के घर में तुम छिपे हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निहाएत था नातवान, ना वर पाएगी ना काम पेहेचान ।
सब तरबिअत तुमको किया,
पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया ॥ ७

तुम अत्यन्त गरीब (ज्ञान की दौलत से हीन) और ना समझ थे । न धर्म की दृढ़ता थी न काम की पहचान थी । परमात्मा ने अपने इल्म की तुमको सब तरह से शिक्षा दी । और इस दर्जे पर पहुँचाया कि तमाम अपने खुदाई कामों की कुदरत तुम्हारे हाथों में दे दी ।

तूँ था बीच कोम जाहिल, तित खुदाएने दई अकल ।
बरस बारहीं के लिए तीस,
दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस ॥ ८

तुम परमात्मा को न पहचानने वाले मूर्ति पूजक जाहिल लोगों में था वहां तुमको खुदा ने अपनी अखण्ड बुद्धि दी । जो चालीस वर्ष की पातशाही ईसा रूह अल्लाह की कुरआन में कही है उसमें तीस वर्ष बारहवीं सदी के शुरू के और दस वर्ष ग्यारहवीं सदी अन्त के कुल चालीस वर्ष इस तरह कहे हैं ।

तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा ।
बीच ज्वानियां आगूं ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान ॥ ९

तुम में से जो कोई ऐसा बन्दगी वाला होगा जो खुदा के नजीक पहुँच कर उनकी वफादारी करेगा और सब की शफाअत—सिफारिश करेगा । सब को बहिश्तों के सुख बांटेगा । मर्द मोमिनों में सिरदारी करेगा । बाहिर का वातावरण बदल देगा । औरंगजेब को हरा कर सत्य धर्म की जय जय कार कराएगा । उसकी सब जय बोलेंगे ।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ४६२ ॥

लिख्या आम सिपारे सूरत, आठईं माहें मजकूर क्यामत ।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारें सदीमें निदान ॥ १

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुरआन के आम सिपारे की आठवीं सूरत में कियामत की बात लिखी है। आसमान के साहिब खुदा की सौगन्ध खा कर मुहम्मद साहिब ने कहा है कि बारहवीं सदी में निश्चित रूप से कियामत होगी।

दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिनमें लई मिलाए।
दस ऊपर दोए बुरज जो कही,
इनमें हादी उमत मजकूर भई ॥ २

दो हादी अर्थात् दो स्वरूप दसवीं शताब्दी में आए। उन दोनों ने ब्रह्म सृष्टि को परमधाम की राह में मिला लिया। दस और दो बुर्ज का संकेत बारहवीं शताब्दी की ओर है। इन दो सदियों में, ग्यारहवीं बारहवीं में मोमिनों का जिक्र हुआ है।

दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोइ लहे।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांदकी सोई ॥ ३

दस और दो, बारह बुर्ज अलग-अलग कहे हैं। जिनकी ओर यह संकेत है वही इसे ले सकते हैं। बारह बुर्ज से मुराद बारहवीं सदी ही है। चाँद स्वरूप जो मोमिन हैं उनके कूच के उपरान्त बारह बुर्ज अर्थात् बारह सदी के बाद कियामत है।

या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही क्यामत ॥ ४

दरिया अर्थात् समुद्र को जिस मर्यादा में खुदा ने पैदा किया है वे सब उसी मर्यादा में हैं। खुदा के हुकुम में बंधे खड़े हैं। पैगम्बर ने समुद्र आसमान के मालिक की सौगन्ध खा कर कहा कि बारहवीं सदी में जब खुदा आएंगे तब कियामत जाहिर होगी।

फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन ॥ ५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैगम्बर ने बार-बार सौगन्ध खा कर कहा कि कियामत आएगी। जो खुदा ने कहा उसकी ग्वाही दी। जो कुछ तुम करते हो उसे खुदा देखता है और तुम्हारे मन की सब बातें खुदा जानता है।

ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही।
एक कौल बीच वंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया॥ ६

जो कुछ कुरआन में लिखा है पैगम्बर ने उसे खुदा की ग्वाही दे कर कहा। सौगन्ध भी खुदा की ही खाई। एक वचन में आखिरी स्वरूप को खुदावन्द करके कहा। खुदा का पैगाम देने वाला आखिरी पैगम्बर याहिया भी यही हुआ।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ४६८ ॥

अमेतसालून

महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज क्यामत।
पढ़्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान॥ १

मुहम्मद ने दुनियाँ में आ कर दीन की शिक्षा जाहिर की। कियामत के दिन का डर बताया कि खुदा कियामत के दिन सब का हिसाब लेगा। उन्होंने तमाम खल्क को कुरआन पढ़ाया। परन्तु यह तीनों बातें—कुरआन की सीख, कियामत का डर और कुरआन—काफिर लोग नहीं मानते हैं।

काफर पूछें मोमनोंसों ले, ना पूछे रसूलको दिल दे।
खुदाए तालाने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर॥ २

काफिर लोग मोमिनों से पूछते हैं परन्तु रसूल से दिल से बात नहीं पूछते। तब खुदा ने इस तरह की आयतें फरमाईं कि काफिर लोग मुहम्मद साहब की किस बात पर शुब्ह करते हैं।

कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिनमें ल्यावें सक।
रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगार॥ ३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम्हारे लिए कुरआन ऐसी वस्तु भेजी है जिसे देखने से दिल रोशन होता है। आप उसमें शंका करते हो। काफिर लोग रसूल के नाम रखते हैं कि वह कविता करने वाला झूठा जादूगर है।

ए बुजरग बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत ।
कोई कहे पैगंमर है, कोई साएर दिवाना कहे ॥ ४

मुहम्मद बुजुर्ग—महान—हैं और बुनियाद अर्थात् मूल घर में खुदा ने इन्हें पैगम्बरी दी है। परमधाम में इस स्वरूप की बड़ी बुजुर्गी है। कोई तो इन्हें पैगम्बर मानता है कोई इनको व्यर्थ बकने वाला पागल कहते हैं। (इनके असली रूप का किसी को पता नहीं)।

कोई कोई क्यामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें ।
एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे क्यामत ॥ ५

कई लोग कहते हैं निश्चित रूप में कियामत आएगी। कोई सामने ताने देते हैं कि भाई बचो, बचो कियामत आ गई। कहा है कि एक जमायत आखिर को आएगी उसके मस्तक पर नबूवत झलकेगी। और कहा है कि वे आखिर में सब की सिफारिश करके उन्हें फन्दों से छुड़ाएंगे।

केतेक साहेबसों बैठे फिर, केतेक क्यामत से मुनकर ।
बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात ॥ ६

कितने ही लोग पैगम्बर से फिर गए अर्थात् उन्हें नहीं मानते—कितने ही कियामत को अस्वीकार करते हैं। कई लोग दुनियाँ के सुखों को ही अखण्ड मानते हैं और कई कुरआन, कियामत और दीन में शंका करते हैं।

खुदाए की सौंह खाए के कही, के क्यामत नजीक आई सही ।
पेहेली नीयत अकीदे अपनी, झूठा कौल ना करे धनी ॥ ७

मुहम्मद साहिब ने हदीसों में सौगन्ध खा कर कहा कि भाई डरो कियामत निकट आ गई। उस समय खुदा जरा-जरा हिसाब लेगा। पहले अपनी नीयत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और विश्वास को देख लो ! खुदा ने मुहम्मद को मेराज में जो बात कही वह खुदा का कौल (वचन) झूठा कैसे हो सकेगा ?

जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान ।
पहाड़ मेखां कही उस्तवार, पैदा किया दुनियां नर नार ॥ ८

कुरआन में कहा कि खुदा ने जमीन को मोमिनों के लिए बिछौना—बिस्तर—बनाया । उस जमीन पर तीनों (ब्रह्म, ईश्वरीय और जीव) सृष्टि को लाएगा । पहाड़ों को कील कहा जिससे दुनियाँ दबी रहे उड़े नहीं । उस जमीन पर खुदा ने नर और नारियों को पैदा किया ।

तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे ।
कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियाँ करे ॥ ९

यह इसलिए कि तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशज इसमें रह सकें । कोई छोटे कद के, कोई बड़े कद के, कोई काले, कोई गोरे लोग पैदा किए । कोई अच्छे चाल चलन वाले, कोई बद चलन पैदा किए । रात की नींद दी कि सब ताजगी पा सकें ।

रात निकोइयों को भाने, कूबत हैवानी की आने ।
बंदगी इनके होवे दूर, सब ढ़ांपे अंधेर मजकूर ॥ १०

रात निकोई जो माया के जीव हैं उनको मारती है इन लोगों में पशुता की शक्ति जगा देती है । यह लोग बंदगी से दूर रहते हैं । सब अज्ञान रूपी अन्धेर में छिपे रहते हैं ।

साहेब फतुआत का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे ।
इनकी नजरों न छिपे दुसमन, जो कोई हैं साहेब के तन ॥११

फतुआत किताब के लिखने वाले ने कहा है कि गफलत—माया—रूपी जो रात्रि है वह मोमिनों के पांव नीचे दबी रहती है । वे रात भर बंदगी करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनकी नजर से अपने दुश्मन—बुरे विचार और बदफैल—छिपे नहीं रहते। उन्हें ढूंढ़ कर दूर करते हैं। ऐसे लोग साहिब खुदा के तन मोमिन ही हैं।

रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम,
करें परदा दुनियां सों चलें आराम।
दिन के तांई कह्या बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार ॥१२

कुरआन में कहा है कि रातों को जाग कर बंदगी करने वाले शेखल इसलाम यही मोमिन हैं। वे दुनियाँ से पर्दा करके अन्दर खुदा की बंदगी आराम से करते हैं। दिन के समय ध्यान हजार तरफ दौड़ता है इसीलिए उसे बाजार कहा। जाहिरी लोग दुनियाँ को दिखाने के लिए बंदगी करते हैं उनका चलन बेईमानी का होता है। इनकी बंदगी खुदा के निकट नहीं पहुँचती।

ए जो चलें रातों के यार,
मैं इन बंदे पाकों की जाऊँ बलिहार।
कह्या जो साहेब का दिन, वह बखत तलब करें मोमन ॥१३

रात के यार (मित्र) मोमिन एक ध्यान से रात को बंदगी करते है। इन्द्रावती कहती हैं कि मैं इन नेक पाक बंदों की बलिहारी जाऊँ। हदीसों में जो खुदा का दिन कहा है मोमिन उस वक्त को खोजते हैं कि खुदा का दीदार हो।

इनहीं में ढूढ़ें हासिल, इस दिन उमत की फसल।
इनके तले सातो आसमान, ए सारों के ऊपर जान ॥१४

इसी आखिरी स्वरूप (स्वामी जी) में वे अपने दिल का मनोरथ देखते हैं। इस समय खुदा ने आ कर इल्म की बरसात की और मोमिनो की फसल हुई। उन मोमिनों के पांव तले सात आसमान कहे हैं। उनका धाम उन सब के ऊपर हैं।

और खलक जो इनके तले, तिन खलक को होए जुलजुले।
पैदा किया आफताब रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमन ॥१५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो दुनियां इनके पांव के नीचे रहने वाली है। उस खल्क को दोजख की जलन होगी। खुदा ने हकी स्वरूप को परमधाम की रोशनी करने वाला सूर्य कहा। यह पहचान रूपी दिन मोमिनों के वास्ते उगा।

इनके साथ उतरचा बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल।
तिनकी पैदास कही दाना घास,
ए कही इसारत तीनों पैदास ॥१६

इन मोमिनों के संग बादल स्वरूप श्री देवचन्द्र जी उतरे हैं। श्री देवचन्द्र तथा श्री इन्द्रावती रूपी बदलियों से नूर का प्रकाश फैलाने वाले इल्म रूपी पानी की बौछार हुई। उनकी पैदाइश दाना और घास कही। यह संकेत तीन तरह की सृष्टि की ओर है।

गेहूँ जौ और कह्या घास, काफर फिरस्ते रूहें उमत खास।
फिरस्ते जौ गेहूँ इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम ॥१७

कुरआन में गेहूँ, जौ और घास जो कहा है वह क्रमशः ब्रह्म ईश्वरीय और जीव सृष्टि के लिए है। फरिश्तों को जौ, मोमिनों को गेहूँ और घास चारा सब काफिरों को कहा गया।

मोती दरयाव से काढ़चा महंमद, इन बिध इत लिख्या सबद।
घास कह्या सब चारा हैवान,
गिरों दोऊ उतरी दरियाव से जान ॥ १८

लिखा है कि मोहरूपी दरिया से आखिरी मुहम्मद रूपी मोती निकाला गया। इसीलिए आखरी स्वरूप को अमोलक मोती कहा गया। इसलिए यहाँ ऐसा कहा गया। हैवान जो काफिर हैं उनको 'चारा घास' की उपमा दी गई। दो जमायतें अर्थात् मोमिन फरिश्ते दो दरियाव अर्थात् परमधाम, धाम से उतरी हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप के लपेटे गए ।
इनों के बीच चले हुकम, रोज क्यामत को जाहेर खसम ॥१९

इन्हीं मोमिनों को परमधाम के आनन्द रूपी बाग के दरख्त कहा है। इन्हीं मोमिनों की लपेट में आ कर अर्थात् संग से फरिश्तों को भी सुख मिला। मोमिनों के बीच खुदा का हुक्म चलता है। वे जो बोलते हैं, चलते हैं सब हुक्म से! कुरआन कहता है कियामत के रोज खुदा जाहिर होगा।

बरकरार किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही क्यामत ।
ए फसल परहेजगार मोमन, काफरों के तंबीह के दिन ॥२०

यह बात निश्चित है कि जो होता है हुक्म से होता है। यह कियामत का संकेत जाहिर कहा है कि उस समय खुदा आएगा और (परहेजगार) मोमिनों और फरिश्तों की फसल होगी। इन्होंने पहचान कर कदम पकड़े। यह समय काफिरों की सजा का है। तम्बीह अर्थात् दोजख में इन्हें जलना पड़ेगा।

इस रोज फूंके करनाए, असराफील सूर कुरान के गाए ।
एक सूरें आखर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन ॥२१

हर्दासों में लिखा है कि इसी रोज इसराफील इमाम मेहदी के अन्दर बैठ कर सूर फूंकेगा। सो इसराफील ने आ कर कुरआन को जाहिर करने वाली बाणी गायन की। एक सूर फूंकने से सब का गुमान अहंकार उड़ा कर गरीबी नम्रता से भर दिया। दूसरे सूर में 'निजनाम' का मन्त्र फूंक कर सब को अखंड बहिश्तों में कायम कर दिया।

सब उठे कबर थें अपनी, काएम किए क्यामत के धनी ।
इमाम सालबी कहे यों बनी, रसूल पूछे उमत अपनी ॥२२

सब अपनी-अपनी शरीर रूपी कब्र से इल्म द्वारा उठ खड़े हुए। कियामत के मालिक हकी स्वरूप ने उन्हें बहिश्त में कायम कर दिया। इमाम साल्हवी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने लड़के से कहते हैं कि रसूल मुहम्मद अपनी उम्मत से फेल (कर्मों) का हिसाब पूछेंगे ।

कहे कयामतमें सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए ।
बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन ॥२३

कहा है कियामत में सब को अपने शरीर रूपी कब्र से उठाया जाएगा । दस तरह के काम पूछे जाएंगे । जो लोग सुकुनचीन अर्थात् पहचान की हंसी करने वाले हैं उनकी बंदर की सी शक्ल होगी । जिनके हृदय में ईमान नहीं है ।

सुअर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल के ढिग ना गए ।
गधे सूरत कहे हराम कार, जिनके बुरे फैल रोजगार ॥२४

और जो हराम (निषिध) और बेहक की कमाई खाने वाले हैं उनकी सूरत उस समय सूअर जैसी होगी । जो लोग कभी हलाल (सच्चाई) और मेहनत के निकट नहीं जाते इन्द्रियों के गुलाम हैं उनकी गधों के समान सूरत होगी । उन लोगों के जिनके कर्म और रोजगार बुरे हैं ।

सूद खानेवाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फँदे ।
न किया सेजदा न सुनी पुकार,
सो हुए बेहेरे पड़े दोजख मार ॥२५

सूद खाने वाले लोग अंधे हो जाएंगे और उसी की खेंच, पैसे का घमन्ड उन्हें दोजख में ले जाएगा । और जिन्होंने दिल के साथ नमन नहीं किया और न ही वचनों पर ईमान लाए उनके कानों में सीसा पड़ेगा और दोजख की मार सहन करेंगे ।

गूँगे कहे जालिम हुकम, वे सबके तले न ले सकें दम ।
पढ़े जुबाँ काटे पीब लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे ॥२६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जुल्म करने वाले, अत्याचारी शासकों की जबान कट जाएगी। वे गूंगे हो जाएंगे। दोजख में सबके नीचे जला दिए जाएंगे और दम भी न ले सकेंगे। जाहिरी इल्म पढ़ कर चतुराई दिखाने वालों की जीभ काटी जाएगी और उसमें सेलहू और पीव (मवाद) बहेगा। जो दुनियाँ इकट्ठी करने और इन्द्रियों के सुख के वास्ते हराम कार्यों को करते हैं।

मलें दोजखी हाथ पांऊं दोए, ताए देखें भिस्ती अचरज होए ।
उड़न वाले कहें मोमन, मुतकी भी पड़ोसी कहे तिन ॥ २७

दोजखी अपने दोनों हाथ पांव मलेंगे अर्थात् पछताएंगे। दोजख का दुःख देख कर बहिश्ती लोगों को बड़ा आश्चर्य होगा। मोमिनों को उड़ने वाला कहा गया है। मुत्तकी परहेजगार और संयमी ईश्वरीय सृष्टि भी उनके पड़ोसी अक्षर-धाम में रहते हैं।

ताए हर भाँत रंज पोहोंचाया जिन,
सो लटके बीच सूली अगिन ।
चुगलखोर काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलोंको लगसी घाउ ॥२८

मोमिनों और फरिश्तों को जिन्होंने हर तरह दुःख दिया वह आग के बीच शूली पर लटकाया जाएगा। चुगली खाने वालों के हाथ पांव काटे जाएंगे और सख्त दिल वालों के दिलों को कुल्हाड़ी से चीरा जाएगा।

ए दस भांतकी कही दोजख, जो बे फुरमान हुए हक ।
जिनहूँ फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए ॥२९

इमाम सालवी ने इस प्रकार दस तरह की दोजख कही है उन लोगों के लिए जिन्होंने खुदा के हुकुम को नहीं माना। जिन्होंने जैसे कर्म किए उन्हें वैसे ही फल मिले।

फुरमाया केतेक फेर उठाए, तकब्बरों दोजख हमेसगी पाए ।
और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी गिरो साहेबके दर ॥३०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिन्होंने फिरा कर फिर भी हुकुम को मान लिया उन्हें दोजख से फिर बहिश्त ले जाया जायगा परन्तु घमन्ड करने वाले हमेशा दोजख में जलेंगे। और जो मोतियों के घर कहे गए वे खास उम्मत मोमिनों के लिए खुदा का दरबार परमधाम है।

उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदों मिले कहे।
जिनों इनोंकी दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई ॥३१

मोमिनों की सेवा में भी जो लगे रहे सो फरिश्ते तारत्तम ज्ञान रूपी बूँदों का पान करके मोमिनों के साथ मिले रहेंगे। जिन्होंने उनकी दोस्ती की साहिब हकी सूरत ने उन्हें बहिश्तों का राज्य दिया।

और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर।
ए जो दुनियांका कह्या आसमान,
दो टुकड़े दिल कह्या जहान ॥३२

छत्रसाल जी कहते हैं अब दूसरी हकीकत सुनो! दिल की आँख खोल कर सत्य और झूठ का विचार करो। यह जो दुनिया का आसमान वैकुन्ठ कहा तिन का दिल फूटा है। इसमें सत्य इलम आदि नेमतें नहीं टहर सकतीं।

ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी क्यामत बखत।
बीच हवाके पहाड़ उड़ाए, ए दुनियां में बुजरग केहेलाए ॥३३

यह हिसाब का दिन बड़ा कठिन है। दोजख की आग काफिरों के दिल में लगेगी। दुनियाँ में बड़े कहलाने वाले (घमन्ड के पहाड़) असराफील की फूँक से रुई की तरह उड़ जाएंगे।

बुजरगों धोखा क्योंए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए।
फितुए इनोंके जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब ॥३४

दुनियाँ के बुजुर्गों का धोखा नहीं जाता है। इसीलिए खुदा ने ऐसा वक्त

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिखा दिया। इनकी फिसाद करने की आदत तभी जाएगी जब ऐसा वक्त दिखा दिया जाएगा।

ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए।
सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार ॥ ३५

दोजख में जल कर ठन्डे (शान्त) हो जाएंगे तब इनको सच्चाई समझ में आएगी। दुनियाँ के सभी गुन्हगार लोगों ने दोजख का ऐसा वक्त देखा।

अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक वखत।
जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े ॥३६

अब जो ब्रह्म सृष्टि हों वे सुनो, आप खड़े होकर देखो काफिरों के लिए दोजख गर्म हो रही है। अब भागो मत किनारे खड़े होकर देखो दोजख रूपी खजाना बढ़ रहा है।

भिस्त रजवान मोमन निगेहवान,
दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान।
तहां तांई बखत पोहोंचे सबन, पैदरपें जले अगिन ॥ ३७

जिसको मोमिन निगेहवान—मेहर की नजर से देखने वाले हैं उनको सबसे बड़ी अक्सो बहिश्त की पातसाही मिलती है। काफिरों का खजाना दोजख है। जब तक विश्वास नहीं करते तब तक काफरों को दोजख पहुँचती है। उन पर ऊपर-ऊपर और आग जलाई जाएगी।

गुजरे हैं हद्दसों काफर, दूर दराज जानी थी आखर।
दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखियों हाल इन ॥३८

काफिर पापों की सीमा पार कर चुके हैं उन्होंने कियामत को बहुत दूर माना था। उनके दुःख भी लम्बे हो गए। यों दोजख का खजाना काफिरों ने पाया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करे मोआलम नकल अपनी जुबांए,
सांची जिकर जो कही खुदाए ।
जब मगज माएने लीजे खोल,
तब पाइए इसारत बातून बोल ॥३९

पढ़ने वाले आलिम लोग अपनी जबान से—इस तरह कहते हैं कि खुदा का जिक्र ही सत्य है शेष सब झूठ है। जब बातिन अर्थ खोल कर देखें तो कुरआन के इशारों के गूढ़ भेद खुल जाते हैं।

साखी—दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे माहीं ।
सात हजार साल चालीस, नीके देखियो तांहीं ॥४०

दुनियाँ की उमर का वर्णन पहले सिपारे में लिखा है। सात हजार चालीस साल की उम्र कही है आप अच्छी तरह जा कर देखो।

तैतालीस जुत्फ जो कहे, हर जुत्फ सत्तर बहार भए ।
हर बहार सात सौ बरस लए,
हर बरस तीन सौ साठ दिन दए ॥४१

तीसवें सिपारे की अमेत सालून सूरत में तैंतालीस जुफ्त (जोड़े) कहे—एक जुफ्त के सत्तर बहार, एक बहार के सात सौ वर्ष और एक वर्ष में तीन सौ साठ दिन होते हैं।

याके एकईस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन ।
ए रसूलके आएकी मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल ॥४२

इस प्रकार इसके इक्कीस लाख सात हजार दिन हुए। काफिरों को दोजख की जलन में एक दिन एक वर्ष के समान गुजरेगा। और मोमिनों को अपनी बन्दगी के कारण एक वर्ष एक दिन के समान बीत जाएगा। आद आदम, वेद व्यास से आदम सफी अल्लाह तक के दिनों का हिसाब लिखा है। यह रसूल मुहम्मद साहब के आने का समय है। हे साथ जी यह गिनती तुम अपने दिल में कर लो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पांच हजार ताए बरस भए, आंठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे ।
त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नब्बे कम किए ॥४३

वेद व्यास से जब पाँच हजार और आठ सौ सैंतालीस वर्ष हुए । त्रेसठ वर्ष मुहम्मद साहब की उम्र के लिए, तब वेद व्यास के अनुसार कहे समय के छः हजार वर्ष होने में नब्वे वर्ष कम रहे अर्थात् ५९१० वर्ष ।

इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर ।
अग्यारहीं के जब बाकी दस,
तब दुनियां उमर सात हजार बरस ॥४४

इस समय रसूल साहिब ने कूच किया । उसके आगे का वर्णन अब करते हैं । जब ग्यारहवीं सदी के पूरा होने में दस वर्ष रहे तब दुनियाँ की आयु सात हजार वर्ष हुई । यहाँ दुनियाँ की उम्र पूरी हुई हरिद्वार में धर्म विजय हुई । जुफ्तों और बहारों का वर्णन मोमिनों की बन्दगी और काफिरों को जलाने का हिसाब है ।

इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम ।
जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे ॥४५

यहाँ से इमाम मेहदी का दौर शुरु होता है । इसलाम—सत्य धर्म—की पातसाही शुरु हुई । चालीस वर्ष—ग्यारहवीं के दस बारहवीं सदी के तीस वर्ष—फज्र खत्म हुई । बीस वर्ष का जोड़ा जब दो जोड़ा—चालीस वर्ष व्यतीत हुए दुनियाँ की उम्र चालीस वर्ष की यहाँ खत्म हुई । कर्म कांड का राज्य खत्म कर हकीकत मारिफत की राह दिखाई ।

तिनमें जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर ।
तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखर ॥४६

चालीस वर्ष की फज्र में दस वर्ष मोमिनों की जागनी हुई । इस दस वर्षों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में—हरिद्वार से पन्ना तक दुनियाँ की हर जाति के लोगों की नजर स्वामी जी की ओर रही । ग्यारहवीं सदी पूर्ण हुई । तीस वर्ष जब बारहवीं सदी के व्यतीत हुए तो दुनियाँ के बीच आखिरत और कियामत का काम जाहिर हो गया । सब की जागनी हुई ।

सत्तर बरस पुल सरातके कहे, सो उठने क्यामत बीचमें रहे ।
पुल सरात दुख कहिए क्यों कर,
काफर जलें जुलजुले आखर ॥४७

बारहवीं सदी के शेष सत्तर वर्ष पुलसरात के कहे हैं । अर्थात् हादी के चले पीछे इन वचनों पर चलेगा वह पार पहुँचेगा । फरिश्ते उन पर चले । कियामत में उठने का वक्त यही कहा है कि असराफील के सूर से मुर्दे उठेंगे । सूर फूँकने से सब को रूह जागी । यही मुर्दा उठना है । पुलसरात की जलन का दुख कैसे कहें । काफिर ही आखिर में दोजख की जुल-जुलाहट में जलेंगे ।

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं क्यामत के पूरे भए ।
ए तीसरी बड़ी फिरस्तों की फजर,
पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर ॥४८

दस और दो बुर्जों का बयान बारहवीं सदी में कियामत की ओर संकेत है । तेरहवीं सदी में ब्रह्म सृष्टि की चरणरज लेकर देवी देवताओं की फज्र—जागनी है । तेरहवीं सदी के बाद समस्त संसार नूर (अक्षर ब्रह्म) की नजरों तले आठों बहिश्तों में अखण्ड हो जाएगा ।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५१६ ॥

दिन क्यामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे ।
क्यों लहे जाको लिखी दोजख, जावे नहीं तिनोंकी सक ॥ १

यह कियामत के दिनों का हिसाब पूरा हुआ इस हिसाब को मोमिनों ने पहचाना । दोजख में जलने वाले इस भेद को क्या समझें । क्योंकि उनके दिल की शक ही नहीं जाती ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरसिसका दिन साहेब देखावे,
क्यामत रोज दूजा कोई न पावे ।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे,
ए समझें पाक दिल उजियारे ॥ २

कियामत के समय खुदा हिसाब लेकर बहिश्त बकसेगा । हकी स्वरूप को पहचान कर वह दिन दिखाया गया । कियामत की हकीकत हकी स्वरूप के बिना किसी ने न पाई । पाँच स्वरूपों का वर्णन आम सिपारे की छत्तीसवीं सूरत में है । जिन मोमिनों का पाक दिल है वही इस इशारे को समझेंगे ।

ए पांचों नेक अमल जो करें,
सो भिस्ती फुरमान से ना टरें ।
और झूठा काम बदफैली करे, सौ दोजखकी आगमें परे ॥ ३

ब्रज, रास के कृष्ण, हुकुम लाने वाले मुहम्मद, तारत्तम लाने वाले श्री देवचन्द्र जी और जागनी के मालिक पांच स्वरूपों को पहचान कर जो पाक दिल से इनकी बन्दगी करेंगे सो बहिश्त अर्थात् परमधाम के रहने वाले परमात्मा के हुकुम से पीछे नहीं हटते । झूठे काम, बदफैल करने वाले दोजखी लोग आग में पड़ेंगे ।

हमेसां दोजखी बदकार, रोज क्यामत के हुए खुआर ।
ए दिन किने न किया मुकरर,
ताए पेहेचानो जिन दई खबर ॥ ४

बदकार लोग दोजख में पड़ते हैं । कियामत के समय खव्वार होंगे । शुरु से आज तक यह खबर किसी ने नहीं दी । उसे पहचानो जिसने पहचान कराई ।

कोई न जाने राह न जाने दिन,
इन समे हादिएँ किए चेतन ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस दिन बदला होवे अति जोर,
हाथों सीधे साहेब करे मरोर ।। ५

न तो कोई परमधाम की राह जानता था न कियामत का दिन ! इस समय हकी सूरत ने आकर कियामत के भेद जाहिर किए और चेतन कर दिए। जिस दिन कजा के तख्त पर बैठ कर खुदा कजा करेगा उस दिन नेक कामो का बड़ा भारी बदला मिलेगा। अपने हाथों सजा देकर खुदा सीधा करेगा।

तित पोहोंचके सुध दई तुमें किन, बुजरगी दई इत इन ।
निहायत इत रोजकी कोई न पावे,
ए पातसाह पुरसिसका देखावे ।। ६

जिस स्वरूप ने खुदा के निकट पहुँच कर तुम्हें खुदा की सुधि दी उस स्वरूप को पहचानो। अखण्ड परमधाम की बुजुर्गी इसी हकी स्वरूप इमाम मेहदी ने दी। निश्चय ही कियामत के दिन की खबर किसी ने नहीं पाई थी। इश्क ईमान सेवा बन्दगी का हिसाब लेकर बहिश्तों का सुख देने वाले पातशाह इमाम खुदा के स्वरुप कियामत का दिन दिखा रहे हैं।

किनको नफा न देवे कोए,
तब कोई न किसी के दाखल होए ।
कूवत तिन समे कहुँए जाए,
तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए ।। ७

आखिरी समय में कोई भी किसी को नफा नहीं पहुँचा सकेगा। कोई किसी के दुःख सुख में शामिल नहीं हो सकेगा। उस समय इल्म चतुराई घमण्ड कहीं का कहीं चला जाएगा। कोई किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकेगा। अपना काम सामने आएगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुकम हादीका साहेब फुरमान,
करें सिफायत खुदा मोमनों पेहेचान ।
मोमन आकीनदारोंको चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाए ॥ ८

खुदा का फुरमान (कुरआन) हादी के हुकुम से इमाम जाहिर करते हैं । हकी स्वरुप उन वचनों की पहचान मोमिनों को कराकर खुदा से उनकी सिफारिश करते हैं । खुदा आकीनदार मोमिनों को चाहता है । अखण्ड सच्चे परमधाम में उनको शामिल करेगा ।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज,
तब काजिएँ खोल्या मुसाफ मगज ।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही,
घर इमाम बिलंदी छत्ताको दई ॥ ९

जब खुदा ने मोमिनों को इल्म द्वारा पहचान कराई तो अखण्ड रोजा और हज्ज का मुकाम जाहिर हो गया । काजी जो हकी स्वरुप श्री जी हैं उन्होंने कुरआन का बातिन अर्थ खोल कर मारिफत जाहिर की । यह बातिन हकीकत के भेद आखरी स्वरुप ने छत्रसाल महाराजा को कही । बिलंद घर परमधाम की बुजुर्गी इमाम मेहदी ने छत्रसाल को दी ।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

नौमी आगे अरफा ईद कही,
ले दसमी आगूं सब लीला भई ।
मजलें सब अग्यारहीं के मध,
सो वहे कुरान विवेक कै विध ॥ १

हदीसों में नवमी सदी के आगे अरफा की ईद कही है । वही दसवीं सदी है जिसमें मोमिनों के साथ श्री देवचन्द्र जी आए । यही ईद है । दसवीं से लेकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्यारहवीं सदी तक सब लीला हुई। सब मजलें ग्यारहवीं में हुई :—अठारह हजार वाणी उतरी और मंजिल-मंजिल पर खुदा ने हकी सूरत पर खिताब भेजे। कुरआन में यह सब कई तरह से कहा है।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो बिस्तार,
प्रगटे बिलंद सब सिरदार।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार,
उतरितां आएतें जो उस्तवार॥ २

ग्यारहवीं सदी में बड़ा विस्तार हुआ। बुजुर्ग तीनों सिरदार और बारह हजार मोमिन प्रकट हुए। खुदा ने सब नियामतें सिफ्तें हकी स्वरूप पर भेजीं। अखण्ड मोक्ष देने वाली दीन की मजबूती की चौपाइयाँ उतरीं।

छिपा था बुजरग बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई क्यामत।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार,
पीछे बारहीं में जले बदकार॥ ३

मोमिनों के मिलने का बड़ा वक्त छिपा था। खुदा से मिलाप का दिन जाहिर हुआ तो सब को कियामत दिखाई दी। सिरदार मोमिन ग्यारहवीं में सुख लेकर अपने परमधाम को चले। बदकार, बुरे, न मानने वाले लोग बारहवीं सदी में जले।

जिन पाई राह रोज क्यामत, सो उठे फजर के नूर बखत।
फजर पीछे जब ऊग्या दिन,
तब तो तोबा तोबा हुई तन तन॥ ४

जिन मोमिनों ने कियामत का समय पहचान धर्म की राह पकड़ी वे फज्र के नूर वक्त में परमधाम में उठे। फज्र के उपरान्त जब दिन हुआ, सब का भ्रम टूटा तो हकी स्वरूप को पहचान कर सबने तोबा-तोबा की।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब तो दरवाज़ा मूंदके गया,
पीछे तो नफा काहू को न भया ।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील ॥ ५

जब हादी कूच कर गए तो अपराध क्षमा करने और एक बन्दगी के बदले हजार देने का द्वार बन्द हुआ । फिर पीछे नफा किसी को नहीं मिलेगा । पहचान होने पर सब विरह रुपी आग में जले—अजाजील भी प्रायश्चित की आग में जला । तब इसराफील ने उठा कर सबको अखण्ड बहिश्तों में खड़ा किया ।

एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहींमें काएम किए ।
यों क्यामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन ॥ ६

हुकुम के एक सूर में सब को उड़ा कर फना कर दिया दूसरे हुकुम से तेरहवीं में सब को अखण्ड बहिश्त में खड़ा किया । इस तरह कियामत और बखशिश का दिन सबमें जाहिर हुआ । आखिरी मुहम्मद हकी स्वरुप ने मोमिनों के लिए सब भेद खोल कर उन्हें रोशन किया ।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५३१ ॥

॥ प्रकरण तथा चौपइयों का संपूर्ण संकलन—प्रकरण ५२४, चौपाई १८७५८ ॥

इति श्रीमहामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारत्तम बानी' का सोलहवाँ ग्रन्थ (भाग २)

॥ बड़ा क्यामतनामा संपूर्ण ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri